

वालेकुम-प्रणाम

मोहब्बत के उस पार, जहाँ मज़हब नहीं होता

मोहित यादव



BlueRoseONE^{.com}
Stories Matter

New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Mohit Yadav 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



BlueRoseONE
S t o r i e s M a t t e r
New Delhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-502-5

First Edition: September 2026

लेखक की कलम से,

यह किताब मेरे लिए सिर्फ़ एक कहानी नहीं है... यह मेरी ज़िंदगी का वह हिस्सा है, जिसे याद करते हुए आज भी दिल की धड़कन थोड़ी तेज़ हो जाती है।

इन पन्नों में मोहब्बत है, लेकिन सिर्फ़ मोहब्बत नहीं। इसमें डर है, बिछड़ने का दर्द है, परिवारों का संघर्ष है और उन दोस्तों की वफ़ादारी है, जिन्होंने मुश्किल वक़्त में हमारा साथ छोड़ने के बजाय खुद को मुसीबत में डाल दिया।

कई रातें ऐसी थीं, जब हमें सच में नहीं पता था कि अगली सुबह हम साथ होंगे भी या नहीं। आज उन दिनों को शब्दों में उतारना आसान लगता है... लेकिन उन्हें जीना बिल्कुल आसान नहीं था।

इस कहानी को लिखते हुए एक बात बार-बार महसूस हुई—

कभी-कभी इंसान मौत से नहीं डरता, वह इस बात से डरता है कि कहीं उसके बाद उसके अपने लोगों का क्या होगा।

अगर इन पन्नों को पढ़ते हुए आपको कहीं प्यार महसूस हो, कहीं डर लगे, कहीं आँखें नम हों या कहीं गुस्सा आए... तो समझिएगा कि आपने सिर्फ़ कहानी नहीं पढ़ी, आपने हमारे सफ़र का एक हिस्सा महसूस किया है।

और हाँ...

इस कहानी के कुछ ज़रूरी वक़्त के साथ भर गए, लेकिन उनके निशान आज भी बाकी हैं— लेखक

विषय-सूची

अध्याय 1: ₹500 की फ़ीस और एक नज़र का इश्क़	1
अध्याय 2: चार किलोमीटर का इश्क़	10
अध्याय 3: दो घंटे का इश्क़ और एक अधूरी बात	17
अध्याय 4: "मोहित... रुको!"	24
अध्याय 5: चॉकलेट की कड़वाहट और मजहब की दीवार	28
अध्याय 6: वह रात जब मोहब्बत मौत से हारते-हारते बची	35
अध्याय 7: मोहब्बत की गली और कव्वाली वाली सुबह	39
अध्याय 8: वह पहला गुलाब, फटा जूता और सामने खड़ी मोहब्बत	42
अध्याय 9: 'सलमान-कटरीना' का दौर, उधार का मोबाइल और पहला रकीब	46
अध्याय 10: बारहवीं की फ़ीस और ज़ाबिया की ईदी	51
अध्याय 11: जब मोहब्बत ने ढाल पहन ली	54
अध्याय 12: टूटते सपने, लोहे के पहरे और तूफ़ान से पहले की ख़ामोशी	57
अध्याय 13: शादी का कार्ड और मोहित की नादान ज़िद	61
अध्याय 14: 'आगे क्या?' — नाकामियाँ, पंडित जी की रहस्यमयी पर्ची और किस्मत की पहली बड़ी करवट	66
अध्याय 15: कालकोठरी का जुल्म — "मैं तुम्हें रोज़ देखूँगी तो ज़िंदा रहूँगी..."	71
अध्याय 16: वाशरूम का वो सीक्रेट रोना और पीठ में ₹10,00,000 का खंजर	79
अध्याय 17: धमकियों का जाल, अपमान और सात महीने बाद मिली आवाज़	86

अध्याय 18: जब अपना ही दुश्मन निकला और उसी रात ज़ाबिया भाग आई	92
अध्याय 19: बस स्टैंड की वो चीख—“मोहित, आज ये मुझे मार डालेंगे!” ..	98
अध्याय 20: व्हाट्सऐप की वो तस्वीर—पापा की कनपटी पर बंदूक	101
अध्याय 21: रात के 2 बजे बस से उतरी वो लहूलुहान मोहब्बत	104
अध्याय 22: यादव वकील का भरोसा और तीन दिन का बंद रास्ता	106
अध्याय 23: आधी रात का ठिकाना और गंगा बैराज की वो सुबह	109
अध्याय 24: होटल के बाहर मौत खड़ी थी	111
अध्याय 25: जब पुलिस दोस्तों के घर तक पहुँच गई	114
अध्याय 26: मजिस्ट्रेट का फैसला	117
अध्याय 27: आखिरी विदाई और दोस्तों का बलिदान	120
अध्याय 28: ₹1 लाख की रिश्त और वकील की गद्दारी	122
अध्याय 29: आखिरी सफ़र और तूफ़ान की पहली आहट	125

अध्याय 1

₹500 की फ़ीस और एक नज़र का इश्क़

“कुछ मुलाक़ातें महज़ इत्तेफ़ाक़ नहीं होतीं...

वे किसी तूफ़ान की पहली आहट होती हैं।”

यह कहानी भी कुछ ऐसी ही है।

एक तरफ़ था मोहित—एक साधारण हिंदू परिवार का लड़का, जिसकी आँखों में बड़े सपने थे, मगर ज़िंदगी की राहें अभी छोटी थीं।

और दूसरी तरफ़ थी ज़ाबिया—एक मुस्लिम घराने की बेटी, जिसके चारों तरफ़ ऐशो-आराम, सख़्त उसूल और परिवार की ऊँची दीवारें थीं।

दोनों की दुनिया अलग थी। उनके त्योहार अलग थे। उनकी परवरिश अलग थी। उनके घरों के तौर-तरीके अलग थे। यहाँ तक कि शायद उनके परिवारों ने कभी सोचा भी नहीं था कि उनकी औलाद की कहानी किसी दूसरे मज़हब के इंसान के साथ लिखी जाएगी।

लेकिन मोहब्बत को इन फ़ासलों का इल्म कहाँ होता है?

उसे न मज़हब की सरहद दिखाई देती है, न जाति की दीवार, न हैसियत का फ़र्क़।

उसे बस एक इंसान दिखाई देता है... और कभी-कभी उसी एक इंसान में पूरी कायनात नज़र आने लगती है.....

साल था **2013**।

उस समय Instagram पर Reels नहीं हुआ करती थीं, लोगों के पास हर बात का Story Update नहीं होता था और किसी लड़की को पसंद करने

के बाद उसकी पूरी ज़िंदगी जानने के लिए उसके Instagram highlights भी नहीं देखे जा सकते थे। उस दौर में किसी लड़की को पसंद करना एक अलग ही level का adventure था। पहले उसका नाम पता करो।

फिर किसी दोस्त से पूछो कि उसका घर कहाँ है।

फिर किसी और दोस्त से पता करो कि उसका कोई boyfriend तो नहीं है। और अगर इतने research के बाद भी बात बन जाए, तो अगली समस्या होती थी—

“भाई, बात शुरू कैसे करें?”

मोहित भी उसी generation का लड़का था। हालाँकि उसकी सबसे बड़ी समस्या लड़की नहीं, पहले पैसा था।

और तो और सच कहें तो उस समय उसकी हालत देखकर किसी को भी पहली नज़र में यही लगता कि इस लड़के को प्रेम करने से पहले कुछ खाना खिलाना चाहिए।

मोहित बेहद दुबला-पतला था। इतना दुबला कि अगर वह ढीली T-shirt पहन लेता, तो लगता जैसे कपड़े किसी इंसान ने नहीं, बल्कि किसी **कपड़े के hanger ने पहन रखे हों**। मोहल्ले के कुछ लड़के उसे मज़ाक में **“हवा का झोंका”** कहते थे। कभी-कभी कोई पीछे से आवाज़ लगाता,

“अबे मोहित! ज़रा धीरे चलना... उड़ मत जाना!”

मोहित भी मुस्कुराकर आगे बढ़ जाता। उसे बुरा तो लगता था, लेकिन वह जानता था कि उसकी ज़िंदगी में लोगों के मज़ाक से कहीं बड़ी लड़ाई चल रही थी।

उसका शरीर भले ही कमजोर था, लेकिन उसके सपने... वे उसकी औकात से बहुत बड़े थे। और शायद यही वजह थी कि वह अपनी गरीबी को कभी अपनी पहचान नहीं बनने देना चाहता था।

वह एक बेहद साधारण, निम्न-मध्यमवर्गीय परिवार से था। उसके पिता एक private primary school में शिक्षक थे। ऐसी नौकरी जिसमें सम्मान तो बहुत मिलता है, लेकिन महीने के अंत में जेब अक्सर सम्मान से ज़्यादा खाली

मिलती है। घर चलाना आसान नहीं था। महीने का राशन, बिजली का bill, घर के छोटे-बड़े खर्च और बच्चों की पढ़ाई... हर महीने की शुरुआत में हिसाब बनता और महीने के अंत तक वह हिसाब किसी न किसी तरह बिगड़ जाता। इसलिए पढ़ाई उसके लिए सिर्फ पढ़ाई नहीं थी। वह उसका रास्ता थी। एक ऐसा रास्ता जिससे वह अपने परिवार की ज़िंदगी बदलना चाहता था।

जुलाई 2013

High School का result आ चुका था। मोहित ने अच्छे अंकों से परीक्षा पास की थी। उस दिन उसके घर में कोई बड़ी party नहीं हुई। न कोई महंगा cake आया। न कोई restaurant में dinner हुआ। लेकिन उसके पिता की आँखों में जो गर्व था, वह मोहित के लिए किसी भी trophy से बड़ा था।

अब 11वीं में admission लेना था। और मोहित ने तय कर लिया था कि वह शहर के सबसे अच्छे coaching institute में पढ़ेगा। नाम था—**सर्वोदय क्लासेस**। शहर में जिसकी reputation ऐसी थी कि वहाँ पढ़ने वाले बच्चों को देखकर लगता था कि उनके घर में सुबह दूध के साथ career भी deliver होता होगा।

एक दिन मोहित अपने सबसे करीबी दोस्तों में से एक, **रामकुमार**, के साथ खड़ा था।

मोहित ने अचानक कहा, “चल भाई, सर्वोदय चलते हैं।”

रामकुमार ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और पूछा, “क्यों?”

मोहित ने कहा, “Admission लेना है।”

रामकुमार कुछ सेकंड चुप रहा, फिर हँसते हुए बोला, “अबे पहले अपनी जेब तो check कर ले। उसमें admission form खरीदने के पैसे हैं या नहीं?”

मोहित ने अपनी जेब पर हाथ मारा। जेब सचमुच खाली थी, लेकिन उसने ऐसे गर्दन हिलाई जैसे अंदर पूरा बैंक पड़ा हो। “पैसा हो जाएगा।”

रामकुमार ने आँखें सिकोड़कर पूछा, “कहाँ से?”

मोहित ने बड़ी गंभीरता से कहा, "जुगाड़।"

"किसका?"

"पैसे का।"

"कहाँ से?"

"वह तो वहाँ जाकर पता चलेगा।"

रामकुमार हँस पड़ा। "अबे खाली जेब के नवाब! सपने ऐसे देखता है जैसे कल से तेरी गाड़ी Fortuner में घूमेंगे।"

मोहित ने अपनी पतली-सी छाती बाहर निकालने की कोशिश की। "भाई, गाड़ी बाद में आएगी। पहले admission होगा।"

रामकुमार : "और पैसे?"

मोहित मुस्कराया। "पैसे का रास्ता भगवान बनाएगा।"

रामकुमार ने सिर हिलाया। "भगवान ने अगर तुझे जुगाड़ विभाग में नौकरी दे दी न, तो देश बच जाएगा।"

दोनों हँस पड़े।

लेकिन मोहित के मन में बात मज़ाक नहीं थी। वह सचमुच वहाँ पढ़ना चाहता था।

अगली सुबह दोनों सर्वोदय क्लासेस पहुँच गए। जुलाई की उमस भरी गर्मी थी। सड़क पर धूल उड़ रही थी और हवा में ऐसी गर्मी थी कि लगता था सूरज ने शहर से personal बदला लेने की ठान रखी है। लेकिन जैसे ही वे coaching के अंदर पहुँचे, माहौल बिल्कुल अलग था। चमचमाती गाड़ियाँ। महँगे कपड़े। Perfume की खुशबू। हाथ में branded bags। किसी के पिता business करते थे, किसी के पिता बड़े अधिकारी थे और कुछ ऐसे भी थे जिनके लिए ₹500 शायद उतने ही मायने रखते थे जितने मोहित के लिए ₹5।

मोहित ने चारों तरफ़ देखा। फिर धीरे से अपनी shirt नीचे खींची।

रामकुमार ने पूछा, "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं।"

"फिर shirt क्यों खींच रहा है?"

मोहित ने धीरे से कहा, "ऐसे ही... अपनी गरीबी बाहर निकल रही है।"

रामकुमार हँसी रोकते हुए बोला, "अबे तेरी गरीबी इतनी भी तेज़ नहीं है कि shirt से बाहर निकल जाएगी।" दोनों किसी तरह हँसी रोककर आगे बढ़े।

रामकुमार fees पूछने के लिए reception की तरफ़ चला गया। मोहित वहीं corridor में खड़ा हो गया। सामने दीवार पर coaching के toppers की तस्वीरें लगी थीं। हर तस्वीर के नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में नाम, percentage और achievements लिखी थीं। मोहित उन तस्वीरों को देखता रहा। उसने मन ही मन कहा, "**एक दिन मेरी photo भी यहाँ लगेगी।**" फिर उसने खुद ही उस ख्याल पर हल्की-सी मुस्कान दी। क्योंकि उसके पास उस समय admission की fees तक नहीं थीं।

लेकिन सपनों को पैसे की ज़रूरत नहीं होती। वे मुफ्त में आते हैं। और अक्सर इंसान की औकात से बहुत महँगे होते हैं।

रामकुमार अभी अंदर ही था। मोहित ने सामने देखा।

और तभी... वह आई।

पहले उसे सिर्फ़ किसी के गुज़रने का एहसास हुआ। फिर उसकी नज़र उस लड़की पर पड़ी।

और जैसे उस corridor में चलती हुई बाकी सारी चीज़ें अचानक धीमी पड़ गईं।

वह लड़की बेहद सादगी से तैयार थी। न कोई दिखावा। न कोई बनावटी अंदाज़। बस एक सलीके से लिया हुआ दुपट्टा, शांत चेहरा और ऐसी आँखें जिन्हें देखकर मोहित कुछ पल के लिए यह भूल गया कि वह वहाँ किस काम से आया था।

उसकी आँखें...

कथई और हरे रंग के बीच की एक अजीब-सी खूबसूरत रंगत।

मोहित ने ऐसी आँखें पहले कभी नहीं देखी थीं।

शायद इसलिए नहीं कि दुनिया में ऐसी आँखें नहीं थीं। बल्कि इसलिए कि **उस दिन पहली बार उसकी नज़र किसी ऐसी आँखों पर पड़ी थी जिनसे उसका दिल बात करना चाहता था।**

लड़की उसके पास से गुज़री। मोहित ने उसे देखा।

फिर लड़की ने एक पल के लिए मोहित की तरफ़ देखा।

बस एक पल।

इतना छोटा कि घड़ी की सुई भी शायद उसे पूरी तरह दर्ज न कर पाए।

लेकिन मोहित के लिए वह पल... जैसे किसी ने उसकी पूरी ज़िंदगी रोक दी हो।

उसका दिल अचानक इतनी तेज़ धड़कने लगा कि उसे डर हुआ कहीं सामने खड़ी लड़की को भी सुनाई न दे जाए।

उसने मन ही मन खुद को समझाया—**“Normal रह... Normal रह...”** लेकिन उसका दिल शायद उस दिन पहली बार उसकी बात सुनने के mood में नहीं था।

लड़की आगे बढ़ गई।

मोहित वहीं खड़ा रह गया।

उसने पहली बार महसूस किया कि इंसान कभी-कभी किसी से बात किए बिना भी उसके बारे में बहुत कुछ महसूस कर सकता है।

नाम नहीं पता। घर नहीं पता। कौन है, नहीं पता।

बस इतना पता था कि...

उसकी आँखें अच्छी थीं।

बहुत अच्छी।

इतनी अच्छी कि मोहित कुछ सेकंड के लिए अपनी ₹500 वाली problem भूल गया।

और तभी पीछे से रामकुमार की आवाज़ आई—“अबे!”

मोहित नहीं हिला।

“ओए मोहित!”

फिर भी नहीं।

रामकुमार ने उसके कंधे को जोर से हिलाया। “अबे भाई! कहाँ चला गया?”

मोहित ने धीरे से उसकी तरफ़ देखा। “हूँ?”

रामकुमार ने माथे से पसीना पोंछा। “अनर्थ हो गया।”

मोहित ने पूछा, “क्या हुआ?”

रामकुमार ने बेहद दुखी चेहरा बनाया। “₹500।”

मोहित चौंका। “क्या?”

“Fees।”

कुछ सेकंड की खामोशी।

“कितनी?”

“₹500।”

मोहित ने दोबारा पूछा, “कुल?”

“₹500।”

मोहित ने गहरी साँस ली। “इतनी?”

रामकुमार ने कहा, “हाँ भाई। पाँच सौ रुपये। इतने में हमारे घर का आधा राशन आ जाता है।”

मोहित की नज़र फिर उसी corridor की तरफ़ चली गई। वह लड़की अब दिखाई नहीं दे रही थी।

रामकुमार ने उसकी आँखों का पीछा किया। फिर समझ गया।

“ओहो...”

मोहित ने उसे देखा। “क्या?”

रामकुमार मुस्कराया। “अब समझ आया कि ₹500 कहाँ से आएँगे।”

“क्या मतलब?”

“कुछ नहीं।”

मोहित चुप रहा।

रामकुमार ने मज़ाक किया, “तू admission लेने आया था या प्यार करने?”

मोहित ने बिना पलक झपकाए कहा, “दोनों हो जाँ तो?”

रामकुमार ज़ोर से हँस पड़ा। “पहले fees भर ले Romeo।”

मोहित भी मुस्कराया। लेकिन उसके भीतर कुछ बदल चुका था।

वह लड़की उसके लिए अभी कुछ नहीं थी। नाम तक नहीं पता था। फिर भी उसके मन में एक अजीब-सी इच्छा जन्म ले चुकी थी—

उसे फिर से देखना है।

बस एक बार।

अगली सुबह,

मोहित बहुत जल्दी उठ गया। घर में सब सो रहे थे। बाहर अभी अँधेरा था। वह धीरे-धीरे अपने पिता के कमरे की तरफ़ गया। उसके कदमों में हिचकिचाहट थी। वह जानता था कि जो करने जा रहा है, वह सही नहीं था। लेकिन उसके दिमाग में एक ही बात घूम रही थी—**₹500।**

उसने अपने पिता का पुराना सूती तकिया उठाया। तकिए के नीचे कुछ मुड़े-तुड़े नोट रखे थे। उसने उन्हें देखा। कुछ पल के लिए उसका हाथ रुक गया।

ये सिर्फ़ पैसे नहीं थे। ये उसके पिता की बचत थी। उनकी मेहनत की कमाई थी। घर की किसी ज़रूरत के लिए बचाए गए पैसे थे।

मोहित ने काँपते हाथों से कुछ नोट निकाले। फिर वहीं बैठ गया। कुछ सेकंड तक वह उन नोटों को देखता रहा। उसके भीतर अपराधबोध था। लेकिन साथ ही एक जिद भी थी।

वह खुद से बोला—“मैं ये वापस कर दूँगा।”

उसने पैसे जेब में रखे और उठ गया।

कुछ देर बाद मोहित सर्वोदय क्लासेस की खिड़की पर खड़ा था। उसके हाथ में ₹500 थे। उसने नोट आगे बढ़ाए। Reception पर बैठे व्यक्ति ने पैसे लिए और admission process पूरा किया। और उसके हाथ में एक छोटी सी रसीद थमा दी

मोहित ने उसे अपनी मुट्ठी में कसकर पकड़ लिया। उसके चेहरे पर मुस्कान थी। लेकिन उसे नहीं पता था कि उस दिन उसने सिर्फ coaching की fees नहीं भरी थी। उसने अपनी ज़िंदगी की एक ऐसी कहानी की पहली किस्त जमा की थी जिसकी कीमत आने वाले वर्षों में **पैसों से नहीं, बल्कि आँसुओं, डर, जिद, परिवार, दोस्ती और इश्क से चुकानी थी।**

उसे यह भी नहीं पता था कि जिस लड़की को उसने अभी कुछ मिनट के लिए देखा है, वह आगे चलकर उसकी ज़िंदगी का सबसे खूबसूरत हिस्सा भी बनेगी...और सबसे मुश्किल इम्तिहान भी। उसे नहीं पता था कि एक दिन उनके बीच सिर्फ दो लोग नहीं खड़े होंगे।

उनके बीच खड़े होंगे—

दो परिवार। दो मज़हब। दो अलग दुनिया। और एक ऐसा समाज, जिसे प्रेम से ज़्यादा उसकी पहचान की चिंता होती है।

शायद दुनिया की नज़र में यह सिर्फ एक admission था। लेकिन मोहित की ज़िंदगी में...

यही वह दिन था, जिस दिन 'प्रणाम' की दुनिया ने पहली बार 'वालेकुम' की तरफ़ कदम बढ़ाया था।

और दोनों को अभी इसका ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था।

अध्याय 2

चार किलोमीटर का इश्क़

कोचिंग का पहला दिन किसी नौजवान की ज़िंदगी में सिर्फ़ एक तारीख़ नहीं होता। वह उसके सपनों की पहली official flight होती है। फर्क़ बस इतना था कि मोहित के पास rocket नहीं था... और न ही उसके पास coaching तक पहुँचने के लिए ढंग की सवारी।

सुबह की धूप अभी पूरी तरह चढ़ी भी नहीं थी कि मोहित ने अपनी पुरानी, थोड़ी-सी सीलन भरी लकड़ी की अलमारी खोली। कपड़ों के छोटे-से ढेर में से उसने अपनी सबसे अच्छी—और लगभग इकलौती—ढंग से press की हुई shirt और pant निकाली। आईने के सामने खड़े होकर बालों को ठीक करने की कोशिश की। बाल भी शायद उसी दिन rebellion के mood में थे। जितनी बार कंघी करता, उतनी बार अपनी मर्ज़ी से वापस खड़े हो जाते।

आखिरकार मोहित ने खुद को आईने में देखा और संतुष्ट होकर बोला, “भाई... आज तो पूरा हीरो लग रहा हूँ।”

घर से बाहर निकला तो सामने उसके पिता की पुरानी पुश्तैनी cycle खड़ी थी। वह सिर्फ़ cycle नहीं थी; मोहल्ले के लिए एक चलता-फिरता announcement system थी। उसकी ज़ंग लगी chain और चरमराते pedal से पूरे रास्ते को पता चल जाता था कि मोहित निकल चुका है।

सर्वोदय क्लासेस घर से पूरे चार किलोमीटर दूर थी।

मोहित कुछ पल cycle को देखता रहा, फिर उसके भीतर का प्रेमी और स्वाभिमान आमने-सामने बैठ गए।

दिमाग़ ने कहा, “Cycle ले जा, पैसे बचेंगे।”

दिल ने कहा, “अगर ज़ाबिया ने देख लिया तो?”

स्वाभिमान ने कहा, "VIP coaching के बाहर ये खटारा?"

और प्रेम ने आखिरी फैसला सुना दिया—**"पैदल चलेंगे।"** क्योंकि उसके पास तो ऑटो क पैसे तक नहीं थे

जुलाई की तपती दोपहर में उसने cycle एक तरफ़ रखी और चार किलोमीटर का पैदल मार्च शुरू कर दिया। सड़क तप रही थी, पसीना बह रहा था और पैरों को देखकर लग रहा था कि कुछ ही देर में वे हड़ताल पर चले जाएँगे। लेकिन मोहित के दिमाग में सिर्फ़ वही कथई-हरी आँखें थीं। प्रेम में पड़े इंसान के लिए चार किलोमीटर कभी-कभी उतने ही आसान हो जाते हैं जितने बाकी लोगों के लिए चार कदम।

जब वह हाँफ़ता हुआ coaching पहुँचा, तो रामकुमार पहले से वहाँ खड़ा था। वह आराम से auto से आया था। मोहित ने उसे देखा और अपनी हालत छुपाने के लिए ऐसे खड़ा हो गया जैसे अभी-अभी किसी AC car से उतरा हो।

रामकुमार ने पूछा, "कहाँ से आ रहा है?"

मोहित ने पसीना पोंछते हुए कहा, "घर से।"

"Auto?"

"नहीं।"

"Cycle?"

"नहीं।"

रामकुमार ने उसके चेहरे की तरफ़ देखा। "अबे... पैदल आया है?"

मोहित ने collar ठीक करते हुए कहा, "Fitness भी कोई चीज़ होती है।"

रामकुमार हँस पड़ा। "Fitness नहीं भाई, poverty है।" और मुस्कुराते हुए दोनों भारी लकड़ी के दरवाज़े की तरफ़ बढ़े। जैसे ही मोहित ने दरवाज़ा खोला, दोनों कुछ पल के लिए वहीं जम गए।

अंदर एक बड़ा-सा hall था और उसमें लगभग बीस-पच्चीस लड़कियाँ बैठी थीं। पूरे कमरे में लड़कों का ऐसा अकाल पड़ा था जैसे admission लेते समय लड़कों को अलग से रोक दिया गया हो। महँगे perfumes की खुशबू लड़कियों की धीमी हँसी और branded bags के बीच मोहित और रामकुमार को अचानक अपनी गरीबी बहुत साफ़ दिखाई देने लगी।

रामकुमार ने धीरे से कहा, “भाई... हम गलत जगह तो नहीं आ गए?”

मोहित ने निगाहें झुकाकर कहा, “चुप कर। पढ़ने आए हैं।”

दोनों सबसे आखिरी कोने की धूल भरी bench पर जाकर बैठ गए। जेब की तंगी की बजह से दोनों के पास सिर्फ़ Physics की fees भरने के पैसे थे। Chemistry और बाकी subjects फिलहाल उनके सपनों में पढ़े जाने थे।

Class शुरू होने में पाँच मिनट थे। मोहित की नज़र बार-बार दरवाज़े पर जा रही थी। दिमाग में एक ही सवाल था—“वह आएगी?”

और तभी दरवाज़े का परदा हिला।

वह भीतर आई।

मोहित का दिल एकदम से तेज़ हो गया। इतना तेज़ कि उसे लगा रामकुमार को भी सुनाई दे रहा होगा। उसने सामने पढ़ाते हुए शिक्षक देखने की कोशिश की, लेकिन उसकी सारी concentration उस एक लड़की पर जाकर अटक चुकी थी।

पूरे एक घंटे तक teacher Newton के laws, motion और gravity समझाते रहे। बाकी बच्चों ने शायद Physics पढ़ी होगी, लेकिन मोहित उस दिन कुछ और ही पढ़ रहा था।

Beauty Science.

Blackboard पर formulas बनते रहे और मोहित की नज़र सामने बैठी ज़ाबिया के कंधों पर बिखरी जुल्फ़ों में उलझी रही। Teacher पूछते रहे, “समझ आया?” और मोहित के दिमाग में बस एक ही answer था—“जी सर... बहुत कुछ समझ आ रहा है।”

घंटी बजी।

Physics खत्म हुई और Chemistry शुरू होने वाली थी।

बाकी सारे students अपनी जगह बैठे रहे, लेकिन मोहित और रामकुमार को अपनी notebooks समेटनी पड़ीं। उनके पास सिर्फ़ एक subject की fees थी।

सीढ़ियों से नीचे उतरते ही मोहित ने रामकुमार का collar पकड़ लिया।

“राम... कुछ भी कर, मुझे Chemistry में भी बैठना है। मुझे दो घंटे चाहिए।”

रामकुमार ने उसे ऐसे देखा जैसे उसे अभी-अभी कोई गंभीर बीमारी हुई हो।

“अबे होश में है? पैसे कहाँ से आएँगे?”

“जुगाड़ करूँगा।”

“कहाँ से?”

“पता नहीं।”

“फिर?”

“लेकिन करूँगा।”

रामकुमार ने सिर पकड़ लिया। “तुझे लड़की से प्यार हुआ है या coaching से?”

मोहित ने गंभीर होकर कहा, “दोनों का connection है।”

अगले दो दिनों में मोहित ने अपने स्वाभिमान की बची-खुची परत भी उतार दी। एक साधन-संपन्न दोस्त से उधार माँगा, घर से मिलने वाली छोटी-मोटी tuition की रकम रोक दी और किसी तरह Chemistry की fees भी जमा कर दी।

अब उसका और ज़ाबिया का यह silent romance पूरे दो घंटे का हो चुका था।

सर्वोदय का वह hall धीरे-धीरे मोहित के लिए किसी दूसरी दुनिया में बदल गया था। चारों तरफ़ संभ्रांत परिवारों की लड़कियाँ, महँगे perfumes, नए

कपड़े, चूड़ियों की आवाज़ और बेफ़िक्र हँसी। उस पूरे hall में सिर्फ़ दो लड़के थे—रामकुमार, जो दीवार से सटकर बैठता था ताकि कम दिखाई दे, और मोहित, जिसे चारों तरफ़ की भीड़ में सिर्फ़ एक चेहरा दिखाई देता था।

वहाँ खूबसूरत लड़कियों की कमी नहीं थी। अगर कोई दूसरा लड़का होता तो शायद उसकी नज़रें रोज़ नई direction में घूमतीं। लेकिन मोहित का मामला अब थोड़ा serious था।

उसने अपना ईश्वर चुन लिया था।

वह थी—ज़ाबिया।

ज़ाबिया का चेहरा पहली नज़र में ही याद रह जाने वाला था। सादगी उसके पूरे व्यक्तित्व में थी। बिना किसी दिखावे के चेहरे पर एक natural glow था। उसकी सबसे अलग चीज़ उसकी आँखें थीं—कतई और हरे रंग का ऐसा मेल, जिसमें मोहित हर दिन थोड़ा और डूबता जा रहा था।

और उसकी जुल्फ़ें... घनी, काली और इतनी लंबी कि जब वह अपनी जगह बैठती तो उनकी नोक लगभग ज़मीन तक चली जाती।

कभी वह माथे पर आई लट को उँगलियों से पीछे करती, तो मोहित के लिए वह कोई मामूली movement नहीं होता था। वह उसे ऐसे देखता जैसे किसी ने उसके सामने कोई ऐसी painting रख दी हो जिसे देखने की कोई time limit न हो।

मोहित की हालत अब यह थी कि ज़ाबिया अगर सिर्फ़ अपनी pen भी नीचे गिरा देती, तो वह उस घटना को पूरे दिन की सबसे बड़ी खबर मान लेता।

फिर एक दिन नियति ने सच में दोनों के बीच पहली छोटी-सी सीढ़ी रख दी।

अगस्त की एक बरसती सुबह मोहित और रामकुमार किसी वजह से coaching नहीं जा पाए।

अगले दिन मोहित सबसे पहले Physics की छूटी हुई class के notes पूरे करने पहुँचा। Class खत्म होने के बाद वह थोड़ी झिझक के साथ teacher के पास गया और बोला, "Sir, कल मेरी और राम की तबीयत खराब थी,

इसलिए class miss हो गई। किसी के notes मिल सकते हैं? मैं काम पूरा करके वापस कर दूँगा।”

Teacher ने पूरे hall पर एक नज़र डाली। वहाँ इतने students थे कि किसी से भी notes माँगे जा सकते थे। लेकिन उन्होंने सीधे ज़ाबिया की तरफ़ देखा और कहा, “ज़ाबिया, अपनी Physics की notebook ज़रा मोहित को दे दो। ये कल का काम पूरा करके वापस कर देगा।”

मोहित के लिए उस पल का मतलब teacher शायद कभी समझ ही नहीं पाए।

ज़ाबिया अपनी जगह से उठी। उसके हाथ में नीले cover वाली notebook थी। वह धीरे-धीरे मोहित की तरफ़ आई। मोहित की हालत ऐसी थी जैसे उसे अभी board exam का result नहीं, पूरी ज़िंदगी का result मिलने वाला हो।

ज़ाबिया ने अपनी कलई-हरी आँखों से एक पल उसकी तरफ़ देखा और notebook उसकी हथेली पर रख दी।

उँगलियाँ हल्की-सी छुईं। (बस एक पल के लिए।)

लेकिन मोहित के लिए उस एक पल में पूरा बिजली विभाग सक्रिय हो चुका था। उसके पुरे शरीर में करंट दौड़ चूका था।

वह notebook लेकर घर पहुँचा। पूरे रास्ते उसके कदम ज़मीन पर थे, लेकिन दिमाग़ कहीं और।

कमरे में पहुँचकर उसने दरवाज़ा बंद किया और बड़े ध्यान से notebook खोली। पहले पन्ने के ऊपर सुंदर handwriting में एक नाम लिखा था—

“ज़ाबिया”

मोहित कुछ सेकंड तक उस नाम को देखता रहा।

फिर उसने नीचे लिखी एक छोटी-सी इबादत देखी।

उस पल उसे पहली बार पता चला कि वह लड़की एक मुस्लिम परिवार से है।

लेकिन उसके दिल में कोई सवाल नहीं उठा।

2013 का वह दौर social media की उस आभासी नफ़रत से बहुत दूर था, जहाँ किसी इंसान को जानने से पहले उसकी identity पढ़ ली जाती है। मोहित के लिए उस वक्त न Hindu था, न Muslim। उसके लिए सिर्फ़ एक नाम था—**ज़ाबिया**।

और वह नाम अब उसके लिए सिर्फ़ एक लड़की का नाम नहीं रह गया था। वह उसकी हर सुबह का पहला ख़्याल और हर रात का आखिरी ख़्वाब बनने लगा था। मोहित को लगा जैसे दुनिया का सबसे बड़ा award उसकी हथेली में आ गया हो।

वह notebook को ऐसे देख रहा था जैसे उसमें Physics के notes नहीं, ज़ाबिया की पूरी दुनिया लिखी हो। उसके हर पन्ने पर उसकी handwriting थी और मोहित के लिए वही handwriting उस समय किसी autograph से कम नहीं थी। उसने notebook को सीने से लगाया और बिस्तर पर लेट गया। उस रात पहली बार उसे महसूस हुआ कि शायद मोहब्बत हमेशा किसी बड़े इज़हार से शुरू नहीं होती। कभी-कभी वह सिर्फ़ एक नज़र से शुरू होती है। कभी किसी borrowed notebook से। और कभी...

एक ऐसे नाम से, जिसे पढ़ते ही दिल पहली बार अपने लिए एक नया पता ढूँढ़ लेता है।

मोहित ने ज़ाबिया की notebook अपने सिरहाने रखी और आँखें बंद कर लीं। उसे नहीं पता था कि वह सिर्फ़ Physics के छूटे हुए notes लेकर नहीं सो रहा था। वह अपनी ज़िंदगी की सबसे बड़ी कहानी का **पहला सबूत** सिरहाने रखकर सो रहा था।

अध्याय 3

दो घंटे का इश्क़ और एक अधूरी बात

सर्वोदय क्लासेस में अब मोहित का routine लगभग तय हो चुका था। सुबह घर से निकलना, किसी तरह coaching पहुँचना, पीछे वाली अपनी जगह संभालना और फिर अगले दो घंटे तक Physics और Chemistry के बीच अपनी पढ़ाई से ज़्यादा ज़ाबिया को देखने में व्यस्त रहना।

हाँ, पढ़ाई भी होती थी... लेकिन वह secondary थी।

पहले Physics की class होती, फिर Chemistry। इन दोनों घंटों के बीच मोहित की दुनिया जैसे उसी बड़े-से classroom तक सिमट गई थी। अब उसे चार किलोमीटर पैदल चलने की तकलीफ़ भी उतनी महसूस नहीं होती थी। जिस रास्ते पर कुछ हफ्ते पहले हर कदम गरीबी का एहसास कराता था, अब उसी रास्ते पर वह एक अजीब-सी खुशी लेकर चलता था। आखिर coaching में कोई उसका इंतज़ार करता था।

या कम से कम मोहित को ऐसा लगता था।

ज़ाबिया और मोहित के बीच अब भी कोई बातचीत नहीं थी, लेकिन उनकी आँखों की अपनी भाषा बन चुकी थी। वह सामने बैठती, तो मोहित की नज़र अपने आप उसकी तरफ़ चली जाती। कभी ज़ाबिया उसे देख लेती, तो तुरंत अपनी notebook में देखने लगती। कभी मोहित उसे देख रहा होता और ज़ाबिया अचानक पलटकर उसकी तरफ़ देख देती, तो बेचारा ऐसे गर्दन घुमा लेता जैसे board पर कोई बहुत ज़रूरी formula लिखा हो। कई बार दोनों की आँखें टकरातीं और दोनों एक साथ नज़रें झुका लेते।

अगर उस समय कोई camera वहाँ होता, तो background में शायद कोई romantic song बज रहा होता।

लेकिन असली ज़िंदगी में background music की जगह teacher की आवाज़ आती—

“मोहित! ध्यान कहाँ है?”

और मोहित तुरंत notebook खोलकर ऐसे बैठ जाता जैसे वह पिछले बीस मिनट से Newton की पूरी family पढ़ रहा हो। इन दो घंटों में मोहित धीरे-धीरे बाकी लड़कियों से बात करने लगा था। किसी की notebook देख ली, किसी की drawing बना दी, किसी के notes दे दिए। मोहित की drawing अच्छी थी, इसलिए कई लड़कियाँ उससे बात करने के बहाने उसकी copy माँग लेतीं।

मोहित भी हँसकर बात कर लेता।

लेकिन एक अजीब बात थी। जिस लड़की से वह सबसे ज़्यादा बात करना चाहता था, उसी के सामने उसकी आवाज़ ही नहीं निकलती थी। ज़ाबिया पास से निकलती तो मोहित अचानक serious हो जाता। कोई और लड़की पूछती,

“मोहित, ये question समझा दो।” वह पूरे confidence से समझाता।

लेकिन ज़ाबिया पूछ देती, “ये pen आपका है?” तो मोहित का दिमाग तुरंत जवाब देता—

System Error.

कभी-कभी रामकुमार उसकी यह हालत देखकर चिढ़ता, “अबे तू बाकी सब से इतना हँस-हँसकर बात करता है, इससे बात करने में तेरी जान क्यों निकलती है?”

मोहित तुरंत बात बदल देता। “अरे ऐसी कोई बात नहीं है।”

रामकुमार मुस्कुराकर कहता, “हाँ... मुझे तो दिख ही नहीं रहा।”

मोहित उसे घूरता और दोनों हँस पड़ते। लेकिन सच यही था—मोहित ज़ाबिया से डरता था। क्यों डरता था, उसे खुद नहीं पता था। शायद इसलिए

कि बाकी लड़कियाँ सिर्फ लड़कियाँ थीं...और ज़ाबिया उसके लिए कुछ और बन चुकी थी।

दिन बीतते गए।

Class का माहौल भी बदलने लगा। शुरुआत में जहाँ सिर्फ मोहित और रामकुमार जैसे इक्का-दुक्का लड़के थे, अब धीरे-धीरे नए लड़के भी आने लगे थे। पहले जो classroom मोहित को किसी private kingdom जैसा लगता था, अब वहाँ लड़कों की संख्या बढ़ने लगी। मोहित को इससे कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए था।

लेकिन पड़ता था।

अब उसे पहली बार महसूस होने लगा कि जिस जगह पर वह खुद को सबसे अलग समझ रहा था, वहाँ competition नाम की चीज़ भी आ चुकी थी।

दो महीने इसी तरह निकल गए।

मोहित और रामकुमार रोज़ साथ coaching आते। दोनों के बीच वही पुरानी दोस्ती थी, वही हँसी-मज़ाक और वही पैसों की चिंता। लेकिन घर की आर्थिक हालत रामकुमार के लिए धीरे-धीरे और मुश्किल होती जा रही थी। एक दिन उसने मोहित को बताया कि अब coaching की fees देना उसके लिए संभव नहीं है।

मोहित कुछ पल चुप रहा। उसे लगा जैसे उसके दो घंटे अचानक एक घंटे के हो गए हों।

“मतलब... तू अब नहीं आएगा?”

रामकुमार ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, “भाई, दिल तो मेरा भी करता है। लेकिन घर में पैसे की problem है। पहले घर देखूँ या Physics?”

मोहित ने मज़ाक में बात हल्की करने की कोशिश की, “Physics तो Newton भी बिना fees के पढ़ गया था।”

रामकुमार हँसा, “तू Newton को बीच में मत ला। मेरी हालत उसकी gravity से बाहर है।”

दोनों हँसे, लेकिन उस हँसी के पीछे सच्चाई बहुत भारी थी।

कुछ ही दिनों बाद रामकुमार ने coaching छोड़ दी। अब पहली बार मोहित उस बड़े classroom में अकेला महसूस कर रहा था।

वही दो घंटे, वही board, वही benches, वही लड़कियाँ, वही ज़ाबिया।

लेकिन उसके बगल वाली जगह खाली थी। जिस दोस्त के साथ वह रोज़ अपनी गरीबी, अपने सपने और अपने छोटे-छोटे राज बाँटता था, अब वह वहाँ नहीं था। मोहित ने एक बार खाली seat की तरफ़ देखा और फिर सामने ज़ाबिया की तरफ़।

ज़ाबिया भी शायद उस खाली जगह को देख चुकी थी। दोनों की नज़रें मिलीं। इस बार मोहित ने नज़र नहीं हटाई। ज़ाबिया ने भी नहीं। बस कुछ सेकंड तक दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। और शायद उसी पल मोहित के भीतर कुछ बदल गया। अब तक वह सिर्फ़ ज़ाबिया को दूर से देखता था। अब उसे लगा कि शायद उसे इस खामोशी को तोड़ना होगा।

लेकिन कैसे?

सीधे जाकर बात करना अभी भी उसके लिए impossible था। उसने कई बार सोचा—“आज बोलूँगा।”

फिर सामने ज़ाबिया आई और उसके सारे शब्द गायब।

“ज़ाबिया, वो...”

बस इतना कहने के बाद भी उसकी हालत ऐसी हो जाती जैसे UPSC interview दे रहा हो। आखिरकार एक दिन उसे एक आसान रास्ता सूझा।

Notebook.

अगर जुबान साथ नहीं दे रही थी, तो शायद उसकी handwriting दे सकती थी। उसने ज़ाबिया से Physics की notebook माँगी। ज़ाबिया ने बिना कुछ पूछे उसे notebook दे दी। उस रात मोहित अपने कमरे में बैठा notebook के आखिरी पन्ने को देख रहा था। उसके हाथ में pencil थी।

दिल में डर। और दिमाग़ में एक ही सवाल—

“अगर उसने मना कर दिया तो?”

कुछ देर तक वह pencil घुमाता रहा। फिर आखिरकार उसने काँपते हाथों से आखिरी पन्ने के एक कोने में सिर्फ़ तीन अंक लिखे—

143

उसने pencil नीचे रख दी।

तीन छोटे-से अंक, लेकिन मोहित के लिए वह पूरी दुनिया के सामने किया गया confession था। **143— यानी I Love You I** Notebook बंद करते समय उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसने कोई बहुत बड़ा जुर्म कर दिया हो। अगले दिन उसने धड़कते दिल के साथ notebook ज़ाबिया को वापस कर दी और अब उसकी नज़रें सिर्फ़ उसके चेहरे पर थीं। वह जानना चाहता था कि उसने देखा या नहीं, समझा या नहीं। लेकिन ज़ाबिया ने कोई खास reaction नहीं दिया। न कोई मुस्कान, न कोई इशारा। मोहित चुपचाप अपनी जगह आकर बैठ गया।

कई दिन बीत गए, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। आखिरकार उसने फिर किसी बहाने से ज़ाबिया की notebook माँग ली। घर पहुँचते ही उसने सीधे आखिरी पन्ना खोला। पन्ना बिल्कुल खाली था। मोहित का दिल बैठ गया।

फिर खुद को समझाया—

“शायद pencil हल्की थी। दिखा नहीं होगा।”

इस बार उसने सोचा, **अबकी बार कोई chance नहीं।** उसने blue pen उठाया और उसी जगह थोड़ा गाढ़ा लिख दिया—

143

Notebook फिर वापस चली गई, लेकिन कुछ दिनों बाद जब वह दोबारा उसके हाथ में आई तो वहाँ भी वही सन्नाटा था। कोई जवाब नहीं था।

मोहित धीरे-धीरे मायूस होने लगा। उसने notebook माँगना बंद कर दिया। उसे लगने लगा कि शायद उसने अपनी औकात से बड़ा सपना देख लिया है। शायद ज़ाबिया के लिए वह सिर्फ़ coaching का एक लड़का था और

उन दोनों के बीच जितनी नज़दीकी उसे महसूस होती थी, वह सिर्फ़ उसके अपने दिल की बनाई हुई कहानी थी।

लेकिन मोहब्बत शायद हार मानने वालों में से नहीं होती।

एक दोपहर ज़ाबिया खुद चलकर मोहित की bench के पास आई और बोली, “मोहित... तुम्हारी notebook मिल सकती है?” मोहित कुछ पल उसे देखता रहा। जिस लड़की से वह महीनों से ठीक से बात करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, वह आज खुद उससे notebook माँग रही थी। उसने बिना किसी उम्मीद के अपनी notebook उसकी तरफ़ बढ़ा दी। ज़ाबिया notebook लेकर चली गई।

अगले दिन उसने वही notebook मुस्कुराते हुए मोहित को वापस कर दी। वह मुस्कान छोटी थी, लेकिन मोहित के लिए उसमें जाने कितने सवालों के जवाब छिपे थे। वह coaching से लगभग भागता हुआ घर पहुँचा, कमरे का दरवाज़ा बंद किया और काँपते हाथों से notebook खोली। सीधे आखिरी पन्ने पर उसकी नज़र गई।

वहाँ लाल स्याही से, बेहद खूबसूरत गोल handwriting में सिर्फ़ तीन अंक लिखे थे— **143**

मोहित कुछ पल तक बिल्कुल शांत रहा। फिर उसकी आँखें फैल गईं। उसने दोबारा देखा।

फिर तीसरी बार।

143।

वही तीन अंक। लेकिन इस बार उसके लिखे हुए नहीं।

ज़ाबिया के। उस पल मोहित के भीतर जैसे किसी ने हजारों दीये जला दिए।

वह notebook को लेकर बिस्तर पर बैठ गया और अचानक हँसने लगा। फिर हँसते-हँसते उसकी आँखों से आँसू निकल आए।

उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि हँसे, रोए या कमरे से बाहर निकलकर पूरी दुनिया को बता दे कि—

“भाई... हो गया!”

उसके लिए वह लाल स्याही सिर्फ़ तीन अंक नहीं थे। वे उसके उन चार महीनों का जवाब थे, जिनमें उसने बिना एक शब्द कहे मोहब्बत की थी। वे उन तमाम नज़रों का जवाब थे जो दोनों ने चुपके से एक-दूसरे को दी थीं। वे उस डर का जवाब थे जिसकी वजह से मोहित आज तक ज़ाबिया से खुलकर बात नहीं कर पाया था। उसने notebook को सीने से लगा लिया।

कमरे की दीवारें वही थीं। छत वही थी। गरीबी वही थी। लेकिन उस दिन मोहित को पहली बार लगा कि वह दुनिया का सबसे अमीर इंसान है। क्योंकि उसके पास वह चीज़ थी जिसे पैसे से खरीदा नहीं जा सकता था।

ज़ाबिया का पहला जवाब।

और शायद उसे तब ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि इन तीन लाल अंकों से शुरू हुआ यह रिश्ता आगे चलकर सिर्फ़ दो लोगों की love story नहीं रहने वाला था।

यह कहानी अब धीरे-धीरे उन दो दुनियाओं की तरफ़ बढ़ रही थी...

जिनके बीच एक दिन **मोहब्बत को अपने लिए रास्ता बनाना था।**

अध्याय 4

“मोहित... रुको!”

अगली सुबह मोहित जब coaching पहुँचा, तो उसके भीतर जैसे कोई नया इंसान जन्म ले चुका था। कल तक जो लड़का ज़ाबिया के सामने आँखें उठाने से डरता था, आज उसके चेहरे पर ऐसी मुस्कान थी जैसे उसने दुनिया की सबसे बड़ी lottery जीत ली हो। लेकिन मोहब्बत का पहला इज़हार मिल जाने के बाद भी प्रेमी की हिम्मत रातों-रात इतनी नहीं बढ़ती। ज़ाबिया सामने आई तो मोहित ने मुस्कराकर उसे देखा, उसने भी पल भर के लिए नज़रें उठाईं, मगर दोनों में से किसी के पास बोलने की हिम्मत नहीं थी। आखिर मोहित ने वही पुराना रास्ता चुना—उसने धीरे से ज़ाबिया की वही नीली notebook माँग ली।

घर पहुँचते ही उसने notebook का आखिरी पन्ना खोला और उसकी आँखें वहीं ठहर गईं। उसके लिखे **143** के ठीक आगे एक बेहद छोटा-सा **2** लिखा था—**1432**। बस एक अंक... लेकिन उस एक अंक ने मोहित के भीतर जैसे पूरा आसमान खोल दिया। **I Love You Too**. वह कुछ देर तक उस पन्ने को देखता रहा। फिर हँसा, फिर उसे सीने से लगा लिया। उस दिन पहली बार उसे यक़ीन हुआ कि जो तूफ़ान इतने महीनों से उसके दिल में उठ रहा था, उसकी दूसरी तरफ़ भी कोई खिड़की खुल चुकी थी। अब यह सिर्फ़ उसकी मोहब्बत नहीं थी; ज़ाबिया ने भी उसी ख़ामोश भाषा में अपना दिल उसके सामने रख दिया था।

जनवरी (2014) शुरू हो चुका था और नया साल अपनी दस्तक दे चुका था। लेकिन मोहित के लिए कैलेंडर की तारीखों से ज़्यादा एक दूसरी तारीख़ मायने रखती थी—फ़रवरी, जब coaching का session खत्म होने वाला था और उसके बाद लंबी छुट्टियाँ पड़नी थीं। उसे डर था कि अगर इन छुट्टियों से पहले उसने ज़ाबिया से अपने दिल की बात खुलकर नहीं कही, तो यह दूरी कहीं उनके बीच हमेशा की दूरी न बन जाए। अब तक उनकी मोहब्बत

आँखों, मुस्कुराहटों और notebook के आखिरी पन्नों में छिपी थी; मगर मोहित चाहता था कि पहली बार उसके दिल की बात शब्दों में भी ज़ाबिया तक पहुँचे।

मोहित के पास शब्द कम थे, लेकिन रंग बहुत थे। बचपन से Drawing का शौक उसके काम आया। उसने चार-पाँच रातें जागकर एक ऐसा **love card** बनाना शुरू किया, जिसमें कागज़ से ज़्यादा उसका दिल लगा था। हर रंग में कोई एहसास था, हर line में कोई अधूरी बात और हर कोने में वह डर, जिसे वह ज़ाबिया के सामने खड़े होकर कभी कह नहीं पाया था। वह लिखता, मिटाता, फिर लिखता। कभी card को देखकर मुस्कुराता और अगले ही पल सोचता—*“कहीं ज़्यादा तो नहीं हो गया?”*

फिर खुद ही जवाब देता—*“अगर आज नहीं कहा, तो शायद कभी नहीं कह पाऊँगा।”*

Card तैयार हुआ तो मोहित ने उसे कई बार पढ़ा। वह सिर्फ़ “I Love You” नहीं था। उसमें उस लड़के की पूरी कहानी थी, जो चार किलोमीटर पैदल चलकर सिर्फ़ एक लड़की को देखने coaching आता था; जो पूरी class से बात कर सकता था लेकिन उसके सामने आते ही चुप हो जाता था; जिसके पास देने के लिए महँगे gifts नहीं थे, मगर अपनी पूरी सच्चाई थी। शायद इसी वजह से वह card उसके लिए किसी महँगी चीज़ से कहीं ज़्यादा कीमती था।

ज़ाबिया की notebook अभी भी मोहित के पास थी। उसने रात को कमरे की हल्की रोशनी में card को notebook के दो पन्नों के बीच रखा और उसे खोने के डर से चारों किनारों पर glue लगा दिया। उसे लगा कि अब यह card ज़ाबिया तक पहुँचेगा ही। लेकिन प्रेम का असली इम्तिहान अक्सर इज़हार से पहले होता है।

अगली सुबह वह notebook को सीने से लगाए coaching तो पहुँच गया, लेकिन जैसे ही ज़ाबिया उसके सामने आई, उसके हाथ-पैर काँपने लगे। उसने notebook आगे बढ़ाने की कोशिश की, फिर अचानक हाथ रोक लिया और बिना कुछ दिए वापस अपनी जगह आ गया। उसे खुद पर गुस्सा आया।

“अबे मोहित, चार महीने से प्यार कर रहा है और एक notebook देने में जान जा रही है!” मगर दिल दिमाग की कहाँ सुनता है?

एक दिन बीता। फिर दूसरा। फिर तीसरा। Notebook उसके पास ही रही। चौथे दिन उसने आखिरकार आँखें बंद कीं, मन ही मन ईश्वर को याद किया और खुद से कहा—

“आज नहीं दिया तो फिर कभी नहीं दे पाऊँगा।” उसने काँपते हाथों से notebook ज़ाबिया की तरफ़ बढ़ा दी और उसके बाद पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। वह वहाँ से ऐसे निकला जैसे कोई अपराध करके भाग रहा हो।

उस रात मोहित की हालत किसी ऐसे कैदी जैसी थी जिसे अपने फैसले का फैसला सुनने के लिए सुबह का इंतज़ार करना हो। नींद उसकी आँखों से गायब थी। बार-बार वही सवाल घूम रहे थे—

“क्या उसने card पढ़ लिया होगा?” “वह मेरे बारे में क्या सोच रही होगी?” “अगर उसे बुरा लग गया तो?” और सबसे बड़ा डर— *“अगर उसने घर में बता दिया तो?”*

पहली बार उसे एहसास हुआ कि मोहब्बत जितनी खूबसूरत होती है, उतनी ही डरावनी भी हो सकती है। क्योंकि जब दिल किसी को सच में अपना मान लेता है, तब उसके खोने का खयाल भी इंसान को भीतर तक हिला देता है।

सुबह हो गई,

लेकिन मोहित के भीतर coaching जाने की रत्ती भर हिम्मत नहीं थी। उन दिनों उसके पास एक पुराना-सा keypad phone था, जिसकी हालत ऐसी थी कि हर call से पहले लगता था कि शायद यह आखिरी बार बजेगा। उसने काँपती उँगलियों से अनिल यादव को phone लगाया। अनिल यादव, (रामकुमार के जाने के बाद कोचिंग में मोहित का नए लड़कों में से अच्छा दोस्त बन गया था जिसके साथ मोहित अपने सारे दुःख और दर्द बाटता था))

“भाई... ज़ाबिया coaching आई है क्या? ज़रा देखकर बता। और उसके साथ उसका भाई या बाप तो नहीं आया है डंडा लेकर? उसके चेहरे के expressions कैसे हैं?”

दूसरी तरफ़ कुछ सेकंड ख़ामोशी रही, फिर अनिल ज़ोर से हँसा—“अबे डरपोक के पढ़े! यहाँ कोई नहीं आया है। तू चुपचाप चला आ।”

मोहित फिर पूरी हिम्मत जुटाकर coaching पहुँचा। पूरी class में वह इतना डरा हुआ था कि एक बार भी ज़ाबिया की तरफ़ देखने की हिम्मत नहीं हुई। उसे लग रहा था कि अगर उसने आँख उठाई और ज़ाबिया ने नाराज़ होकर देख लिया, तो उसकी पूरी दुनिया वहीं खत्म हो जाएगी। वह सिर झुकाकर बैठा रहा और मन ही मन जाने कितनी दुआएँ करता रहा। शायद उस उम्र में उसे धर्मों के फ़र्क़ का पूरा अर्थ नहीं मालूम था, लेकिन इतना ज़रूर समझने लगा था कि जिस लड़की को वह दिल दे बैठा है, उसके और उसके बीच दुनिया के बनाए हुए कुछ ऐसे फ़ासले हैं जिन्हें सिर्फ़ मोहब्बत से पार करना आसान नहीं होगा।

घंटी बजी। Class खत्म हुई। मोहित ने राहत की साँस ली। वह लगभग भागने ही वाला था कि अचानक पीछे से एक आवाज़ ने पूरे गलियारे को रोक दिया—“**मोहिइत्तत... रुको!**”

मोहित के कदम वहीं जम गए।

यह पहली बार था जब उसने ज़ाबिया के होंठों से अपना नाम सुना था। इतने महीनों तक उसका नाम उसकी अपनी आवाज़ में ही था, मगर उस दिन वही नाम ज़ाबिया की आवाज़ में सुनाई दिया। एक साधारण-सा नाम अचानक उसके लिए दुनिया का सबसे खूबसूरत शब्द बन गया।

वह धीरे से पलटा।

ज़ाबिया तेज़ी से उसकी तरफ़ आ रही थी। उसके चेहरे पर हल्की-सी घबराहट थी, लेकिन आँखों में एक अजीब-सी चमक। वह उसके पास आई और बिना कुछ कहे उसकी काँपती हथेली पर एक notebook रख दी। मोहित ने notebook की तरफ़ देखा। उसे समझ नहीं आया कि यह वही notebook थी या कोई दूसरी। तभी ज़ाबिया ने बहुत हल्की आवाज़ में कहा, “घर जाकर देखना।”

मोहित कुछ पूछ पाता, उससे पहले वह अपनी झुकी हुई पलकों के साथ वापस मुड़ गई।

अध्याय 5

चॉकलेट की कड़वाहट और मजहब की दीवार

ज़ाबिया के हाथों से notebook मिलते ही मोहित के भीतर जैसे खुशी और बेचैनी का तूफ़ान एक साथ उठ खड़ा हुआ। वह घर जाकर ख़त पढ़ने का इंतज़ार नहीं कर सकता था। उसके कदम coaching से बाहर निकलते ही खुद-ब-खुद पास के एक सुनसान-से पार्क की तरफ़ मुड़ गए। वहाँ एक पुरानी लकड़ी की bench दिखाई दी तो वह तुरंत जाकर बैठ गया।

notebook को उसने सीने से लगा रखा था और दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा था जैसे उसके भीतर कोई जवाब नहीं, बल्कि पूरी ज़िंदगी बंद हो। उसने बेचैनी में notebook खोली तो उसके भीतर एक **chocolate** रखी थी उसने खुद से मुस्कुराकर कहा,

“पहले ख़त पढ़ूँ या chocolate खाऊँ?”

मुफ़लिसी अपनी जगह थी, मगर उस वक्त मोहब्बत की बेचैनी भारी पड़ रही थी। फिर भी उसने chocolate का एक टुकड़ा मुँह में डाल लिया। कैडबरी की मिठास अभी घुल ही रही थी कि उसने काँपते हाथों से वह सफ़ेद कागज़ निकाल लिया। उसे क्या पता था कि अगले कुछ सेकंड में वही मिठास उसके लिए कड़वाहट में बदलने वाली है।

पहली ही पंक्ति पढ़ते-पढ़ते उसके चेहरे की मुस्कान गायब हो गई। अगली पंक्ति पर उसकी उँगलियाँ काँपने लगीं और पूरा ख़त पढ़ते-पढ़ते उसके हाथ बर्फ़ जैसे ठंडे पड़ चुके थे।

ज़ाबिया ने लिखा था, “मोहित... मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगी। तुम बहुत मासूम और प्यारे हो। कल रात मैं अपनी रज़ाई में मुँह छुपाकर रोती रही। मेरा दिल भी कहता है कि मुझे तुमसे मोहब्बत है... लेकिन हमारे

बीच मज़हब की एक ऐसी दीवार है जिसे मैं लाँघने से डरती हूँ। मेरे घर में अगर किसी को पता चल गया कि मैंने किसी हिंदू लड़के को दिल दिया है, तो मेरी पढ़ाई, मेरी आज़ादी... सब कुछ छिन सकता है। शायद मेरी ज़िंदगी भी।”

आखिरी कुछ शब्दों तक पहुँचते-पहुँचते मोहित की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने उस कागज़ को नीचे रखा और बहुत देर तक सामने खाली सड़क को देखता रहा। कुछ मिनट पहले जिस chocolate की मिठास उसके मुँह में घुली थी, अब वही मिठास उसे अजीब तरह की कड़वाहट लग रही थी। उसे पहली बार समझ आया कि प्यार मिल जाना और प्यार को जी पाना—दो बिल्कुल अलग चीज़ें हैं।

उसकी आँखों के सामने पिछले कई महीनों के सारे दृश्य एक-एक करके घूमने लगे—पहली बार corridor में ज़ाबिया को देखना, उसकी कथई-हरी आँखें, Physics की notebook, आखिरी पन्ने पर लिखा **143**, फिर उसका जवाब **1432**, और अब यह ख़त। मोहित ने अपनी हथेली से आँसू पोंछे और धीमे से खुद से कहा,

“तो क्या सिर्फ़ इसलिए कि मेरा नाम मोहित है और उसका ज़ाबिया... हम एक-दूसरे को चाह भी नहीं सकते?” उसके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

उस दिन पार्क की वह पुरानी bench उसकी ज़िंदगी की पहली ऐसी जगह बन गई जहाँ उसने अपने प्यार के साथ-साथ अपनी बेबसी को भी महसूस किया। वह घंटों वहीं बैठा रहा। ठंडी हवा चलती रही, पेड़ों से सूखे पत्ते गिरते रहे और मोहित की आँखों से आँसू। उस उम्र में उसे धर्म की गहराई नहीं मालूम थी, मगर इतना ज़रूर समझ आ गया था कि समाज ने इंसानों के बीच कुछ ऐसी दीवारें खड़ी कर रखी हैं, जिनके सामने दो धड़कते दिल बहुत छोटे पड़ जाते हैं।

घर लौटकर उसने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया। उस रात उसकी हालत ऐसी थी जैसे किसी ने उसके भीतर से सारी रोशनी निकाल ली हो। वह बिस्तर पर पड़ा छत को देखता रहा। कभी ज़ाबिया का ख़त पढ़ता, कभी

उसे सीने से लगा लेता और कभी गुस्से में मोड़ देता। फिर खुद ही खोलकर सीधा कर देता। आखिर वह कागज़ था—ज़ाबिया के हाथों से आया हुआ।

मोहित ने जवाब लिखना शुरू किया। एक ख़त, फिर दूसरा। उसने अपनी सारी तड़प शब्दों में उँडेल दी। उसने लिखा कि प्यार कोई अपराध नहीं हो सकता, कि उसने ज़ाबिया को उसके मज़हब की वजह से नहीं, बल्कि उसके इंसान होने की वजह से चाहा है। उसने यह भी लिखा कि अगर दो लोग एक-दूसरे की इज़्ज़त करते हैं, एक-दूसरे के लिए सच्चे हैं, तो दुनिया चाहे उन्हें कितने नाम दे, उसके लिए वह रिश्ता फिर भी पाक रहेगा।

लेकिन ज़ाबिया की मजबूरी उसके शब्दों से बड़ी थी। वह उसे चाहती थी, मगर अपने घर के डर से काँपती थी। मोहित यह बात समझता था, फिर भी उसका दिल मानने को तैयार नहीं था। आखिर में उसने लिख दिया—**“अगर तुम्हारी रूह में मेरे लिए ज़रा-सा भी दर्द बचा है, तो इस नंबर पर बस एक बार जवाब दे देना। अगर जवाब नहीं आया, तो मैं समझूँगा कि मोहित नाम का इंसान तुम्हारे लिए मर चुका है।”**

ज़ाबिया को मनाने के लिए मोहित ने न जाने कितनी कोशिशें कीं। कभी अपने हाथ तक काट लिए, कभी अपने खून से ख़त लिखे, तो कभी वो सब किया जो उस उम्र में एक दीवाना आशिक़ अपनी मोहब्बत को वापस पाने के लिए कर सकता था। मगर ज़ाबिया का दिल नहीं पिघला।

कोचिंग में भी जैसे मातम-सा छा गया था। वही जगह, जहाँ कभी मोहित की हँसी और ज़ाबिया की मौजूदगी से रौनक रहती थी, अब उसे काटने को दौड़ती थी। मोहित का वहाँ बैठना मुश्किल हो गया था।

आखिरकार मोहित धीरे-धीरे टूटने लगा। उसने कोचिंग जाना भी बंद कर दिया। किताबें सामने खुली रहतीं, मगर अक्षर दिखाई नहीं देते। Physics के formulas अब उसे बेकार लगते थे और Chemistry के equations उसके टूटे हुए दिल के सामने बिल्कुल बेमानी।

कुछ ही दिनों बाद उसका coaching session भी ख़त्म हो गया और छुट्टियाँ शुरू हो गईं।

फिर एक रात... ठीक **12 बजे** उसके पुराने keypad phone की screen अचानक चमकी।

एक message था।

कोई नाम नहीं।

कोई शब्द नहीं।

बस—

“.....”

मोहित कुछ सेकंड तक screen को देखता रहा। फिर उसका दिल अचानक ज़ोर से धड़कने लगा। यह सिर्फ़ dots नहीं थे। उसके दिमाग में तुरंत ज़ाबिया का पुराना खत आया, जिसके कोने पर उसने भी इसी तरह कुछ dots बनाए थे। उसने काँपते हाथों से phone पकड़ा और लिखा, “ज़ाबिया... मुझे पता है यह तुम हो। खुदा के लिए मुझसे बात करो।”

कुछ सेकंड तक कोई जवाब नहीं आया।

फिर phone काँपा।

एक नया message।

“मोहित...”

बस इतना पढ़ते ही मोहित की आँखें भर आईं। जिस इंसान को वह खो चुका समझ रहा था, वह उस छोटे-से keypad की screen पर वापस आ गया था।

उसने तुरंत पूछा, “तुम कहाँ से message कर रही हो? यह number हमेशा बंद क्यों आता है?”

कुछ देर बाद जवाब आया—“मेरे घर में phone छूना भी मना है। यह मेरी दीदी का laptop है, जो उन्हें पढ़ाई के लिए मिला है। उसमें internet के लिए modem लगा है। रात को सबके सो जाने के बाद मैं पढ़ाई का बहाना करके laptop अपने कमरे में ले आती हूँ... और फिर उसी internet से तुम्हें message करती हूँ।”

मोहित ने phone को दोनों हाथों से पकड़ लिया। उसे यक़ीन ही नहीं हो रहा था कि जिस लड़की ने उससे दूर जाने की कोशिश की थी, वही अब रात के सत्राटे में घरवालों से छुपकर सिर्फ़ उससे बात करने के लिए जाग रही थी। मोहब्बत शायद यही थी—एक तरफ़ उसे खोने का डर, दूसरी तरफ़ उससे बात करने की बेकरारी।

फिर ज़ाबिया का एक और message आया—“मोहित, हम बात करेंगे... ज़रूर करेंगे। लेकिन एक शर्त है। हम सिर्फ़ दोस्त रहेंगे। उससे ज़्यादा कुछ नहीं। मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगी, मुझे तुम बहुत पसंद हो... शायद जितना तुम्हें लगता है उससे भी ज़्यादा। लेकिन हमारी हक़ीक़त बहुत मुश्किल है। अगर हम इस रिश्ते को नाम देंगे तो शायद हम एक-दूसरे को भी खो देंगे। इसलिए... दोस्त?”

मोहित देर तक उस message को देखता रहा। उसके दिल में हज़ार आवाज़ें थीं—“दोस्ती नहीं चाहिए, मुझे तुम चाहिए।” लेकिन दूसरी तरफ़ वह यह भी जानता था कि अगर उसने उसकी यह छोटी-सी शर्त नहीं मानी, तो शायद ज़ाबिया हमेशा के लिए उससे दूर चली जाएगी। उसने आख़िरकार type किया—“मंज़ूर है... सिर्फ़ दोस्त।”

Screen पर ज़ाबिया का छोटा-सा reply आया—“पक्का?”

मोहित ने लिखा—“पक्का।”

फिर कुछ सेकंड बाद उसने खुद ही एक और message किया—“लेकिन एक बात है...”

ज़ाबिया ने पूछा—“क्या?”

मोहित ने लिखा—“दिल को कैसे समझाऊँ कि तुम सिर्फ़ दोस्त हो?”

कुछ देर तक कोई जवाब नहीं आया।

फिर screen पर आया—

“वो तुम खुद समझ लेना... बुद्धू।”

मोहित तकिए में मुँह छुपाकर हँस पड़ा।

और उस रात से उनकी दुनिया बदल गई।

रात के **12 बजे से 3 बजे तक** का समय अब उनका था। पूरा शहर सो जाता, गलियाँ शांत हो जातीं, घरों की बत्तियाँ बुझ जातीं और दो अलग-अलग घरों में दो अलग-अलग धर्मों से आए दो बच्चे अपनी-अपनी छोटी-सी दुनिया की खिड़की खोल लेते। ज़ाबिया अपने कमरे में दीदी के laptop की हल्की नीली रोशनी में बैठती और मोहित अपनी पुरानी रज़ाई के अंदर keypad phone की मंद screen छुपाकर message करता। कभी phone की button की आवाज़ ज़्यादा तेज़ हो जाती तो वह तुरंत रुक जाता और कान लगाकर देखता कि कहीं घर में कोई जाग तो नहीं गया।

उनकी बातें भी कितनी मासूम थीं। कभी

ज़ाबिया पूछती, **“खाना खाया?”**

मोहित जवाब देता, **“नहीं।”**

वह तुरंत लिखती, **“क्यों?”**

और मोहित कहता, **“तुमसे बात करने के चक्कर में।”**

फिर उसका जवाब आता, **“झूठे! खाना खाओ, वरना मैं बात नहीं करूँगी।”**

कभी वह उसकी Drawing का मज़ाक उड़ाती—**“तुम्हें सच में लगता है तुम अच्छा बनाते हो?”**

मोहित लिखता, **“हाँ, पूरी coaching में सबसे अच्छा।”**

और ज़ाबिया जवाब देती, **“तुम्हें कोई गलतफ़हमी है।”**

दोनों हँसते। कभी बिना किसी वजह के। कभी सिर्फ़ इसलिए कि सामने वाला online था। धीरे-धीरे “दोस्त” शब्द उनके बीच एक मज़ेदार झूठ बन गया था। वे दोनों जानते थे कि यह दोस्ती नहीं है। दोस्ती में कोई रात के तीन बजे तक किसी का online आने का इंतज़ार नहीं करता। दोस्ती में किसी के “good night” लिखने के बाद दस मिनट तक उसी message को

देखकर मुस्कराया नहीं जाता। दोस्ती में किसी की छोटी-सी चिंता पूरे दिन दिल में नहीं रहती।

मगर वे दोनों उस झूठ को जी रहे थे, क्योंकि उस झूठ के भीतर उनका सच सुरक्षित था।

मज़हब की दीवार अभी भी वहीं थी। घरवालों का डर भी वहीं था। ज़ाबिया के लिए अपने परिवार से इस रिश्ते को छुपाकर रखना कोई मामूली बात नहीं थी। और मोहित के लिए हर रात यह जानना कि शायद अगली रात message न आए, किसी सज़ा से कम नहीं था। फिर भी दोनों उस छोटी-सी screen पर एक ऐसी दुनिया बना रहे थे जहाँ न कोई हिंदू था, न कोई मुस्लिम—बस एक मोहित था और एक ज़ाबिया।

एक रात message करते-करते ज़ाबिया ने पूछा, **“मोहित, अगर हमारे घरवालों को कभी पता चल गया तो?”**

मोहित कुछ देर चुप रहा। फिर उसने लिखा, **“तो जो होगा देखा जाएगा। अभी तो तुम बात कर रही हो... बस यही बहुत है।”**

ज़ाबिया ने जवाब दिया, **“तुम बहुत पागल हो।”**

मोहित मुस्कराया और लिखा—

“हाँ... तुम्हारे लिए।”

उस message के बाद कुछ देर तक कोई reply नहीं आया।

मोहित घबरा गया कि शायद उसने फिर कुछ ज़्यादा कह दिया।

फिर screen चमकी।

“Good night, Mohit.”

बस।

मोहित मुस्कराया, phone सीने से लगाया और आँखें बंद कर लीं।

अध्याय 6

वह रात जब मोहब्बत मौत से हारते-हारते बची

दो महीने बीत चुके थे। मार्च 2014 आ चुका था। नाम था—दोस्ती, मगर रिश्ता दोस्ती से कहीं आगे निकल चुका था। रात के 12 बजे से 3 बजे तक की वे लंबी बातें अब मोहित की आदत बन चुकी थीं। ज़ाबिया की आवाज़, उसके छोटे-छोटे messages, उसकी चिंता, उसकी डाँट—सब कुछ उसकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन गया था। मगर इस रिश्ते की सबसे बड़ी विडंबना यही थी कि मोहित उसे अपना सब कुछ मान चुका था, जबकि उसे अपने नाम से बुलाने तक का हक़ जैसे उसके पास नहीं था। हर रात बात खत्म होने के बाद उसके भीतर एक ही डर रह जाता—*“अगर किसी दिन यह screen खामोश हो गई तो?”*

मार्च 2014 आ चुका था। 11th की annual exams खत्म हो गई थीं और coaching में छुट्टियाँ चल रही थीं।

एक रात (4 मार्च) मोहित घर में बिल्कुल अकेला था। कमरे में अजीब-सा सन्नाटा था। कुछ ही समय पहले ज़ाबिया से उसकी लड़ाई हुई थी और वह उससे बात नहीं कर रही थी। फोन हाथ में था, लेकिन ज़ाबिया की तरफ़ से कोई message नहीं था। बाहर कहीं दूर कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आती और फिर सब कुछ शांत हो जाता।

उस रात शायद अकेलापन उन सारे सवालियों को और बड़ा कर रहा था जैसे।

“क्या पता मोहित के लिए जो रिश्ता इतना खास है, वह उसके लिए उतना ही हो जितना बाकी किसी दोस्ती का?”

“क्या वह इतने महीनों से जिस रिश्ते को दिल से जी रहा है, उसका कोई भविष्य भी है?”

“और अगर आखिर में ज़ाबिया ने उसका साथ नहीं दिया, तो क्या वह इतने वक्त और इतनी भावनाओं के बाद खाली हाथ रह जाएगा?”

वह खुद को समझाने की कोशिश करता रहा कि शायद वह ज़्यादा सोच रहा है। लेकिन उस रात ज़ाबिया की खामोशी ने उसके हर डर को आवाज़ दे दी थी।

एक सवाल दूसरे सवाल को जन्म देता गया। कुछ ही देर में वे सवाल उसके मन में घर कर चुके थे। जितना वह उन्हें दूर करने की कोशिश करता, उतना ही वे उसे बेचैन करते।

मोहित ज़ाबिया को खोना नहीं चाहता था। लेकिन उससे भी ज्यादा वह इस अनिश्चितता में नहीं रह पा रहा था कि आखिर उनके बीच है क्या और आगे होगा क्या।

काफी देर तक वह चुपचाप बैठा रहा। फिर जैसे उसके भीतर जमा सारी बेचैनी एक फैसले पर आकर रुक गई।

उसने फोन उठाया और ज़ाबिया को message किया—

“आज फैसला करना होगा। या तो मुझे अपना लो, या फिर यह सब हमेशा के लिए खत्म कर दो। मैं इस अधर में और नहीं रह सकता।”

कुछ देर बाद laptop की नीली रोशनी में ज़ाबिया का जवाब आया—**“यार मोहित... नहीं हो सकता। Please मेरी मजबूरी समझो। मैं बहुत डरी हुई हूँ।”** उसके शब्द छोटे थे, लेकिन उनके पीछे छिपा डर बहुत बड़ा था। वह मोहित को खोना नहीं चाहती थी, मगर अपने परिवार के सामने खड़े होने की हिम्मत भी उसके भीतर नहीं थी।

मोहित उस रात अपने दर्द में इतना डूब गया कि उसे कुछ और दिखाई ही नहीं दिया। उम्र कम थी, भावनाएँ बहुत बड़ी थीं और उस पल उसे लगा कि उसके पास कोई रास्ता नहीं बचा। कमरे में रखी एक खतरनाक चीज़ उठाकर उसने अपनी जान लेने की कोशिश कर दी। यह कोई प्रेम का प्रमाण नहीं था; यह उस पल उसकी टूट चुकी समझ और भावनाओं की भयावह

परिणति थी। कुछ ही देर में उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। शरीर जवाब देने लगा और साँसें भारी हो गईं।

उसने किसी तरह ज़ाबिया को message करके बता दिया कि उसने क्या कर दिया है।

उधर messages की बाढ़ आ गई। ज़ाबिया लगातार उसे लिख रही थी—रोते हुए, घबराते हुए, उसे जवाब देने के लिए कह रही थी। लेकिन मोहित की आँखों के सामने अब सब धुंधला पड़ने लगा था। phone हाथ से छूटने लगा। तभी उसे बाहर मुख्य दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक सुनाई दी।

वह किसी तरह घिसटता हुआ दरवाज़े तक पहुँचा, कुंडी खोली और वहीं चौखट पर गिर पड़ा।

जब उसकी आँखें खुलीं, तो सामने घर की छत नहीं बल्कि अस्पताल की सफ़ेद ceiling थी। चारों तरफ़ दवाइयों और फ़िनाइल की गंध थी। शरीर में इतनी कमजोरी थी कि हाथ उठाना भी मुश्किल लग रहा था। उसके बड़े भाई ने समय रहते पहुँचकर उसे अस्पताल पहुँचाया था। उस दिन मोहित मौत के बहुत करीब जाकर वापस लौटा था।

कुछ देर बाद उसने तकिये के नीचे रखा अपना phone निकाला। Screen खुलते ही उसकी साँस रुक गई। ज़ाबिया के सैकड़ों messages पड़े थे। वह हर कुछ मिनट में पूछ रही थी—*“मोहित, please जवाब दो...” “तुम ठीक हो?” “मुझसे बात करो...” “Please मुझे अकेला मत छोड़ना...”*

मोहित की आँखों में आँसू आ गए।

तभी एक अनजान number से call आया।

उसने बेहद कमजोर आवाज़ में phone कान से लगाया—**“Hello...”**

दूसरी तरफ़ कुछ पल तक सिर्फ़ सिसकियाँ सुनाई देती रहीं।

फिर ज़ाबिया की काँपती हुई आवाज़ आई। उसने अपनी अम्मी के phone से छुपकर call किया था और घर की सीढ़ियों के एक कोने में बैठी रो रही थी। वह बार-बार उसका हाल पूछ रही थी—*“तुम ठीक हो? डॉक्टर ने क्या कहा? तुम मुझे छोड़कर तो नहीं जाओगे?”* उसकी आवाज़ में इतना डर था

कि मोहित पहली बार समझ पाया कि उसके टूटने से सिर्फ वह अकेला नहीं टूटा था।

कुछ क्षण बाद ज़ाबिया की आवाज़ और भर्रा गई। उसने रोते हुए कहा—“**Love You, Mohit... Please मुझे छोड़कर मत जाना। मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती।**”

मोहित कुछ बोल नहीं पाया।

जिस इज़हार का इंतज़ार उसने महीनों किया था, वह आखिर उसके सामने था। मगर उस दिन उसकी खुशी में एक गहरी टीस भी मिली हुई थी। उसे पहली बार समझ आया कि किसी को पाने की चाह में खुद को खो देना मोहब्बत नहीं हो सकती। अगर ज़ाबिया सच में उससे प्यार करती है, तो उसे उसके साथ जीना है—न कि उसके लिए मर जाना।

उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, “**ज़ाबिया... मैं कहीं नहीं जा रहा।**”

फोन के दूसरी तरफ़ फिर सिसकियाँ सुनाई दीं।

उस रात दोनों बहुत देर तक बात करते रहे। कोई बड़ी-बड़ी कसमें नहीं खाईं। कोई फिल्मी वादा नहीं किया। बस एक-दूसरे को यह भरोसा दिया कि चाहे रास्ता कितना भी मुश्किल हो, वे जल्दबाज़ी में अपनी ज़िंदगी को खत्म नहीं करेंगे।

मोहित अस्पताल के उस छोटे-से bed पर लेटा था। बाहर रात गहरी हो चुकी थी। ज़ाबिया दूसरी तरफ़ phone पकड़े बैठी थी। दोनों के बीच सैकड़ों किलोमीटर नहीं, बल्कि उससे भी बड़ी एक अदृश्य दीवार थी—पर उस रात पहली बार दोनों ने तय किया कि उस दीवार को तोड़ने की कोशिश **ज़िंदगी बचाकर** करेंगे।

छुटियाँ अभी लंबी थीं।

उसे पहली बार महसूस हुआ था कि यह कहानी सिर्फ़ प्यार करने की नहीं होगी...

उन्हें अपने प्यार को ज़िंदा रखने के लिए भी लड़ना पड़ेगा।

अध्याय 7

मोहब्बत की गली और कव्वाली वाली सुबह

पिछली रात अस्पताल के उस सफ़ेद कमरे में जो तीन शब्द ज़ाबिया ने रोते हुए कहे थे—

“I Love You, Mohit”—वे अब मोहित के कानों में नहीं, सीधे उसकी धड़कनों में बज रहे थे। पहली बार उसे यक़ीन हुआ था कि जिस मोहब्बत को वह इतने महीनों से अकेले ढो रहा था, उसमें दूसरी तरफ़ भी उतनी ही आग थी। फर्क बस इतना था कि मोहित के पास डर कम और ज़ाबिया के पास डर ज़्यादा था।

अस्पताल से छुट्टी मिली तो डॉक्टर ने आराम करने की सलाह दी, मगर डॉक्टर को क्या पता था कि मोहित की बीमारी शरीर में नहीं, दिल में थी और उसकी दवा अस्पताल से लगभग उतनी ही दूर थी जितनी ज़ाबिया की गली!

शरीर अभी कमज़ोर था, कदमों में लड़खड़ाहट थी, लेकिन दिल ने फैसला कर लिया था—घर जाने से पहले एक बार ज़ाबिया को देखना ज़रूरी है। वह सीधे उसकी गली के मोड़ पर जा पहुँचा।

गली वही थी, मकान वही था, मगर आज मोहित को सब कुछ नया लग रहा था। वह दूर खड़ा होकर कभी बालकनी की तरफ़ देखता, कभी दरवाज़े की तरफ़। कुछ देर बाद पर्दा हल्का-सा हिला और ज़ाबिया की झलक दिखाई दी। दोनों की नज़रें मिलीं। कोई बात नहीं हुई, कोई हाथ नहीं हिला, कोई इशारा तक नहीं हुआ... फिर भी उस एक नज़र में पिछली रात की पूरी बातचीत जैसे दोबारा हो गई। मोहित के चेहरे पर मुस्कान आ गई और ज़ाबिया ने झट से पर्दे की ओट ले ली।

बस, उस दिन से मोहित का नया routine बन गया—दिन में एक-दो बार उसकी गली के चक्कर और रात में घंटों उसकी याद। कोई दूसरा लड़का शायद इस काम को stalking कहता, मोहित इसे अपनी daily पूजा समझता था। फर्क बस इतना था कि पहले वह मंदिर जाने के लिए रास्ता ढूँढ़ता था, अब ज़ाबिया की गली का रास्ता उसे आँखें बंद करके भी याद था।

मोहब्बत का असर धीरे-धीरे इतना गहरा होने लगा कि ज़ाबिया की तहज़ीब और उसकी दुनिया का रंग भी मोहित पर चढ़ने लगा। पहले उसकी सुबह भजनों से होती थी, अब कानों में नुसरत फ़तेह अली खान की कव्वाली बजने लगी। उसे उर्दू का ‘अलिफ़’ तक ठीक से नहीं आता था, मगर दो-चार दिन कव्वाली सुनकर उसे लगने लगा कि शायद अगली सुबह उठते ही मिर्ज़ा ग़ालिब की आत्मा उसके कमरे में किराए पर रहने आ जाएगी।

कभी वह आईने में खुद को देखकर मुस्कुराता और सोचता—*“भाई, प्यार आदमी को कितना बदल देता है... कल तक जिसे उर्दू नहीं आती थी, आज वह ‘इश्क़’, ‘इकरार’, ‘महबूब’ और ‘मोहब्बत’ जैसे शब्दों का विशेषज्ञ बना घूम रहा है!”* फिर अगले ही पल ज़ाबिया का चेहरा याद आता और वह खुद ही शर्माकर मुस्कुरा देता।

उन दिनों धर्म उसके लिए किसी दीवार का नाम नहीं था। उसे मंदिर की घंटी भी अपनी लगती थी और ज़ाबिया की दुनिया से आती अज़ान भी। उसे लगता था कि ऊपर बैठा ईश्वर और अल्लाह शायद इंसानों की तरह आपस में बहस नहीं करते होंगे कि *“यह लड़का मेरा है या तुम्हारा?”* शायद उन्हें सिर्फ़ इतना दिखाई देता होगा कि दो बच्चे सचमुच एक-दूसरे से प्यार करते हैं।

लेकिन ज़ाबिया के लिए यह इतना आसान नहीं था। उसके घर की बंदिशें, परिवार का डर और मज़हब की सीमाएँ हर कदम पर उसके साथ चलती थीं। वह बालकनी से मोहित को देखकर मुस्कुरा तो देती, मगर उसके चेहरे की उस मुस्कान के पीछे छुपा डर मोहित धीरे-धीरे पढ़ना सीख रहा था। उसे समझ आने लगा था कि उसकी मोहब्बत सिर्फ़ पाने की कहानी नहीं है; यह ऐसी राह है जहाँ हर खुशी के पीछे एक डर खड़ा है।

फिर भी उन दिनों दोनों ने डर को कुछ समय के लिए किनारे रख दिया था। मोहित को समझ आया कि पहला प्यार शायद इसलिए इतना खूबसूरत होता

है क्योंकि उसमें भविष्य की कोई गारंटी नहीं होती। इंसान बस वर्तमान को पूरी तरह जीता है। उस समय गर्मी की धूप भी उसे ठंडी लगती थी, हवा में भी ज़ाबिया की खुशबू महसूस होती थी और सड़क पर पड़ा हर पत्थर जैसे उसके लिए कोई निशानी बन जाता था।

यह वही उम्र थी जब प्यार बहुत बड़ा लगता है और दुनिया बहुत छोटी। उन्हें नहीं पता था कि आगे क्या होने वाला है। उन्हें यह भी नहीं मालूम था कि जिन गलियों में आज उनकी चोरी-छिपे मुस्कानें जन्म ले रही हैं, वही मोहब्बत आने वाले वर्षों में उन्हें ऐसी जगह ले जाएगी जहाँ मुस्कुराने से पहले भी चार बार सोचना पड़ेगा।

फिलहाल, मार्च की वह मखमली धूप उनके हिस्से में थी। एक हिंदू लड़का अपनी सुबह कव्वाली से शुरू कर रहा था, एक मुस्लिम लड़की अपने घर की पाबंदियों के बीच उसे बालकनी से देख रही थी और दोनों के बीच एक ऐसा रिश्ता जन्म ले चुका था, जिसका नाम वे दुनिया से छुपाकर रखते थे।

अध्याय 8

वह पहला गुलाब, फटा जूता और सामने खड़ी मोहब्बत

वक़्त अपनी रफ़्तार से आगे बढ़ता रहा और देखते ही देखते अप्रैल 2014 आ गया। मार्च की उन चोरी-छिपी नज़रों और रातों की लंबी बातचीत के बाद अब वह दिन आ चुका था, जिसका मोहित ने शायद अपनी कल्पनाओं में सैकड़ों बार सपना देखा था—**आज वह और ज़ाबिया पहली बार सचमुच आमने-सामने मिलने वाले थे, बतौर गर्लफ्रेंड और बॉयफ्रेंड।** रिश्ता नया था, उम्र कच्ची थी और दिल इतना बेचैन कि सुबह से ही मोहित को लग रहा था जैसे उसके सीने में दिल नहीं, कोई बेकाबू ढोल बज रहा हो।

उस दिन उसने अपनी अलमारी खोली और कपड़ों के उस छोटे-से संसार में सबसे अच्छे कपड़े ढूँढ़ने लगा। एक-एक कपड़ा निकालकर देखता, फिर वापस रख देता। आखिरकार जो सबसे कम पुराना और सबसे ज़्यादा ठीक-ठाक लगा, उसे पहनकर आईने के सामने खड़ा हो गया। बालों पर पानी लगाया, फिर हाथ से सँवारा, फिर दोबारा सँवारा। आखिर में अपनी हालत देखकर खुद ही बुदबुदाया, *“भाई, आज अगर ज़ाबिया ने पसंद कर लिया तो समझो मेहनत सफल।”* इसके बाद उसने अपना सबसे ख़तरनाक हथियार निकाला—**कोबरा सेंट।** उसने इतना सेंट लगाया कि अगर मोहब्बत में ज़ाबिया बेहोश न भी होती, तो खुशबू से आसपास के मच्छर ज़रूर शहीद हो जाते।

कानों में earphones लगाए, दिल में हज़ारों सवाल दबाए और चेहरे पर नकली confidence चिपकाकर मोहित घर से निकल पड़ा। मुलाक़ात का spot वही पुरानी, सुनसान coaching की parking तय हुआ था। रास्ते के चार किलोमीटर आज पहले से कहीं ज़्यादा लंबे लग रहे थे। हर कुछ कदम बाद हाथ बालों में चला जाता, फिर shirt ठीक होती, फिर जेब टटोली जाती।

और दिमाग में एक ही सवाल घूम रहा था—“सामने जाकर बोलूँगा क्या?” Messages में तो इंसान शेर बन जाता है, लेकिन सामने मोहब्बत खड़ी हो तो वही शेर अचानक सरकारी दफ़्तर की लाइन में खड़ा शर्मीला नागरिक बन जाता है।

जैसे-जैसे parking करीब आती गई, मोहित की धड़कनें तेज़ होती गईं। उसने दूर से देखा और एक पल के लिए उसके कदम वहीं रुक गए। सामने ज़ाबिया खड़ी थी। वही कथई-हरी आँखें, वही सादगी, वही चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान... लेकिन आज वह उसे सिर्फ़ दूर से देखने वाली लड़की नहीं थी। आज वह उसकी मोहब्बत थी, उसकी ज़िंदगी का वह नाम जिसके लिए वह महीनों से रातें जाग रहा था।

ज़ाबिया भी उसकी तरफ़ देख रही थी। दोनों की आँखें मिलीं और अचानक जैसे आसपास की पूरी दुनिया धुँधली पड़ गई। गाड़ियों की आवाज़ें, सड़क का शोर, लोगों की आवाज़ाही—सब पीछे छूट गया। मोहित के लिए उस पल में सिर्फ़ दो चीज़ें बची थीं—वह और ज़ाबिया।

मोहित ने अपनी सारी हिम्मत इकट्ठी की और धीरे-धीरे उसके पास पहुँचा। दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि उसे सच में डर लग रहा था कहीं ज़ाबिया सुन न ले। होंठ खुले, आवाज़ निकली और वह भी इतनी धीमी कि खुद मोहित को शक हुआ कि उसने सच में बोला भी था या नहीं—

“Hello...”

ज़ाबिया ने अपनी पलकें झुका लीं। चेहरे पर एक बेहद प्यारी मुस्कान आई और उसने भी धीमे से कहा—**“Hello...”**

बस इतना ही।

चार महीने की बेचैनी, रातों की बातें, चोरी-छिपे messages, सैकड़ों सपने... और आमने-सामने मिलने पर दोनों के पास कहने को सिर्फ़ एक शब्द था—
Hello!

कुछ पल दोनों चुप खड़े रहे। मगर वह ख़ामोशी भी अजीब तरह की खूबसूरत थी। उसमें झिझक थी, शर्म थी, खुशी थी और एक ऐसा एहसास था जिसे दोनों समझ रहे थे, लेकिन शब्दों में नहीं कह पा रहे थे।

तभी ज़ाबिया ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ एक लाल गुलाब आगे बढ़ाया। गुलाब से हल्की-सी खुशबू आ रही थी। उसने मोहित की तरफ़ देखते हुए मुस्कराकर कहा, **“ये... आपके लिए।”**

मोहित ने गुलाब हाथ में ले लिया।

और उसी क्षण उसे याद आया—**वह खुद खाली हाथ आया था।**

न गुलाब, न chocolate, न कोई छोटा-सा gift... कुछ भी नहीं!

अंदर से आवाज़ आई—*“अबे गधे! कम से कम एक टॉफ़ी ही ले आता। पहली मुलाक़ात है, बारात नहीं कि बस खुद नहा-धोकर आ गया!”*

मगर ज़ाबिया ने उसके चेहरे पर आई उस हल्की-सी झेंप को जैसे पढ़ लिया। उसने कोई शिकायत नहीं की। बल्कि गुलाब देते हुए उसकी तरफ़ देखा और बहुत धीरे से कहा—**“अच्छे लग रहे हो...”**

मोहित के लिए वह सिर्फ़ तारीफ़ नहीं थी। वह उसके पूरे जीवन की सबसे बड़ी compliment थी।

जिस लड़के ने बचपन से अपनी गरीबी, अपने साधारण कपड़ों और अपनी शक्ल-सूरत को लेकर जाने कितनी बार हीनभावना महसूस की थी, उसी लड़के से आज उसकी मोहब्बत कह रही थी—*“तुम अच्छे लग रहे हो।”*

मोहित ने कुछ कहने के लिए होंठ खोले ही थे कि उसकी नज़र अचानक नीचे चली गई।

और वहाँ उसकी सारी शान-शौकत धराशायी हो गई।

जूता फटा हुआ था।

वह भी ऐसा नहीं कि हल्का-सा निशान हो। जूता साफ़ बता रहा था कि उसकी आर्थिक स्थिति के बारे में किसी परिचय की ज़रूरत नहीं। मोहित ने तुरंत अपना पैर दूसरे पैर के पीछे कर लिया। फिर थोड़ा और पीछे किया। फिर ऐसे खड़ा हुआ जैसे अचानक ज़मीन पर कोई बेहद महत्वपूर्ण चीज़ दिखाई दे गई हो।

उसके मन में बस एक ही बात थी—“बस भगवान, आज इसे जूता मत दिखाना। प्यार बचा लेना, इज़्ज़त बाद में देख लेंगे।”

लेकिन ज़ाबिया ने सब देख लिया था।

फिर भी उसकी आँखों में न हँसी थी, न सवाल, न कोई जजमेंट। सिर्फ वही अपनापन था। उसने मोहित को वैसे ही देखा जैसे वह था—बिना महँगे कपड़ों के, बिना चमकते जूतों के, बिना किसी दिखावे के।

मोहित ने पहली बार महसूस किया कि शायद मोहब्बत का असली मतलब यही होता है।

किसी के अच्छे कपड़े देखकर उसे चाहना आसान है; किसी के फटे जूते देखकर भी उसके दिल की खूबसूरती देख पाना—**यही सच्चा प्यार है।**

दोनों कुछ देर वहीं खड़े रहे। मोहित के हाथ में वह लाल गुलाब था और ज़ाबिया की आँखों में एक ऐसी चमक, जिसे वह जीवन भर भूलने वाला नहीं था।

फिर ज़ाबिया हल्की-सी मुस्कुराई और coaching की तरफ़ बढ़ गई। मोहित भी उसके पीछे चल पड़ा। उसके हाथ में गुलाब था, चेहरे पर मुस्कान थी और दिल में एक अजीब-सी गर्माहट।

उस दिन मोहित को पहली बार लगा कि उसकी मुफ़लिसी शायद उसकी सबसे बड़ी कमी नहीं थी।

क्योंकि जिस लड़की के घर और दुनिया उससे बिल्कुल अलग थी, उसने आज उसके हाथ में गुलाब रखकर जैसे कह दिया था—

“मुझे तुम्हारी जेब नहीं, तुम्हारा दिल पसंद है।”

और मोहित... उस एक मुलाकात के बाद फिर कभी पहले जैसा नहीं रहा।

अध्याय 9

‘सलमान-कटरीना’ का दौर, उधार का मोबाइल और पहला रकीब

अप्रैल की उस पहली मुलाक़ात के बाद मोहित और ज़ाबिया के बीच जैसे मोहब्बत ने अपना एक छोटा-सा घर बना लिया था। अब दोनों के बीच वह झिझक नहीं रही थी जो पहली मुलाक़ात में थी। हाँ, सामने बैठकर बात करने में आज भी दोनों की धड़कनें अपना अलग ही संगीत बजाती थीं, लेकिन अब आँखों में एक अजीब-सा भरोसा था—कि सामने वाला भी उसी एहसास में डूबा हुआ है जिसमें हम हैं। कोचिंग की वही दो घंटे की क्लास अब पढ़ाई से ज़्यादा एक-दूसरे के दीदार का वक़्त बन चुकी थी। सर ब्लैकबोर्ड पर सवाल हल करते रहते और मोहित कभी कॉपी में कुछ लिखने का नाटक करता, कभी चुपके से ज़ाबिया की तरफ़ देख लेता। ज़ाबिया भी उसे देखती और तुरंत नज़रें झुका लेती। दोनों का यह नैन-मटक्का इतना लंबा चलता कि कभी-कभी क्लास ख़त्म होने के बाद मोहित को याद ही नहीं रहता कि आज पढ़ाया क्या गया था।

लेकिन दिन में दो घंटे की यह मुलाक़ात अब दिल को कहाँ काफ़ी पड़ने वाली थी! रात होते ही मोहित को उसकी आवाज़ सुनने की बेचैनी होने लगी। उस समय ज़ाबिया के पास अपना मोबाइल नहीं था। घर का माहौल ऐसा था कि फ़ोन उसके लिए कोई आम चीज़ नहीं, बल्कि लगभग प्रतिबंधित सामान था। मोहित के पास अपना मोबाइल था, लेकिन उससे बात कैसे होती? आखिरकार उसने अपने एक दोस्त से एक पुराना मोबाइल कुछ दिनों के लिए उधार लिया और वह मोबाइल ज़ाबिया को दे दिया। उस छोटे-से पुराने फ़ोन को ज़ाबिया के हाथ में देते हुए मोहित के भीतर जो खुशी थी, वह आज के महंगे स्मार्टफ़ोन खरीदने से भी शायद बड़ी थी। उसके लिए वह मोबाइल

सिर्फ एक मशीन नहीं था—वह उसकी और ज़ाबिया की दुनिया के बीच खुलने वाला पहला दरवाज़ा था।

उस दौर में WhatsApp जैसी कोई चीज़ नहीं थी, वीडियो कॉल का सवाल ही नहीं था। मोहब्बत भी बड़ी मेहनत से करनी पड़ती थी। Uninor का रिचार्ज और Tata Docomo का 1 पैसा प्रति सेकंड वाला प्लान उनके लिए किसी खज़ाने से कम नहीं था। दस या बीस रुपये का रिचार्ज कराने के लिए मोहित पान की दुकान तक जाता, कूपन पर लगी सिल्वर पट्टी को सिक्के से खुरचता और फिर नंबर डालते हुए ऐसे धड़कता जैसे गलत नंबर पड़ गया तो प्रेम कहानी वहीं खत्म हो जाएगी। बैलेंस चेक करने के बाद अगर कुछ रुपये बच जाते, तो उसके चेहरे पर ऐसी खुशी आती जैसे सरकार ने अभी-अभी उसे आशिकी का लाइसेंस दे दिया हो।

रात को घर में सबके सो जाने के बाद मोहित अपनी पुरानी रज़ाई के भीतर मोबाइल छुपाकर लेट जाता। उधर ज़ाबिया भी अपने कमरे में धीरे-धीरे फ़ोन चलाती, ताकि घर में किसी को आवाज़ तक न सुनाई दे। कॉल जुड़ते ही कुछ पल दोनों ख़ामोश रहते। जिन्हें दिन में दो घंटे सामने देखकर भी बातें करने में शर्म आती थी, वही रात के अंधेरे में फ़ोन पर घंटों बातें करने लगते। “हेलो...” के बाद कभी पाँच मिनट तक सिर्फ़ एक-दूसरे की साँसें सुनाई देतीं, फिर कोई धीरे से पूछता, “सोई नहीं अभी?” और जवाब आता, “नहीं... तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी।” बस, इस एक वाक्य के बाद मोहित की रात की सारी नींद उड़ जाती।

उनकी बातें भी कितनी मासूम थीं—आज क्या खाया, कोचिंग में कौन आया, किसने किससे बात की, कल क्या पहनकर आना है, किसने किसे देखा... और बीच-बीच में वही बचकाने सवाल, “तुम मुझे कितना याद करती हो?” या “अगर मैं कल कोचिंग नहीं आया तो?” ज़ाबिया कभी उसे चिढ़ाती, कभी डाँटती और कभी अचानक ऐसी बात कह देती कि मोहित रज़ाई के अंदर ही मुस्कुराता रह जाता। कई बार रात के दो-तीन बज जाते और दोनों को पता ही नहीं चलता। फिर अचानक कॉल कटती—**लो बैलेंस!** मोहित कुछ सेकंड स्क्रीन देखता रहता, जैसे मोबाइल से ही पूछ रहा हो कि भाई, अभी तो मोहब्बत शुरू हुई थी!

उस समय मिस कॉल भी एक पूरी भाषा हुआ करती थी। एक मिस कॉल का मतलब—“मैं यहाँ हूँ!” दो मिस कॉल—“तुम याद आ रही हो।” और कभी बिना बात किए सिर्फ़ मिस कॉल देकर सो जाना भी अपने आप में एक इज़हार था। आज जिन चीज़ों के लिए इंटरनेट चाहिए, उस समय एक छोटी-सी घंटी ही काफी थी।

और फिर... इस मासूम प्रेमकहानी में एक दिन **रकीब** की एंट्री हो गई।

कोचिंग में कुछ नए लड़के आए। उन्हीं में एक ऐसा लड़का भी था जिसे मोहित और ज़ाबिया की नज़दीकियाँ बिल्कुल पसंद नहीं थीं। उसका नाम था **फ़ैज़ान**, अजीब बात यह थी कि उसकी अपनी मोहब्बत की कहानी भी किसी दूसरे मज़हब की लड़की के साथ चल रही थी, मगर मोहित और ज़ाबिया का प्यार उसे नागवार था। शायद इंसान का अपना इश्क़ हमेशा पाक और सामने वाले का इश्क़ हमेशा ग़लत दिखाई देता है!

वह अक्सर मोहित को रास्ते में रोकता, ताने मारता, दोस्तों के सामने उसे नीचा दिखाने की कोशिश करता। कभी धक्का देता तो कभी बेवजह बहस करता। एक-दो बार तो हाथ उठाने की भी कोशिश कर चुका था। मोहित स्वभाव से शांत था। वह लड़ाई से दूर रहने वाला लड़का था, इसलिए हर बार बात टाल देता। उसे लगता था कि अगर अपनी मोहब्बत को बचाने के लिए थोड़ी तकलीफ़ सहनी पड़े, तो सह लेंगे।

लेकिन एक दिन जब बात ज़्यादा बढ़ गई, तो मोहित ने आखिरकार भारी मन से ज़ाबिया को सब बता दिया।

ज़ाबिया ने जैसे ही पूरी बात सुनी, उसका चेहरा बदल गया। वही लड़की जो मोहित के सामने आवाज़ तक धीमी करके बात करती थी, उस दिन उसके भीतर की पूरी ‘**रौडी ज़ाबिया**’ बाहर आ गई। उसकी आँखों में गुस्सा था और आवाज़ में ऐसी सख्ती कि मोहित को पहली बार लगा—“**भाई... ये लड़की मेरी गर्लफ्रेंड है या मेरी सिव्योरिटी एजेंसी?**”

ज़ाबिया ने उस लड़के को सबके सामने ऐसी खरी-खोटी सुनाई कि उसके बाद किसी की हिम्मत नहीं हुई कि मोहित को छेड़ने की कोशिश करे। मोहित दूर खड़ा उसे देख रहा था और उसके मन में बस एक ही बात चल

रही थी—“जिस लड़की से मैं प्यार करता हूँ, वो मेरी मोहब्बत ही नहीं... मेरी बॉडीगार्ड भी है!”

उस दिन मोहित को पहली बार एहसास हुआ कि मोहब्बत सिर्फ़ साथ मुस्कुराने का नाम नहीं होती। कभी-कभी जब पूरी दुनिया आपके खिलाफ़ खड़ी हो, तब एक इंसान का आपके लिए खड़े हो जाना ही सबसे बड़ा इज़हार होता है।

धीरे-धीरे उनकी जोड़ी पूरे कोचिंग में मशहूर हो गई। उन दिनों सलमान ख़ान और कटरीना कैफ़ की जोड़ी युवाओं के दिलों पर राज करती थी। बस फिर क्या था—किसी ने मज़ाक में मोहित और ज़ाबिया को ‘**सलमान-कटरीना**’ कह दिया और नाम ऐसा चिपका कि फिर दोनों की अपनी पहचान से ज़्यादा उनकी जोड़ी मशहूर हो गई।

कोचिंग में दोनों साथ आते तो पीछे से आवाज़ आती—“**लो भाई, सलमान-कटरीना आ गए!**” मोहित शर्म से मुस्कुराता और ज़ाबिया उसे घूरकर देखती। कभी बेंच के नीचे से छोटी-सी चिट पास होती, कभी किताब के अंदर दो लाइन का संदेश छुपा होता और कभी सिर्फ़ एक नज़र पूरी बातचीत कर देती। उस दौर में उनके पास महंगे तोहफ़े नहीं थे, बड़ी-बड़ी डेट्स नहीं थीं, लेकिन छोटी-छोटी चीज़ों में खुश होने की कला थी।

और उनकी मोहब्बत की सबसे खूबसूरत बात यह थी कि दोनों ने कभी एक-दूसरे के मज़हब को अपने प्यार के रास्ते की दुश्मनी नहीं बनने दिया। ज़ाबिया के लिए मोहित का मंदिर और उसकी आस्था उतनी ही सम्मान के योग्य थी, जितनी मोहित के लिए ज़ाबिया की अज़ान, दुआ और रोज़ा। जब रमज़ान आया तो मोहित ने उसके साथ रोज़ा रखने की कोशिश की। पहली ही बार भूख लगी तो हालत ऐसी हुई कि उसे समझ आया—**इश्क़ में रोज़ा रखना आसान है, मगर दोपहर तक निभाना अलग ही परीक्षा है!** ज़ाबिया उसकी हालत देखकर हँसती और कहती, “**बस थोड़ा और सब्र करो।**” मोहित मन ही मन सोचता—“**तुम कह रही हो तो शाम तक दुनिया छोड़ने को भी तैयार हूँ।**”

वहीं जब करवाचौथ का मौक़ा आया, तो ज़ाबिया ने भी मोहित की लंबी उम्र के लिए व्रत रखा। मोहित को शायद उस वक़्त पहली बार समझ आया कि

मोहब्बत का मतलब सिर्फ यह नहीं कि कोई आपको अपने मज़हब में खींच ले; मोहब्बत तो यह भी है कि इंसान आपकी आस्था का सम्मान करते हुए आपके लिए दुआ करे।

दो अलग घरों से आए ये दो लोग धीरे-धीरे एक-दूसरे की दुनिया समझने लगे थे। और इस तरह, एक तरफ़ मुफ़्त टॉकटाइम पर चलती रातों की लंबी बातें थीं, दूसरी तरफ़ कोचिंग की बेंचों पर चोरी-छिपे मिलती नज़रें... बीच में एक रकीब भी आ चुका था, जो उनकी राह मुश्किल बनाने वाला था।

लेकिन मोहित और ज़ाबिया को अभी कहाँ पता था कि यह तो उनकी मोहब्बत की कहानी का सिर्फ़ पहला इम्तिहान था...

अध्याय 10

बारहवीं की फ़्रीस और ज़ाबिया की ईदी

ख़ुशियों का वह दौर चल ही रहा था कि एक दिन अचानक मोहित के सामने घर की ऐसी हज़ीक़त आकर खड़ी हो गई, जिससे वह अब तक ज़ाबिया को बचाता आया था। पापा ने एक शाम बेहद संजीदा आवाज़ में कहा, **“बेटा, घर के हालात अभी ठीक नहीं हैं। बारहवीं की कोचिंग की फ़्रीस का इंतज़ाम नहीं हो पा रहा... तुम कल से कोचिंग जाना बंद कर दो।”** ये सुनते ही मोहित के चेहरे की सारी रौनक जैसे एक पल में उतर गई। उसके लिए कोचिंग सिर्फ़ पढ़ाई की जगह नहीं थी; वहीं ज़ाबिया थी, वहीं उसकी दुनिया थी। लेकिन उससे भी बड़ा डर था—अगर ज़ाबिया को उसकी असली हालत पता चल गई तो? कहीं वह उसे अपनी दुनिया से बहुत छोटा समझकर दूर न हो जाए।

मोहित ने अगले दिन बड़ी मुश्किल से अपने चेहरे पर सामान्य होने का नाटक किया और ज़ाबिया से कह दिया, **“पापा ने घर पर ही होम ट्यूशन लगवा दिया है, इसलिए अब मैं कोचिंग नहीं आ पाऊँगा।”** ज़ाबिया ने उस वक़्त कुछ नहीं कहा, लेकिन शायद उसकी आँखों ने मोहित के झूठ को उसी पल पकड़ लिया था। प्यार में इंसान शब्दों से ज़्यादा ख़ामोशी पढ़ना सीख जाता है।

कुछ ही समय बाद उसे दोस्तों के ज़रिए असली बात पता चल गई—मोहित कोचिंग इसलिए नहीं छोड़ रहा था कि घर पर होम ट्यूशन लग गया है, बल्कि इसलिए कि उसके पास फ़्रीस भरने के पैसे नहीं थे। ज़ाबिया को जैसे ही यह पता चला, उसने न मोहित से बहस की, न उसे शर्मिंदा किया। उसने बस चुपचाप अपने पास रखी ईदी की सारी जमा रकम निकाली और कोचिंग पहुँच गई। फ़िज़िक्स, केमिस्ट्री और मैथ्स—तीनों की पूरे साल की फ़्रीस उसने अपने पैसों से जमा कर दी।

मोहित को इस बात की भनक तक नहीं थी। अगले दिन अचानक कोचिंग से फ़ोन आया, **“आपकी पूरे साल की फ़ीस जमा है, फिर आप क्लास क्यों नहीं आ रहे?”** मोहित कुछ सेकंड तक फ़ोन कान से लगाए खड़ा रहा। उसे लगा शायद सामने वाला मज़ाक कर रहा है। वह सीधा कोचिंग पहुँचा और रिसेप्शन पर जाकर पूछा कि उसकी फ़ीस किसने जमा की है। जब नाम सामने आया—**ज़ाबिया**—तो मोहित कुछ बोल ही नहीं पाया।

वह उसे ढूँढ़ते हुए उसके पास पहुँचा। आँखों में गुस्सा भी था, शर्म भी और आँसू भी। उसने धीमी आवाज़ में पूछा, **“तुमने ऐसा क्यों किया?”**

ज़ाबिया ने बिल्कुल सहज होकर कहा, **“ईदी के ही तो पैसे थे मोहित... तुमसे बढ़कर थोड़े ही थे।”**

बस, यही एक वाक्य मोहित के अंदर बरसों से खड़ी उस दीवार को तोड़ गया। वह अपनी गरीबी छुपाते-छुपाते थक चुका था। उस दिन उसने पहली बार ज़ाबिया के सामने सब कुछ खोलकर रख दिया—पापा की छोटी-सी कमाई, घर की तंगी, अपनी पुरानी साइकिल और वो डर कि कहीं उसकी हैसियत जानकर वह उससे दूर न हो जाए।

ज़ाबिया ने उसकी पूरी बात सुनी और बस इतना कहा, **“मुझे तुम्हारी जेब से प्यार नहीं हुआ मोहित... तुमसे हुआ है।”** मोहित की आँखों से आँसू निकल पड़े। जिस लड़की के घर में दौलत की कोई कमी नहीं थी, उसने अपनी ईदी की जमा-पूँजी उस लड़के की पढ़ाई के लिए दे दी थी जिसके पास अपनी फ़ीस भरने तक के पैसे नहीं थे।

लेकिन अब एक नई मुसीबत थी—**घर पर पापा को क्या बताया जाए?** आखिर फ़ीस तो जमा हो चुकी थी। मोहित ने घर पहुँचकर तुरंत एक नई कहानी बना डाली—**“पापा, कोचिंग में स्कॉलरशिप टेस्ट हुआ था। उसमें मेरा नाम आ गया, इसलिए मेरी फ़ीस माफ़ हो गई।”** पापा ने उसकी तरफ़ देखा, कुछ देर चुप रहे और फिर मान गए। मोहित ने राहत की साँस ली। उधर ज़ाबिया को जब यह बात पता चली तो वह हँसते-हँसते बोली, **“वाह! स्कॉलरशिप भी मिल गई और हीरो भी बन गए!”** मोहित ने भी मुस्कुराकर कहा, **“हीरो नहीं... तुम्हारी वजह से पढ़ाई जारी रखने वाला गरीब विद्यार्थी हूँ।”**

उस दिन से मोहित के लिए ज़ाबिया सिर्फ़ उसकी मोहब्बत नहीं रही। वह उसकी उस दुनिया का हिस्सा बन गई थी जहाँ पैसे कम पड़ सकते थे, हिम्मत टूट सकती थी, लेकिन **साथ निभाने का वादा कभी कम नहीं पड़ता था।**

अध्याय 11

जब मोहब्बत ने ढाल पहन ली

बारहवीं का साल शुरू होते-होते ज़ाबिया और मोहित का रिश्ता सिर्फ़ प्यार तक सीमित नहीं रहा था। अब दोनों एक-दूसरे की आदत बन चुके थे। ज़ाबिया को मोहित की हर छोटी-बड़ी बात याद रहती थी—उसे कब भूख लगती है, कब थकान होती है और कॉलेज से सीधे कोचिंग पहुँचने के चक्कर में वह अक्सर बिना कुछ खाए ही निकल आता है। इसलिए अब उसकी मोहब्बत में एक नया रंग जुड़ गया था—**फ़िक्र का।**

मोहित जैसे ही कोचिंग पहुँचता, कभी ज़ाबिया के बैग से सेंवई का छोटा-सा डिब्बा निकलता, कभी कबाब। पार्किंग में गाड़ियों की ओट में मिलने वाले वे दो-चार मिनट उनके लिए किसी महफ़िल से कम नहीं होते। ज़ाबिया पहले खुद एक निवाला खाती, फिर मोहित की तरफ़ बढ़ाकर कहती, **“मुँह खोलो...”**

और मोहित हमेशा की तरह शर्माने का नाटक करता, जबकि अंदर से उसकी हालत ऐसी होती जैसे उसे आज फिर से ईद की दावत मिल गई हो।

कभी वह हँसकर कहती, **“तुम्हें पढ़ाई करानी है या पहले इंसान बनाना है?”** और मोहित जवाब देता, **“तुम्हारे हाथ का खाना मिल रहा है, पढ़ाई तो अब अपने-आप हो जाएगी।”**

ज़ाबिया की फ़िक्र सिर्फ़ खाने तक नहीं थी। वह जब घरवालों के साथ शॉपिंग पर जाती, तो अपने लिए कपड़े लेने के साथ मोहित के लिए भी कुछ न कुछ उठा लाती। मोहित हर बार वही पुराना बहाना बनाता, **“मेरे पास कपड़े हैं।”**

ज़ाबिया मुस्कुराकर कहती, **“पता है... लेकिन मुझे अच्छा लगता है।”** मोहित के पास शायद महँगी चीज़ें खरीदने के पैसे नहीं थे, मगर उस लड़की

ने कभी उसे उसकी जेब से नहीं तौला। उसके लिए मोहित की कीमत उसकी जेब में नहीं, उसके दिल में थी।

लेकिन मोहब्बत जितनी गहरी होती जा रही थी, खतरा भी उतना ही करीब आता जा रहा था।

एक दिन दोनों साथ कोचिंग की तरफ जा रहे थे कि रास्ते में ज़ाबिया के चाचा की नज़र उन पर पड़ गई। गाड़ी अचानक उनके सामने आकर रुकी। चाचा ने मोहित को घूरते हुए पूछा, **“कौन हो तुम? और इसके साथ कहाँ जा रहे हो?”** मोहित ने घबराकर बस इतना कहा, **“जी... हम साथ पढ़ते हैं।”** लेकिन उस जवाब ने जैसे आग में घी डाल दिया।

इसके बाद जो हुआ, उसे मोहित शायद ज़िंदगी भर नहीं भूल पाया। उसे जबरन गाड़ी में बैठाया गया और शहर से दूर एक सुनसान जगह ले जाकर बुरी तरह पीटा गया। मार से ज़्यादा डर उन शब्दों ने पैदा किया जो उसके कानों में बार-बार गूँज रहे थे—**“दोबारा मेरी भतीजी के आसपास दिखाई दिया, तो तुझे ही नहीं, तेरे पूरे परिवार को भुगतना पड़ेगा।”**

उस दिन पहली बार मोहित को एहसास हुआ कि यह सिर्फ़ दो बच्चों की प्रेम कहानी नहीं रही थी। सामने एक ऐसा परिवार था जिसकी पहुँच और रसूख के आगे उसकी छोटी-सी दुनिया बेहद कमज़ोर थी। घर लौटकर उसने चोटें छुपा लीं, मगर ज़ाबिया से यह बात ज़्यादा देर छुपा नहीं पाया। जब उसे सब पता चला, तो वह भीतर से टूट गई। कुछ दिनों तक दोनों ने एक-दूसरे से दूरी बनाए रखी, मगर इश्क़ भी अजीब चीज़ है—डर उसे कुछ समय के लिए रोक सकता है, मिटा नहीं सकता।

धीरे-धीरे फिर वही चोरी-छुपे मिलना शुरू हो गया। मगर इस बार दोनों पहले से ज़्यादा सावधान थे। उन्हें क्या पता था कि असली मुसीबत अभी बाकी है।

एक दिन ज़ाबिया का वह सीक्रेट मोबाइल घरवालों के हाथ लग गया। घर में ऐसा हंगामा हुआ कि ज़ाबिया का कोचिंग जाना ही बंद कर दिया गया। मोहित से संपर्क भी लगभग टूट गया। जिस मोबाइल के सहारे दोनों ने इतने

महीनों तक अपनी छोटी-सी दुनिया बचाकर रखी थी, वही अब उनके लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका था।

मोहित ने हार नहीं मानी। उसने ज़ाबिया की एक भरोसेमंद सहेली से मदद माँगी। सहेली सीधे ज़ाबिया के घर पहुँची और बड़ी मासूमियत से बोली, **“आंटी, वो मोबाइल ज़ाबिया का नहीं है। मेरा है। मेरे घर में मोबाइल रखने की इजाज़त नहीं है, इसलिए मैंने कुछ दिनों के लिए उसके पास रख दिया था।”** कहानी इतनी सफ़ाई से सुनाई गई कि घरवालों को बात सच लग गई। मोबाइल वापस मिल गया और ज़ाबिया पर लगी पाबंदियाँ थोड़ी ढीली पड़ गईं।

मगर बारहवीं की परीक्षाएँ भी अब सिर पर थीं। दोनों ने किसी तरह उस साल को संभाला और आखिरकार बोर्ड की परीक्षाएँ भी खत्म हो गईं। स्कूल और कोचिंग की भागदौड़ खत्म होते ही छुट्टियाँ शुरू हो गईं—और इस बार जुदाई पहले से कहीं ज़्यादा महसूस हो रही थी।

मोहित के पास अब मिलने का कोई बहाना नहीं था। इसलिए उसकी पुरानी साइकिल ही उसकी सबसे बड़ी साथी बन गई। वह कभी किसी काम का बहाना बनाकर, कभी यूँ ही, ज़ाबिया की गली तक पहुँच जाता। ऊपर बालकनी में अगर ज़ाबिया दिखाई दे जाती, तो वही दो मिनट उसके पूरे दिन की कमाई बन जाते। कभी वह हाथ से बस हल्का-सा इशारा करती, कभी मुस्कुराकर पर्दे के पीछे छुप जाती।

उसकी ज़िंदगी में अब दो ही चीज़ें थीं—एक तरफ़ ज़ाबिया की मोहब्बत, दूसरी तरफ़ उसके परिवार का ख़ौफ़। और इन दोनों के बीच खड़ा था एक ऐसा लड़का, जिसके पास न दौलत थी, न रसूख... **बस एक दिल था, जो अब पीछे हटना सीख ही नहीं रहा था।**

अध्याय 12

टूटते सपने, लोहे के पहरे और तूफ़ान से पहले की खामोशी

जुलाई २०१५ की शुरुआत थी। बारहवीं के बाद मोहित और ज़ाबिया की ज़िंदगी अब उस मोड़ पर आ चुकी थी, जहाँ मोहब्बत के साथ-साथ भविष्य भी अपने हिस्से के सवाल पूछने लगा था। अब तक दोनों की दुनिया मुलाक़ातों, चोरी-छिपे होने वाली बातों और एक-दूसरे की छोटी-छोटी खुशियों से चल रही थी, लेकिन अब सामने करियर था, परिवार था और सबसे बड़ी चीज़—हालात थे।

मोहित के दिल में एक ही सपना था—**बी.टेक करना और इंजीनियर बनना**। लेकिन घर की आर्थिक हालत ऐसी नहीं थी कि किसी महँगे कॉलेज की फ़ीस का बोझ उठाया जा सके। आखिर पापा ने अपनी मजबूरी और घर की हैसियत देखकर उसका दाखिला **बी.एससी. एग्रीकल्चर** में करा दिया और फ़ौज की तैयारी के लिए उसे कानपुर भेज दिया।

कानपुर पहुँच तो गया, लेकिन मोहित का मन वहाँ बिल्कुल नहीं लगा। सुबह मैदान में दौड़ने के लिए जाता, शरीर दौड़ता रहता और दिमाग वापस उसी शहर की गलियों में पहुँच जाता जहाँ ज़ाबिया रहती थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह फ़ौज की तैयारी कर रहा है या अपने ही सपने से समझौता।

आखिर एक दिन वह घर वापस आया और ज़ाबिया के सामने बैठते ही उसकी आँखें भर आईं।

"ज़ाबिया... मेरा दम घुटता है वहाँ। मैं फ़ौज के लिए नहीं बना हूँ। मेरा सपना तो बी.टेक करने का था।"

ज़ाबिया ने उसकी आँखों में देखा। वह जानती थी कि मोहित सिर्फ़ किसी कॉलेज की बात नहीं कर रहा था, वह अपने भविष्य की बात कर रहा था। उसने उसके चेहरे पर हाथ रखा और बहुत सहजता से कहा—

"तो वही करो मोहित। JEE की तैयारी करो। फ़्रीस की चिंता मत करना... मैं हूँ न!"

मोहित बस उसे देखता रह गया।

वही लड़की, जिसने पहले उसकी कोचिंग की फ़्रीस अपनी ईदी से भरी थी, अब उसके सपने को बचाने के लिए भी तैयार थी। उसने JEE की कोचिंग की फ़्रीस दे दी।

मोहित के लिए यह सिर्फ़ पैसे नहीं थे। वह उस लड़की का भरोसा था, जो बार-बार उसकी टूटी हुई हिम्मत को अपने हाथों से जोड़ देती थी। और उसी समय मोहित लिखता है कि...

"मेरी मुफ़लिसी पर वह बार-बार अपनी चाहत वार देती थी, जब-जब टूटने लगता था सपना मेरा, वह हँसकर अपनी खुशियाँ हार देती थी।"

लेकिन शायद किस्मत को मोहित का रास्ता आसान करना मंज़ूर ही नहीं था। उसी साल JEE के नियमों में बदलाव हो गया। अब परीक्षा में बैठने के लिए १२वीं में **७५% या उससे अधिक अंक** होना ज़रूरी था। मोहित के अंक उस सीमा से कम थे। जिस सपने के लिए उसने फिर से उम्मीद बाँधी थी, वह एक नियम के सामने आकर टूट गया। मोहित के पास अब कोई रास्ता नहीं बचा था। वह हताश होकर वापस अपने शहर लौट आया। लेकिन उसे क्या पता था कि उसकी अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा तूफ़ान अभी उसका इंतज़ार कर रहा है।

घर लौटते ही खबर मिली कि **ज़ाबिया का सीक्रेट फ़ोन फिर से उसके घर वालों के हाथ लग गया है।**

इस बार घर में ऐसा कोहराम मचा कि ज़ाबिया का कॉलेज जाना तक बंद कर दिया गया। फ़ोन छिन गया, बाहर निकलने पर पहरा लग गया और उसके लिए घर की चारदीवारी ही पूरी दुनिया बन गई।

ज़रूरी नहीं था कि उसके घर वाले हर बार सीधे मोहित के घर पहुँचते। उनके पास अपना सामाजिक रसूख था, अपनी पहुँच थी और अपनी नाराज़गी थी। इसलिए उन्होंने मोहित से सीधे कुछ कहने के बजाय ज़ाबिया पर ही पहरे और सख्त कर दिए।

उसका सजना-सँवरना तक निगाह में आ गया। बालकनी में दो मिनट खड़ी होना भी आसान नहीं रहा। और उसी समय मोहित लिखता है कि...

*“नज़र-नज़र पर पहरे थे,
हर साँस पर पहरा लगा दिया,
इश्क़ का सुराग क्या मिला,
उन्होंने घर को ही ज़िंदों बना दिया।”*

लेकिन ज़ाबिया इतनी आसानी से हार मानने वाली कहाँ थी!

उसने अपनी **फुफ़्फ़ी के ज़रिए रो-गिड़गिड़ाकर** किसी तरह लगभग एक महीने बाद दोबारा कॉलेज जाने की इजाज़त हासिल कर ली।

इधर मोहित ने भी अपनी ज़िंदगी को थोड़ा सँभालना शुरू किया। उसने आत्मनिर्भर बनने के लिए एक छोटी-मोटी नौकरी शुरू कर दी। पहली कमाई हाथ में आई तो रकम भले ही छोटी थी, लेकिन उस दिन मोहित को पहली बार लगा कि अब वह अपने दम पर भी कुछ कर सकता है। और अपनी उसी पहली कमाई से उसने ज़ाबिया के लिए **एक नया फ़ोन खरीदा**।

उस फ़ोन की कीमत शायद बाज़ार में बहुत ज्यादा नहीं थी, लेकिन मोहित के लिए वह उसकी पहली कमाई का हिस्सा था—और ज़ाबिया के लिए उसकी मोहब्बत का। मगर दोनों जानते थे कि पिछली गलती दोबारा नहीं होनी चाहिए। अगर यह फ़ोन भी घर वालों के हाथ लग गया, तो मुश्किल और बढ़ जाएगी।

इसलिए मोहित ने एक बैकअप प्लान भी तैयार कर लिया।

उसने ज़ाबिया से कहा—

“देखो, अगर कभी दोबारा फ़ोन पकड़ा जाए न, तो घबराना मत। मैं तुम्हारे घर के बैक गेट पर, जहाँ चैनल वाला लोहे का गेट है, उसकी

ओट में चुपचाप फ़ोन रख जाऊँगा। तुम रोज़ रात को दो से तीन बजे के बीच वहाँ चेक कर लिया करना।"

ज़ाबिया ने हामी भर दी। कुछ दिन तो यह लुका-छिपी ठीक चली... लेकिन अब तकदीर का वह ख़ौफ़नाक दिन बहुत करीब आ रहा था, जब यह छुपा-छिपा प्यार रंगे हाथों पकड़ा जाने वाला था और यह कहानी अपने सबसे बड़े तूफ़ान में प्रवेश करने वाली थी!

अब उनका प्यार भी किसी फ़िल्म की कहानी से कम नहीं रह गया था।

अध्याय 13

शादी का कार्ड और मोहित की नादान ज़िद

कानपुर का वह अधूरा सपना पीछे छूट चुका था, और मोहित छोटी सी नौकरी से अपना गुजरा कर रहा था।

फुफ्फूरी से मित्रता करने के बाद उधर ज़ाबिया का कॉलेज भी फिर शुरू हो चुका था। दोनों अपनी-अपनी मजबूरियों के बीच किसी तरह एक-दूसरे के करीब बने हुए थे। उन्हें क्या पता था कि अगले कुछ दिनों में उनकी मोहब्बत एक ऐसे इम्तिहान से गुज़रने वाली है, जहाँ किताबों के सवाल नहीं, ज़िदगी और मौत के फैसले सामने होंगे।

नवंबर 2016...

ज़ाबिया की बड़ी बहन की शादी की तैयारियाँ चल रही थीं। कॉलेज की छुट्टियाँ थीं और ज़ाबिया का दिल मोहित से मिलने को बेचैन। उसने मोहित से कहा—

“तुम्हें मेरी बहन की शादी में आना ही पड़ेगा।”

मोहित ने भी आशिकी में थोड़ा अकड़ दिखाते हुए मुस्कराकर कहा—
“आऊँगा... लेकिन एक शर्त पर।”

“क्या?” “शादी का कार्ड तुम खुद मुझे देने आओगी, तभी।”

ज़ाबिया ने शायद सोचा भी नहीं होगा कि इस लड़के की प्रेम कहानी में रोमांस के साथ-साथ इतनी बेवकूफी भी शामिल है! 😊 लेकिन ज़ाबिया ने उसकी ज़िद मान ली। घर पर उसने बहाना बनाया कि उसे कॉलेज से अपनी मार्कशीट लेनी है। दोनों जानते थे कि शहर में कहीं भी मिलना आसान नहीं था। इसलिए उन्होंने शहर से बाहर हाईवे पर बने उसी पुराने परिचित होटल

को चुना, जिसके बारे में सिर्फ़ उनके एक-दो बेहद करीबी दोस्तों को पता था। ज़ाबिया वहाँ पहुँची।

मोहित उसका इंतज़ार कर रहा था।

कुछ देर के लिए दुनिया जैसे फिर वही पुरानी हो गई—दो लोग, एक-दूसरे के सामने और बीच में बाकी पूरी दुनिया से छिपा हुआ उनका छोटा-सा रिश्ता। ज़ाबिया ने शादी का कार्ड उसकी तरफ़ बढ़ाया। मोहित के चेहरे पर मुस्कान आई ही थी कि तभी—

दरवाज़ा धड़ाम से खुला!

होटल का वेटर हाँफता हुआ अंदर आया।

“सर! जल्दी निकलो... बाहर पुलिस आ गई है!”

दोनों के चेहरे का रंग उड़ गया।

मोहित ने घबराकर पूछा—

“क्या हुआ?”

वेटर भी पूरी तरह अनजान था। उसे लगा था कि शायद होटल में कोई सामान्य पुलिस चेकिंग चल रही है।

उसने बस इतना कहा— **“पीछे से निकल जाओ... वहाँ एक रास्ता है!”**

और फिर जो हुआ, उसे देखकर शायद मोहित खुद भी बाद में सोचता होगा कि **उस दिन प्यार ने उसे आशिक़ कम और एथलीट ज़्यादा बना दिया था।**

मोहित ज़ाबिया को लेकर होटल के पीछे पहुँचा।

सामने करीब **8 फीट ऊँची बाउंड्री वॉल** थी। मोहित ने पहले ज़ाबिया को ऊपर चढ़ाया। फिर खुद किसी तरह दीवार पर पहुँचा। नीचे कूदकर उसने ज़ाबिया को सहारा दिया और दोनों दूसरी तरफ़ उतर गए।

होटल के पीछे पेट्रोल पंप था। मोहित ने ज़ाबिया को वहीं खड़ा किया। उसके दिमाग में अभी भी यही था कि शायद यह सामान्य पुलिस चेकिंग है।

उसने ज़ाबिया से कहा कि वह यहीं रुके और वह बाइक लेने वापस होटल जाता है। बाइक लेकर दोनों निकल जाएँगे।

यानी साहब का प्लान बिल्कुल सीधा था—

बाइक उठाओ → ज़ाबिया को लो → घर निकलो।

उसे क्या पता था कि असली कहानी तो अब शुरू हुई है।

मोहित वापस होटल के अंदर गया। मेन गेट से जैसे ही उसने कदम रखा...उसकी चाल वहीं रुक गई। सामने पुलिस थी। लेकिन सिर्फ पुलिस नहीं।

ज़ाबिया का भाई, उसका दबंग चाचा, दर्जनों लोग और उनके साथ खाकी वर्दी वाले। अब मोहित को समझ आया कि यह कोई रूटीन चेकिंग नहीं थी। **यह लोग होटल नहीं, उसे ढूँढ़ने आए थे।** उसके शरीर में जैसे करंट दौड़ गया। वह तुरंत पलटा और भागते हुए होटल के रेस्टोरेन्ट के वर्क रूम में घुस गया। मैनेजर ने उसे देखा तो घबरा गया—

“क्या हुआ भाई?”

मोहित ने हाँफते हुए कहा— **“पुलिस... और लड़की के घर वाले... सब आ गए हैं। बचा लो भाई!”**

मैनेजर ने आसपास देखा और तुरंत कोने में पड़े एक पुराने लोहे के बेड की तरफ़ इशारा किया। **“इसके नीचे घुस जा... जल्दी!”**

मोहित ने उस समय यह भी नहीं सोचा कि बेड के नीचे इंसान आराम से लेट सकता है या नहीं। बस घुस गया। मैनेजर ने बाहर से कुंडी लगाई और ताला लगा दिया। अब एक तरफ़ बाहर पूरा खानदान और पुलिस उसे ढूँढ़ रही थी... और दूसरी तरफ़ मोहित एक पुराने लोहे के बेड के नीचे पड़ा अपनी साँस तक रोककर बैठा था।

मोहित ने काँपते हाथों से ज़ाबिया को फोन किया। लेकिन फोन साइलेंट था। उधर पेट्रोल पंप पर खड़ी ज़ाबिया की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। काफ़ी देर हो गई थी। मोहित वापस नहीं आया। आखिर उसने खुद फोन किया। फोन उठते ही मोहित ने बेहद धीमी आवाज़ में कहा—

“ज़ाबिया... बाहर तुम्हारा पूरा ख़ानदान और पुलिस खड़ी है। मैं फँस गया हूँ। तुम तुरंत घर चली जाओ। मेरी चिंता मत करो।”

कुछ पल दूसरी तरफ़ सिर्फ़ सिसकियाँ सुनाई दीं। फिर ज़ाबिया ने कहा—
“मैं तुम्हें यहाँ छोड़कर अकेले नहीं जाऊँगी।”

मोहित ने समझाया—**“ज़िद मत करो... तुम्हें मेरी कसम है। तुम यहाँ से निकलो।”**

लेकिन ज़ाबिया कहाँ मानने वाली थी? वह वापस उसी 8 फीट की दीवार के पास पहुँच गई, जहाँ से दोनों कुछ देर पहले भागकर निकले थे। मोहित अंदर से परेशान था। वह उसे बचाना चाहता था, लेकिन बाहर निकल नहीं सकता था। आखिरकार उसने वेटर के ज़रिए ज़ाबिया को वहाँ से जाने के लिए मनाया।

भारी मन से ज़ाबिया ऑटो में बैठ गई। मोहित वहीं अँधेरे में पड़ा रह गया। करीब दो घंटे तक वह लोहे के उस बेड के नीचे पड़ा रहा। हर आवाज़ पर दिल उछलकर गले में आ जाता। आखिरकार मैनेजर आया और धीरे से बोला—

“भाई... वे लोग चले गए हैं। लेकिन हाईवे पर अपने कुछ आदमी छोड़ गए हैं। सीधे मत निकलना।”

मोहित ने तुरंत अपने सबसे भरोसेमंद दोस्त को फोन किया। दोस्त ने बिना कोई सवाल किए कार निकाली और हाईवे के किनारे खेतों की तरफ़ गाड़ी खड़ी कर दी। मोहित को अब होटल से निकलना था। लेकिन सामने रास्ता साफ़ नहीं था। वह बाउंड्री वॉल लाँघकर खेतों की तरफ़ गया और मिट्टी में छुपता-रेंगता हुआ कार तक पहुँचा। पीछे का दरवाज़ा खुला था। मोहित अंदर घुसा और पीछे की सीट के नीचे दुबक गया।

उस वक्त उसे पहली बार एहसास हुआ कि **इश्क़ में आदमी क्या-क्या करवा लेता है—कल तक जो लड़का कोचिंग की बेंच पर ज़ाबिया की तरफ़ देखकर शर्माता था, आज वही खेतों में रेंग रहा था।**

कानपुर की तरफ़ भागती ट्रेन

घर पहुँचकर मोहित ने किसी को कुछ समझाने का समय नहीं लिया। बस जल्दी-जल्दी कुछ कपड़े बैग में डाले। घर वालों ने पूछा— **“इतनी जल्दी कहाँ जा रहे हो?”** मोहित ने वही सबसे आसान झूठ बोल दिया—

“कल से एग्जाम हैं... कानपुर जाना है।” और उसी रात वह ट्रेन में बैठ गया। ट्रेन धीरे-धीरे शहर से दूर होती गई। खिड़की के बाहर अँधेरा भाग रहा था। मोहित चुप बैठा था। वह अपने शहर से दूर जा रहा था...लेकिन उसके मन में बार-बार वही दृश्य लौट रहा था—

8 फीट की वह दीवार...पेट्रोल पंप पर खड़ी ज़ाबिया...फोन पर उसकी सिसकती आवाज़...

और वह आखिरी पल, जब उसे मजबूरी में उसे अकेले भेजना पड़ा था। उस रात मोहित ने पहली बार महसूस किया— भाग तो वह शहर से रहा था, लेकिन उसका दिल वहीं छूट गया था... उस 8 फीट की दीवार के उस पार, ज़ाबिया के साथ।

अध्याय 14

‘आगे क्या?’ — नाकामियाँ, पंडित जी की रहस्यमयी पर्ची और किस्मत की पहली बड़ी करवट

होटल वाले उस हादसे के बाद मोहित कुछ समय के लिए शहर से दूर रहा। मामला थोड़ा शांत हुआ तो वह वापस आया, लेकिन इस बार शहर वही था और ज़िंदगी बिल्कुल बदल चुकी थी।

ज़ाबिया का पुराना फ़ोन घरवालों के हाथ लग चुका था। कॉलेज पर रोक लग चुकी थी और घर के बाहर निकलने से लेकर बालकनी में खड़े होने तक पर निगरानी थी। दोनों के बीच बात करने का कोई रास्ता नहीं बचा था।

लेकिन मोहित कहाँ मानने वाला था!

एक रात करीब **दो बजे**, जब पूरा मोहल्ला सो रहा था, मोहित नया मोबाइल और सिम लेकर चुपचाप ज़ाबिया के घर के पीछे वाले चैनल गेट तक पहुँचा। दिल की धड़कन इतनी तेज़ थी कि उसे डर लग रहा था—कहीं आवाज़ बाहर तक न चली जाए!

उसने फ़ोन दीवार की ओट में रखा और बिना कोई आवाज़ किए वापस निकल आया।

सुबह फ़ोन की स्क्रीन पर एक छोटी-सी **मिस्ड कॉल** चमकी।

बस... इतने से ही मोहित समझ गया—**ज़ाबिया ने फ़ोन ढूँढ़ लिया है।**

कई दिनों से बंद पड़ा रिश्ता फिर से एक छोटी-सी घंटी के साथ ज़िंदा हो गया।

अब दोनों की बातें पहले जैसी नहीं थीं। पहले सवाल होता था— "खाना खाया?"

अब सवाल था—

"आगे क्या?"

ज़ाबिया के घर में उसकी शादी की बातें शुरू हो चुकी थीं। दोनों जानते थे कि अब सिर्फ़ प्यार करना काफी नहीं है। अगर सच में साथ रहना है तो अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा।

दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई—**किसी दूसरे शहर में काम शुरू किया जाए, दो साल मेहनत करके कुछ बनाया जाए और फिर अपने-अपने परिवार के सामने सिर उठाकर शादी की बात रखी जाए।**

ज़ाबिया घर से निकल नहीं सकती थी, इसलिए इस योजना को जमीन पर उतारने की ज़िम्मेदारी मोहित ने अपने कंधों पर ली। कुछ महीनों तक पैसे जमा किए और काफ़ी रिसर्च की कि आखिर क्या काम किया जाए। फिर...

जून २०१७।

मोहित ने एक छोटे से रेस्टोरेंट का काम शुरू करने का फैसला किया। अपनी कुछ बचत लगाई, ज़ाबिया ने अपनी ईदी और बचाए हुए पैसे दिए और बाकी कुछ रकम दोस्तों से उधार ली। मोहित दूसरे शहर गया और काम में लग गया।

उधर ज़ाबिया अपने घर में ही थी—फोन पर उसकी हिम्मत बढ़ाती, हिसाब-किताब पर बात करती और हर मुश्किल में उसका हौसला बनाए रखती।

दोनों को लग रहा था कि शायद अब रास्ता बन जाएगा। लेकिन ज़िंदगी ने फिर वही पुराना खेल खेला। रेस्टोरेंट चल नहीं पाया। कुछ ही महीनों में कारोबार बंद करना पड़ा। मोहित वापस शहर लौट आया। जेब हल्की थी, मन उससे भी ज़्यादा भारी। एक रात वह चुपचाप बैठा यही सोच रहा था—

"आखिर करूँ तो करूँ क्या?"

तभी उसके दिमाग में एक विचार आया—

अपने ही शहर में पिज़्ज़ा स्टोर क्यों न खोला जाए?

शहर में उस समय ऐसा कोई खास पिज़्ज़ा स्टोर नहीं था। लोकेशन अच्छी मिल जाए तो काम चल सकता था। लेकिन समस्या सिर्फ़ पैसे की नहीं थी। अपने शहर में कारोबार करने का मतलब था—**ज़ाबिया के परिवार की नज़रों के सामने आना।** मोहित इसी उधेड़बुन में था कि उसका एक पुराना दोस्त आया। उसने मोहित का चेहरा देखा और बोला—

"चल, तुझे एक पंडित जी के पास लेकर चलता हूँ।"

मोहित हँस पड़ा।

"भाई, मेरे पास पहले ही इतनी समस्याएँ हैं, अब ग्रह-नक्षत्र भी देखवा लेता हूँ।"

दोस्त उसे जबरन साथ ले गया।

पंडित जी ने मोहित को देखा और बिना ज़्यादा सवाल किए एक पर्ची पर कुछ लिखने लगे। फिर उन्होंने उसके परिवार के बारे में ऐसी बातें बतानी शुरू कीं, जिन्हें सुनकर मोहित और उसका दोस्त एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। फिर पंडित जी ने अचानक पूछा—

"काम को लेकर परेशान है?" मोहित चुप रहा।

पंडित जी बोले— *"जो काम शुरू करने का तू सोच रहा है, वही कर। डर मत।"*

मोहित के होश उड़ गए। लेकिन असली झटका अभी बाकी था।

पंडित जी ने **होटल वाली घटना** के बारे में ऐसी बातें बताईं, जिनका ज़िक्र मोहित ने वहाँ किसी से नहीं किया था। मोहित बस उन्हें देखता रह गया। फिर पंडित जी ने एक और बात कही—

"और सुन... एक साल के अंदर तेरी शादी हो जाएगी।" और अपनी मम्मी से कह देना कि दहेज का लालच न करें।

मोहित और उसका दोस्त ज़ोर से हँस पड़े। मोहित ने मन ही मन सोचा—

"पंडित जी, शादी तो छोड़िए... अभी तो लड़की से फोन पर बात करने के लिए भी रात के दो बजे दीवार के पीछे मोबाइल रखना पड़ रहा है!"

उस वक्त दोनों ने इस बात को मज़ाक समझकर टाल दिया। लेकिन बाद में यही बात मोहित की ज़िंदगी की सबसे अजीब भविष्यवाणियों में से एक बनने वाली थी। पंडित जी से मिलने के बाद मोहित के अंदर एक अजीब-सा आत्मविश्वास आया।

"ठीक है... एक बार और कोशिश करते हैं।"

उसने पैसे जुटाए, कर्ज़ लिया और **नवंबर २०१७** में अपने ही शहर के मुख्य चौराहे पर एक पिज़्ज़ा स्टोर खोल दिया। मोहित की उम्र उस वक्त सिर्फ़ **२० साल** थी और ज़ाबिया **१९ साल** की।

ज़ाबिया अब भी घर में बंद थी। दोनों की दिनभर में मुश्किल से दो-तीन बार बात हो पाती थी, वो भी दस-दस मिनट के आसपास।

लेकिन उन छोटी-छोटी कॉल्स में भी एक ही बात होती—

"दुकान कैसी चल रही है?"

"आज कितने ऑर्डर आए?"

"थक गए?"

और ज़ाबिया का हमेशा वही जवाब—

****"थकना मत... हमने ये शुरू किया है, तो इसे चलाएँगे भी।"*** फिर आया दुकान का पहला दिन। मोहित को उम्मीद थी कि कुछ लोग आएँगे, दो-चार पिज़्ज़ा बिकेंगे और धीरे-धीरे पहचान बनेगी। लेकिन शाम होते-होते दुकान के बाहर **लंबी लाइन लग गई**। मोहित कुछ सेकंड तक बस लोगों को देखता रहा। फिर स्टाफ की तरफ़ मुड़कर बोला—

"भाई... सच में लोग पिज़्ज़ा खाने आए हैं या उद्घाटन देखने?"

लेकिन रात बढ़ती गई और ऑर्डर भी। दुकान रात के दो बजे तक चलती रही। मोहित पहली बार उस दिन समझा कि शायद उसकी मेहनत ने सही

दरवाज़ा खटखटाया है। दुकान बंद करके जब वह रात में अकेला बैठा, शरीर पूरी तरह टूट चुका था।

उसने ज़ाबिया को फोन लगाया। उधर से आवाज़ आई—

"कैसा रहा पहला दिन?"

मोहित कुछ सेकंड चुप रहा।

फिर उसकी आवाज़ भर्रा गई—

"ज़ाबिया... दुकान चल गई। बहुत चल गई।"

और वह रो पड़ा।

ये हार के आँसू नहीं थे।

ये उन सालों के आँसू थे, जब उसके पास पैसे नहीं थे, रास्ता नहीं था, सपना टूट गया था... लेकिन एक लड़की ने हर बार उसका हाथ पकड़कर कहा था—'मैं हूँ न।'

धीरे-धीरे पिज़्ज़ा स्टोर शहर में मशहूर होने लगा।

काम बढ़ा तो कमाई भी बढ़ने लगी। कुछ ही समय में मोहित की मासिक आमदनी करीब **3 से 4 लाख रुपये** तक पहुँच गई। जिस लड़के के पास कभी कोचिंग की फीस भरने के पैसे नहीं थे...जिसने अपनी पहली मोहब्बत को फटे जूते छिपाकर मिलने से शुरू किया था...जिसने बी.टेक का सपना टूटते देखा था...वही लड़का अब अपने दम पर एक सफल कारोबार खड़ा कर चुका था। और सबसे बड़ी बात—

अब पहली बार उसे लगा कि शायद वह ज़ाबिया के सामने खड़े होकर यह कह सकता है—

"अब मैं तुम्हें माँगने तुम्हारे घर आ सकता हूँ।" मोहित को लगा था कि मुश्किलों का सबसे बड़ा पहाड़ पीछे छूट गया है। उसे क्या पता था...

असली पहाड़ अब सामने खड़ा था।

अध्याय 15

कालकोठरी का जुल्म — “मैं तुम्हें रोज़ देखूँगी तो ज़िंदा रहूँगी...”

कहते हैं, जब ज़िंदगी अचानक कुछ ज़्यादा ही मेहरबान होने लगे, तो इंसान को खुश होने के साथ-साथ थोड़ा डरना भी चाहिए। क्योंकि कई बार तक्रदीर सबसे खूबसूरत खुशी के पीछे ही अपना सबसे भयानक इम्तिहान छिपाकर बैठी होती है।

मोहित और ज़ाबिया की ज़िंदगी में भी कुछ ऐसा ही होने वाला था।

नवंबर 2017 में शुरू हुआ पिज़्ज़ा स्टोर उम्मीद से कहीं ज़्यादा तेज़ी से चल निकला था। कारोबार दिन-दूना, रात-चौगुना बढ़ रहा था। जिस लड़के ने कभी अपनी पढ़ाई की फीस के लिए भी संघर्ष किया था, वही अब अपने दम पर लाखों रुपये कमा रहा था। उसे पहली बार लगने लगा था कि शायद मुफ़लिसी के वे काले दिन पीछे छूट चुके हैं। शायद अब वह इतना काबिल बन चुका है कि एक दिन ज़ाबिया का हाथ उसके घर वालों के सामने पूरे हक़ से माँग सके।

मगर मोहित यह नहीं जानता था कि उसकी कामयाबी जितनी तेज़ी से बढ़ रही थी, ज़ाबिया की मुश्किलें भी उतनी ही ख़ामोशी से गहरी होती जा रही थीं।

एक बदकिस्मत दिन ज़ाबिया का फ़ोन फिर उसके घर वालों के हाथ लग गया।

फ़ोन उनके हाथ में जाना महज़ एक मोबाइल का पकड़ा जाना नहीं था। वह उन दोनों के बीच बची हुई आखिरी पतली-सी डोर का टूट जाना था।

मोहित के लिए ज़ाबिया से दिन में सिर्फ 5 मिनट बात करना भी किसी नेमत से कम नहीं था। पूरा दिन चाहे रेस्टोरेंट की भागदौड़ में निकल जाए, चाहे शरीर थककर चूर हो जाए, लेकिन जब दूसरी तरफ़ से ज़ाबिया की आवाज़ आती—

"हेलो मोहित..."

तो उसके चेहरे पर अपने आप मुस्कान आ जाती। वे 5 मिनट उसके लिए पूरे दिन की थकान का इलाज थे।

अब वह आवाज़ भी उससे छीन ली गई। फ़ोन ज़ब्त होने से पहले ज़ाबिया ने उसे एक आखिरी हिदायत दी थी—

"मोहित, अब भूलकर भी मेरे घर के आसपास मत आना। चाचा ने पूरे घर के बाहर हाई-टेक CCTV कैमरे लगवा दिए हैं।"

मोहित समझ गया कि अब वह चाहकर भी ज़ाबिया की एक झलक पाने के लिए उसके घर के आसपास नहीं जा सकता था। वो सीक्रेट जगह भी कैमरे लगने के बाद ख़तम हो चुकी थी तो अब मोहित उसे फ़ोन भी नहीं दे सकता था।

काफी समय गुजरने के बाद उसने ज़ाबिया की सहेलियों से मित्रतें कीं।

"किसी से कहा कि बस एक बार जाकर उसकी ख़बर ले आओ।"

"किसी से कहा कि उसे बता दो मैं ठीक हूँ।"

मगर ज़ाबिया के परिवार के रसूख और ख़ौफ़ के आगे कोई आगे बढ़ने को तैयार नहीं था।

धीरे-धीरे दिन हफ़्तों में बदलने लगे।

मोहित ने अपनी बेचैनी से लड़ने का एक ही रास्ता चुना—ख़ुद को काम में झोंक देना। सुबह से देर रात तक पिज़्ज़ा स्टोर। ग्राहकों की भीड़, ऑर्डर, काउंटर, किचन, स्टाफ़ और हिसाब-किताब। जब दुकान का काम ख़त्म होता, तो बचा हुआ वक़्त वह जिम में बिताने लगा। शायद वह अपने शरीर को थकाकर अपने दिल की बेचैनी को हराना चाहता था।

महीने बीतते गए और उसके शरीर में भी जबरदस्त बदलाव आने लगा। दुबला-पतला मोहित अब एक मस्कुलर, रोबीला और गबरू जवान बन चुका था। इसी दौरान दोस्तों ने उसे शहर की एक बड़ी मॉडलिंग प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए उकसाया। मोहित ने भी सोचा—चलो, कोशिश करके देखते हैं। उसे जीत की कोई उम्मीद नहीं थी। लेकिन मंच पर जब विजेता के नाम की घोषणा हुई, तो कुछ पल के लिए खुद मोहित को यक़ीन नहीं हुआ।

विजेता—मोहित।

अगले ही दिन शहर के मुख्य अख़बार के फ्रंट पेज पर उसकी बड़ी-सी तस्वीर छपी थी।

दोस्त बधाइयाँ दे रहे थे। लोग उसकी तारीफ़ कर रहे थे। रेस्टोरेंट में काम करने वाले लड़के भी गर्व से अख़बार उठाकर उसकी तस्वीर दूसरों को दिखा रहे थे। लेकिन जिस लड़की के लिए मोहित की हर कामयाबी मायने रखती थी, वह वहाँ नहीं थी। करीब दो महीने से ज़ाबिया से उसका कोई संपर्क नहीं हुआ था। उस रात मोहित अपने कमरे में अकेला बैठा था। सामने वही अख़बार रखा था। उसने अख़बार उठाया, अपनी तस्वीर को देखा और अचानक उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

जिस जीत पर आज उसे दुनिया के सामने मुस्कुराना चाहिए था, उसी जीत को देखकर वह बच्चे की तरह रो रहा था। उसके दिल से बस एक आवाज़ निकली—

"काली घटाओं के बीच चमक तो मिली... पर काश, आज मेरी ज़ाबिया मेरे साथ होती!"

उसे यक़ीन था कि किसी न किसी तरह ज़ाबिया ने उसकी तस्वीर ज़रूर देखी होगी। शायद उसने भी उसे देखकर मुस्कुराया होगा। शायद उसके दिल ने भी कहा होगा—**"मेरा मोहित जीत गया..."**

मगर उस खुशी को बाँटने के लिए दोनों में से किसी के पास दूसरे तक पहुँचने का रास्ता नहीं था। इसी ख़ामोशी के बीच एक दोपहर अचानक

मोहित के फ़ोन पर एक अनजान नंबर से मैसेज आया। उसने स्क्रीन खोली। पहली ही लाइन पढ़ते ही उसकी साँस अटक गई।

“हाय मोहित, मैं ज़ाबिया...”

उसकी उँगलियाँ काँपने लगीं।

वह आगे पढ़ता गया—

“मैंने अखबार में तुम्हारी फोटो देखी। मुझे तुम पर बहुत-बहुत गर्व है। लेकिन मैं यहाँ बहुत बड़ी तकलीफ़ में हूँ मोहित...”

मोहित की आँखें स्क्रीन पर जमी थीं।

“इन लोगों ने मुझे हमारे दूसरे वाले घर के एक छोटे से बेडरूम में कैद कर दिया है। कमरे में एक बाथरूम अटैच्ड है। मुझे खाना भी उसी कमरे में अंदर दे दिया जाता है और बाहर से बड़ा-सा ताला लगा दिया जाता है।”

मोहित का चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

आगे लिखा था—

“कमरे में सिर्फ़ एक छोटी-सी लोहे की सीलन भरी खिड़की है, जिससे मैं बाहर की दुनिया देख सकती हूँ। मैं तुम्हारी आवाज़ सुनने को तरस गई हूँ मोहित...”

फिर एक ऐसी गुज़ारिश थी जिसने मोहित के दिल को चीर दिया—

“प्लीज़, रोज़ शाम को ठीक 4 बजे तुम उस खिड़की के नीचे वाले रास्ते से मोटर साइकिल से निकला करो। मैं दो महीने से इस कालकोठरी में बंद हूँ। तुम्हें देखा तक नहीं है। अगर रोज़ तुम्हें एक नज़र देख लिया करूँगी तो ज़िंदा रह लूँगी... नहीं तो पता नहीं कब इसी कमरे में मेरी जान निकल जाए...”

मोहित कुछ देर तक स्क्रीन को देखता रहा।

जिस ज़ाबिया को उसने हमेशा खुली हवा में, हँसते हुए और अपने सपनों के साथ देखा था, आज वह अपने ही घर के भीतर एक छोटे-से कमरे में बंद

थी। उसके पास दुनिया से बात करने का कोई रास्ता नहीं था। उसके पास बस एक छोटी-सी खिड़की थी। और अब उस खिड़की के बाहर मोहित उसका इंतज़ार बनने वाला था। लेकिन मैसेज में अभी एक और ख़बर थी।

"ये लोग मेरा पासपोर्ट बनवा रहे हैं। मुझे ज़बरदस्ती कनाडा भेजने की तैयारी चल रही है। इस नंबर पर कभी कॉल मत करना। मैं रिश्तेदार के यहाँ आई हूँ और कज़िन का फ़ोन चुपके से लेकर तुम्हें मैसेज कर रही हूँ। बाय... आई लव यू।"

मोहित ने जैसे ही यह पढ़ा, उसके भीतर एक ही फैसला हुआ—

अगर ज़ाबिया कनाडा जाएगी, तो वह भी कनाडा जाएगा।

उसके लिए अब यह कोई विदेश जाने का सपना नहीं था। यह अपनी मोहब्बत तक पहुँचने की आखिरी कोशिश थी। मोहित ने तुरंत पासपोर्ट के लिए आवेदन कर दिया। उसका अपॉइंटमेंट अगले दिन था। लेकिन ठीक उससे एक रात पहले रेस्टॉरेंट से वापस आते वक़्त, लगभग 11 बजे, उसकी स्कूटी का भयानक एक्सीडेंट हो गया।

मोहित सड़क पर दूर तक घिसटता चला गया। उसके पैर की हड्डी में गंभीर फ्रैक्चर आया।

डॉक्टर ने साफ़ कह दिया—*"कम से कम कुछ हफ़्ते हिलना-डुलना मत। आराम करो।"* लेकिन मोहित के लिए आराम का मतलब था—ज़ाबिया से और दूर चले जाना। अगली सुबह उसे हर हाल में पासपोर्ट ऑफिस पहुँचना था। उसने दर्द की गोलियाँ निगलीं। अपने दो दोस्तों को बुलाया। दोस्तों ने जैसे-तैसे उसे उठाया और कार में बैठाया।

पैर पर पट्टियाँ थीं। शरीर दर्द से टूट रहा था। लेकिन हाथ में पासपोर्ट के कागज़ों की फ़ाइल थी। वह उसी हालत में पासपोर्ट ऑफिस पहुँचा। वहाँ बैठे अधिकारी ने उसके पैर की हालत देखी तो हैरान रह गया।

"भाई... इतनी गंभीर चोट लगी है, फिर भी आज ही आना इतना ज़रूरी था क्या?"

मोहित बस हल्का-सा मुस्कराया। वह क्या बताता? कि यह पासपोर्ट घूमने के लिए नहीं बन रहा। यह उस लड़की तक पहुँचने के लिए बन रहा है जो एक बंद कमरे में उसकी एक झलक के इंतज़ार में जी रही है। लेकिन किस्मत शायद अभी भी उसके खिलाफ़ थी। मोहित ने कनाडा जाने की तैयारी शुरू कर दी थी, मगर न जाने कैसे ज़ाबिया के घर वालों को उनके इस प्लान की भनक लग गई।

उन्होंने कनाडा भेजने का इरादा रद्द कर दिया। और ज़ाबिया को वापस उसी अंधेरी, सीलन भरी कालकोठरी में ला पटका। मोहित का एक और रास्ता बंद हो गया। अब मोहित की ज़िंदगी में एक नया वक़्त तय हो चुका था।

शाम के ठीक 4 बजे।

हर दिन। चाहे रेस्टोरेंट में कितना भी काम हो। चाहे पैर में कितना भी दर्द हो। चाहे शरीर कितना भी थका हुआ क्यों न हो। 4 बजते ही मोहित अपनी स्कूटी लेकर उस रास्ते पर निकलता। ऊपर वही छोटी-सी लोहे की खिड़की होती। और उसके पीछे ज़ाबिया। मोहित को देखते ही उसकी आँखों में जैसे जान लौट आती। वह सलाखों को पकड़कर खड़ी हो जाती।

मोहित नीचे से उसे देखता रहता।

न कोई बातचीत। न कोई मुलाक़ात। न कोई हाथ छू सकता था। बस आँखें थीं... और उन आँखों में पूरी कहानी। कभी ज़ाबिया रोते-रोते उसे देखती रहती। कभी मोहित अपनी आँखों से आँसू पोंछकर उसे मुस्कुराने का इशारा करता, जैसे कह रहा हो—

“मैं हूँ... तुम अकेली नहीं हो।”

और शायद यही उन दोनों के लिए जीने की वजह बन गया था। जिस लड़की ने कभी मोहित की भूख की चिंता की थी, आज उसे खुद अपने खाने और अपनी आज़ादी के लिए दूसरों पर निर्भर होना पड़ रहा था। जिस लड़के ने कभी ज़ाबिया के लिए नए कपड़े खरीदने के उसके प्यार को संकोच से स्वीकार किया था, आज वही लाखों रुपये कमाकर भी उसे एक आज़ाद ज़िंदगी नहीं दे पा रहा था।

यह कैसी विडंबना थी?

पैसा था।

कामयाबी थी।

नाम था।

मगर मोहब्बत के सामने मोहित आज भी उतना ही बेबस था, जितना कभी अपनी पहली कमाई के दिनों में था। ज़ाबिया अपनी उँगलियों से लोहे की सलाखों को पकड़े रहती और मोहित नीचे सड़क पर खड़ा होकर उसे देखता रहता।

कभी-कभी उनकी आँखें मिलतीं और दोनों की आँखों से आँसू निकल पड़ते। वे आँसू ही उनकी बातचीत थे। वे आँसू ही उनका मिलना था। और वे आँसू ही उनकी मोहब्बत का सबूत थे। इश्क़ का इससे बड़ा इम्तिहान क्या होगा कि महबूब आँखों के सामने हो, मगर उसके पास जाने की इजाज़त न हो?

कुछ मिनट बाद मोहित को वापस जाना पड़ता। ज़ाबिया फिर उसी कमरे में रह जाती। लोहे की खिड़की बंद। बड़ा-सा ताला बाहर। और मोहित के सामने फिर अगली शाम के 4 बजे तक का इंतज़ार। चारों तरफ़ से ज़िंदगी चल रही थी। लोग हँस रहे थे। दुकानें खुल रही थीं। शहर में गाड़ियाँ दौड़ रही थीं।

और उस शहर के एक छोटे-से रास्ते पर हर शाम 4 बजे एक लड़का अपनी मोहब्बत को सिर्फ़ एक झलक देखने आता था। वह झलक कुछ मिनट की होती थी... लेकिन उन्हीं कुछ मिनटों के सहारे दोनों अगले पूरे दिन का दर्द सह लेते थे। मोहित के लिए अब वह लोहे की खिड़की सिर्फ़ एक खिड़की नहीं रह गई थी।

वही उसकी ज़ाबिया तक पहुँचने वाली आखिरी दुनिया थी। और ज़ाबिया के लिए नीचे सड़क पर खड़ा मोहित सिर्फ़ उसका प्रेमी नहीं था।

वह इस बात का सबूत था कि बाहर की दुनिया में अभी भी कोई ऐसा इंसान मौजूद है, जो हर ख़तरे के बावजूद उसका इंतज़ार कर रहा है। चार महीने तक यही सिलसिला चलता रहा।

मगर मोहित नहीं जानता था कि इन चार महीनों की यह खामोश मोहब्बत जल्द ही एक ऐसे मोड़ पर पहुँचने वाली है, जहाँ उसे सिर्फ़ ज़ाबिया की कैद से नहीं... बल्कि अपने ही बनाए हुए साम्राज्य को बचाने की जंग भी लड़नी होगी।

अध्याय 16

वाशरूम का वो सीक्रेट रोना और पीठ में ₹10,00,000 का खंजर

लगभग चार लंबे महीने बीत चुके थे।

चार महीने... जो मोहित के लिए चार सदियों से कम नहीं थे।

हर सुबह आँख खुलते ही उसके भीतर एक उम्मीद जन्म लेती—**शायद आज ज़ाबिया की कोई खबर आएगी।** और हर रात जब वह उम्मीद टूटती, तो वही खालीपन उसके सीने में और गहरा उतर जाता।

पिज़्ज़ा स्टोर अब भी चल रहा था। बाहर से देखने वाला कोई भी इंसान कह सकता था कि मोहित की ज़िंदगी शानदार चल रही है। दुकान ग्राहकों से भरी रहती, पैसे आ रहे थे, कारोबार अपनी जगह था।

लेकिन मोहित के भीतर?

वहाँ एक ऐसा सन्नाटा था जिसे रेस्टोरेंट का शोर भी नहीं तोड़ सकता था। वह मशीन की तरह काम करता था। ऑर्डर लेता, स्टाफ़ देखता, हिसाब करता, ग्राहकों से मुस्कुराकर बात करता... लेकिन उसका दिमाग़ हर वक्त उसी छोटी-सी लोहे की खिड़की के पीछे अटका रहता था।

ज़ाबिया कैसी होगी?

क्या उसने खाना खाया होगा?

आज 4 बजे मुझे देखकर वह मुस्कुराएगी या रोएगी?

उसकी पूरी ज़िंदगी जैसे एक ही लड़की के इर्द-गिर्द घूमकर रह गई थी। फिर एक दिन... तक्रदीर ने अचानक ऐसा दृश्य उसके सामने ला खड़ा किया, जिसकी उसने चार महीने से सिर्फ़ कल्पना की थी।

जब अचानक सामने खड़ी थी ज़ाबिया

एक दोपहर मोहित हमेशा की तरह रेस्टोरेंट के काउंटर पर खड़ा था। चेहरे पर थकान थी और मन कहीं और भटक रहा था। तभी रेस्टोरेंट का शीशे वाला मुख्य दरवाज़ा खुला। मोहित ने अनमने ढंग से सामने देखा...और अगले ही पल उसकी साँस जैसे सीने में अटक गई।

सामने ज़ाबिया खड़ी थी।

चार महीने।

पूरे चार महीने बाद वह चेहरा उसकी आँखों के सामने था। ज़ाबिया के साथ उसके कुछ दूर के रिश्तेदार भी थे। शायद उन्हें अंदाज़ा भी नहीं था कि जिस जगह वे खाना खाने आए हैं, वहाँ खड़ा लड़का ज़ाबिया की पूरी दुनिया है।

मोहित कुछ पल तक बस उसे देखता रहा। उसे लगा जैसे वह कोई सपना देख रहा है। फिर काउंटर के लड़कों में से किसी ने धीरे से कहा—

"अरे सर... भाभी आ गई!"

उस एक वाक्य ने जैसे मोहित के भीतर तूफ़ान खड़ा कर दिया। चार महीने से जिसके लिए उसकी आँखें तरस रही थीं, वह आज उसके सामने थी। उसके मन में एक ही खयाल कौंधा—

"मेरे दिल में आई ऐश्वर्या आई..."

खुशी इतनी थी कि उसका मन हुआ उसी पल सबके सामने दौड़कर ज़ाबिया को गले लगा ले। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकता था। ज़ाबिया के साथ उसके रिश्तेदार थे। ज़रा-सी गलती दोनों के लिए मुसीबत बन सकती थी।

मोहित ने अपनी आँखों में उमड़ आए आँसुओं को रोका, चेहरे पर सामान्य होने का अभिनय किया और ऐसे उनकी टेबल तक गया जैसे वह कोई आम ग्राहक हों। दिल भीतर से पागलों की तरह धड़क रहा था। मगर आवाज़ में उसने वही पेशेवर सलीका रखा—

"सर, मैडम... क्या ऑर्डर करेंगे?"

ऑर्डर लेते ही मोहित किसी तरह खुद को संभालता हुआ किचन में चला गया। जैसे ही वह किचन के अंदर पहुँचा और उसे यक़ीन हुआ कि कोई उसे देख नहीं रहा... उसकी आँखों का बाँध टूट गया। चार महीने की तड़प, इंतज़ार, डर और बेबसी एक साथ आँसुओं में बहने लगी। वह रो रहा था। लेकिन वे आँसू सिर्फ़ दर्द के नहीं थे। वे इस बात के भी थे कि **ज़ाबिया ज़िंदा थी... उसके सामने थी... और वह उसे देख पा रहा था।**

मोहित ने काँपते हाथों से उसका पसंदीदा पिज़्ज़ा तैयार करना शुरू किया। आटा, सॉस, चीज़ और मसाले अपनी जगह थे। लेकिन उस पिज़्ज़ा में मोहित के लिए चार महीने की मोहब्बत भी थी। वह पिज़्ज़ा उसके लिए कोई ऑर्डर नहीं था। वह जैसे अपनी मोहब्बत को अपने हाथों से फिर से ज़िंदा कर रहा था। पिज़्ज़ा तैयार हुआ।

मोहित ने उसे टेबल तक पहुँचाया। ज़ाबिया ने उसकी तरफ़ देखा। दोनों की आँखें मिलीं। बस एक पल। लेकिन उस एक पल में चार महीने की पूरी कहानी समा गई। न कोई सवाल। न कोई जवाब।

सिर्फ़ आँखों में एक-दूसरे को देखकर यह यक़ीन—

“तुम ठीक हो... मैं भी ठीक हूँ।”

कुछ देर बाद ज़ाबिया अपनी टेबल से उठी और काउंटर के पास आकर बिल्कुल सामान्य अंदाज़ में बोली—

"Excuse me sir, क्या यहाँ वाशरूम है?"

मोहित समझ गया।

उसे पता था कि रेस्टोरेंट के वाशरूम में जाने के दो रास्ते थे—एक अंदर से और दूसरा बाहर की तरफ़ से घूमकर। ज़ाबिया अंदर वाले रास्ते से वाशरूम की ओर बढ़ी। मोहित ने एक पल भी बर्बाद नहीं किया। वह बाहर से घूमकर पिछले दरवाज़े के रास्ते वाशरूम में पहुँच गया। कुछ ही सेकंड बाद ज़ाबिया भी अंदर आ गई। दरवाज़ा बंद हुआ। और फिर...

चार महीने से जिस दूरी ने दोनों को अंदर से तोड़ रखा था, वह दूरी कुछ पलों के लिए खत्म हो गई। दोनों एक-दूसरे से लिपट गए। और फूट-फूटकर रोने लगे। ज़ाबिया की सिसकियाँ निकल रही थीं।

मोहित उसे कसकर पकड़े हुए था, जैसे डर रहा हो कि अगर उसने उसे छोड़ा तो वह फिर चार महीने के लिए उससे दूर हो जाएगी। ज़ाबिया ने रोते हुए बताया—

"बाहर से कुछ रिश्तेदार आए हुए थे। घर वालों को लगा कि उनके सामने कोई शक न हो, इसलिए मुझे थोड़ी देर के लिए बाहर निकाला और मार्केट ले आए। मैंने ही ज़िद करके उन्हें यहाँ भेजा कि इस रेस्टोरेंट का पिज़्ज़ा बहुत मशहूर है।"

मोहित के पास समय बहुत कम था। उसे पता था कि यह मुलाक़ात जितनी ख़ूबसूरत है, उतनी ही ख़तरनाक भी। उसने तुरंत अपनी जेब से एक चालू मोबाइल निकाला और ज़ाबिया के हाथ में रख दिया। दोनों ने एक-दूसरे को आखिरी बार देखा। फिर अलग-अलग रास्तों से वाशरूम से बाहर निकल गए।

कुछ ही मिनटों में ज़ाबिया फिर अपने रिश्तेदारों के साथ बैठी थी और मोहित फिर काउंटर पर खड़ा एक आम रेस्टोरेंट मालिक बना हुआ था। लेकिन दोनों के दिल में चार महीने बाद पहली बार थोड़ी-सी रौशनी लौटी थी। उन्हें लगा था कि शायद अब बात हो सकेगी। शायद फिर से वही पुराना रिश्ता लौट सकेगा। लेकिन उन्हें क्या पता था कि यह छोटी-सी मुलाक़ात एक और भयानक तूफ़ान को जन्म दे चुकी है।

अगले ही दिन ज़ाबिया के चंगू-मंगू चाचा को किसी तरह पता चल गया कि वह जिस रेस्टोरेंट में गई थी, वह कोई और जगह नहीं बल्कि **मोहित का पिज़्ज़ा स्टोर** था।

बस इतना शक ही काफ़ी था। घर पहुँचते ही ज़ाबिया को कमरे में बंद कर दिया गया। उसकी तलाशी ली गई। और वह नया मोबाइल भी उनके हाथ लग गया। फिर वही हुआ, जिससे मोहित सबसे ज़्यादा डरता था। ज़ाबिया को बेरहमी से पीटा गया।

लातें। घूँसे। चमड़े के पट्टे।

हर बार जब उसका फ़ोन पकड़ा जाता, उसकी सज़ा उसके शरीर को भुगतनी पड़ती।

और मोहित?

वह कुछ नहीं कर सकता था। उसके पास सिर्फ़ एक फ़ोन था। उस फ़ोन के दूसरी तरफ़ एक ऐसी लड़की थी जो सिर्फ़ उसकी आवाज़ सुनने के लिए अपने शरीर पर जुल्म सह रही थी। मोहित के भीतर अपराधबोध बढ़ता गया। उसके मन में एक ही बात हथौड़े की तरह बजती रहती—

"मेरी एक आवाज़ सुनने की ज़िद में वह हर बार अपने बदन पर ज़ख़्म क्यों सह रही है?" इस बार मोहित पूरी तरह टूट गया।

वह ऐसे अंधेरे में गिरा, जहाँ उसे किसी चीज़ का मतलब समझ नहीं आता था। उसने अपने आपको शराब में डुबोना शुरू कर दिया। रात होते ही वह नशे में डूब जाता। कभी अकेला बैठा रहता। कभी ज़ाबिया की याद में रोता। कभी खुद को कोसता। जिस पिज़्ज़ा स्टोर को उसने दिन-रात मेहनत करके खड़ा किया था, अब उसी पर उसका ध्यान नहीं था। कारोबार धीरे-धीरे प्रभावित होने लगा।

ग्राहक वही थे। स्टाफ़ वही था। दुकान वही थी।

लेकिन मालिक बदल चुका था।

मोहित का शरीर रेस्टोरेंट में होता था, उसकी आँखें कहीं और। उसकी रूह उसी बंद कमरे में पड़ी ज़ाबिया के साथ तड़पती थी। आखिरकार उसे लगा कि अगर उसने बिज़नेस को बचाना है, तो उसे किसी भरोसेमंद इंसान का सहारा लेना होगा। और यहीं से उसकी ज़िंदगी में आया—**विपिन अग्रवाल।**

विपिन मोहित का जिगरी दोस्त था। मोहित उस पर आँख बंद करके भरोसा करता था। दोनों के बीच तय हुआ कि विपिन बिज़नेस में ₹10,00,000 लगाएगा और बदले में उसे रेस्टोरेंट का 25% शेयर मिलेगा। विपिन ने बैंक का चेक दिया। एक Chartered Accountant के ज़रिए बाकायदा कानूनी एग्रीमेंट तैयार कराया गया।

कागज़ तैयार थे। शर्तें लिखी थीं। हिस्सेदारी तय थी। और मोहित?

उस वक्त उसका दिमाग बिज़नेस में था ही नहीं। उसका पूरा वजूद ज़ाबिया की चिंता में डूबा हुआ था।

उसे अपने दोस्त पर इतना भरोसा था कि उसने एग्रीमेंट की एक-एक लाइन पढ़ने की भी ज़हमत नहीं उठाई।

उसने बस कागज़ों पर दस्तखत कर दिए। उसे क्या पता था कि जिस कागज़ पर वह अपने दोस्त पर भरोसे की मुहर लगा रहा है... उसी कागज़ में उसके खिलाफ़ सबसे बड़ा खेल छिपा हुआ है।

पार्टनरशिप शुरू हुई।

और कुछ ही समय बाद रेस्टोरेंट में अजीब-अजीब गड़बड़ियाँ दिखाई देने लगीं। मोहित के पुराने और वफ़ादार कर्मचारियों ने उसे अकेले में समझाना शुरू किया—

"सर, विपिन सर बहुत धोखेबाज़ी कर रहे हैं। कई कस्टमर्स से कैश लेते हैं और पैसे गल्ले में डालने के बजाय अपनी जेब में रख लेते हैं। हमें भी चुप रहने के लिए उसमें से 50-50 रुपये दे देते हैं।"

मोहित ने पहले यक़ीन नहीं किया। फिर उसने विपिन को अकेले में समझाया।

एक बार। फिर दूसरी बार।

लेकिन विपिन हर बार अपनी वही शातिर मुस्कान चेहरे पर लाता और बात को हँसी में उड़ा देता। मोहित उस वक्त अपनी मोहब्बत के दर्द में इतना डूबा हुआ था कि वह इस धोखे की गहराई समझ ही नहीं पा रहा था। उसे लग रहा था कि समस्या सिर्फ़ स्टाफ़ की चोरी है। लेकिन असली खेल उससे कहीं बड़ा था। वह धीरे-धीरे उस बिज़नेस की जड़ें अपने हाथ में लेने की तैयारी कर रहा था।

मोहित की शराब।

उसका डिप्रेशन।

ज़ाबिया का ग़म।

बिज़नेस से उसका हटता ध्यान।

और वह एग्रीमेंट, जिस पर मोहित ने आँख बंद करके दस्तख़त कर दिए थे। इन सबको मिलाकर विपिन ने ऐसा जाल तैयार कर लिया था, जिसकी भनक मोहित को अभी पूरी तरह नहीं थी। एक तरफ़ ज़ाबिया अपने ही घर की कालकोठरी में जुल्म सह रही थी। दूसरी तरफ़ मोहित अपने दर्द में ख़ुद को शराब में डुबो रहा था।

और इसी बीच जिस दोस्त को उसने अपना सहारा समझकर बिज़नेस में जगह दी थी, वही उसकी पीठ के पीछे उसके साम्राज्य पर कब्ज़ा करने की तैयारी कर रहा था। मोहित को अभी सिर्फ़ इतना मालूम था कि उसका दोस्त गड़बड़ कर रहा है। उसे यह नहीं मालूम था कि **₹10,00,000 का वह सौदा जल्द ही उसकी ज़िंदगी के सबसे बड़े धोखे में बदलने वाला था।** और अब उसकी लड़ाई सिर्फ़ ज़ाबिया को पाने की नहीं थी। **उसे अपनी मोहब्बत भी बचानी थी... और अपनी मेहनत से खड़ा किया हुआ साम्राज्य भी।**

अध्याय 17

धमकियों का जाल, अपमान और सात महीने बाद मिली आवाज़

ज़ाबिया से आखिरी बार बात हुए पूरे 6 लंबे महीने बीत चुके थे मार्च 2018 का समय था।

ये 6 महीने सिर्फ़ कैलेंडर के पन्ने नहीं थे; मोहित के लिए ये ऐसे दिन थे, जिनमें हर सुबह एक उम्मीद लेकर आती और हर रात उसी उम्मीद को तोड़कर चली जाती। न कोई संदेश, न कोई खबर, न यह यक़ीन कि ज़ाबिया ठीक भी है या नहीं—बस एक बेचैन सन्नाटा और हर पल किसी अनहोनी का डर।

एक रात रेस्टोरेंट का काम ख़त्म करने के बाद मोहित और उसका पार्टनर विपिन शटर गिरा ही रहे थे कि अचानक विपिन के फोन की घंटी बजी। स्क्रीन पर एक अनजान नंबर था। विपिन ने बिना ज़्यादा सोचे कॉल उठाई और फोन स्पीकर पर डाल दिया।

उधर से एक कड़क और सपाट आवाज़ आई, “ज़रा मोहित से मेरी बात कराओ।”

मोहित ने फोन हाथ में लिया। उसे अंदाज़ा तक नहीं था कि अगले कुछ सेकंड में उसकी ज़िंदगी फिर एक नए डर के सामने खड़ी होने वाली है।

उधर से आवाज़ अचानक गरज उठी, “मैं ज़ाबिया का भाई बोल रहा हूँ! जो कुछ भी है, यहीं ख़त्म कर दे। वरना बीच चौराहे पर तुझे गोलियों से भून दूँगा!”

कॉल कट गई।

बस एक छोटी-सी आवाज़—*क्लिक*—और मोहित के भीतर जैसे पूरा तूफ़ान उठ खड़ा हुआ।

जिस लड़की की खैरियत के लिए वह 6 महीने से तड़प रहा था, अब उसी के घर से उसके लिए मौत की धमकी आ रही थी। उस रात डर, गुस्सा, बेबसी और ज़ाबिया की याद सब एक साथ उसके सीने पर टूट पड़े। दोनों काउंटर पर बैठे और शराब के सहारे अपने भीतर के उस तूफ़ान को दबाने की कोशिश करने लगे, लेकिन कुछ दर्द ऐसे होते हैं जिन्हें नशा भी छू नहीं पाता।

अगले दिन मोहित की बेचैनी और बढ़ गई। उसे अब किसी भी कीमत पर ज़ाबिया की ख़बर चाहिए थी। उसने उसकी एक वफ़ादार सहेली से संपर्क किया। अपनी इज़ाज़त और झिझक सब पीछे छोड़कर उसके सामने हाथ जोड़ दिए, पैर तक पकड़ लिए।

“बस एक बार उसे मेरी ख़बर पहुँचा दे... मुझे नहीं पता वो किस हाल में है।”

मोहित ने एक गुप्त पैकेट तैयार किया। उसमें एक नया चालू मोबाइल फोन था और साथ में नींद की कुछ गोलियाँ, जो उसने विपिन के ज़रिए मँगवाई थीं। उसका मक़सद सिर्फ़ इतना था कि किसी तरह यह पैकेट ज़ाबिया तक पहुँच जाए।

सहेली कपड़े लेने के बहाने ज़ाबिया के घर पहुँची। संयोग से उस दिन ज़ाबिया घर में ही थी, लेकिन उसकी अम्मी भी उसी कमरे में बैठी थीं। मुलाक़ात के दौरान ज़ाबिया और उसकी सहेली एक-दूसरे से ठीक से बात तक नहीं कर पा रही थीं। दोनों की नज़रें ही एक-दूसरे तक संदेश पहुँचा रही थीं।

जब सहेली जाने लगी, तब ज़ाबिया ने आँखों ही आँखों में इशारा किया कि पैकेट सोफ़े के पीछे डाल देना। लेकिन घबराहट में सहेली वह इशारा समझ नहीं पाई। बाहर निकलते समय उसने पैकेट पैर से कमरे के अंदर की तरफ़ सरका दिया। और फिर किस्मत ने वही किया, जिसका डर था। पैकेट जाकर सीधे हॉल में दाखिल हो रहे ज़ाबिया के पापा के जूतों से टकरा गया। एक पल में सब कुछ सामने आ गया। पैकेट, टेप और उसके अंदर रखे फोन की

खनक ने घर के माहौल को बदल दिया। सहेली डर के मारे वहाँ से निकल गई और काँपती हुई हालत में मोहित को फोन करके पूरी बात बता दी।

मोहित समझ गया कि अब वहाँ रुकना ख़तरे से खाली नहीं है। वह तुरंत शहर छोड़कर निकल गया। लेकिन इस बार बात सिर्फ़ मोहित और ज़ाबिया तक सीमित नहीं रही। ज़ाबिया के पापा सीधे उस स्कूल पहुँच गए, जहाँ मोहित के पापा पढ़ाते थे। वे दोनों एक-दूसरे को पहले से जानते थे। मगर उस दिन पहचान और लिहाज़ सब पीछे छूट गया। मोहित के पापा को पूरे स्कूल, उनके सहकर्मियों और छात्रों के सामने खरी-खोटी सुनाई गई।

“अपने आवारा लड़के को संभाल लो, वरना हम सीधे पुलिस केस करने जा रहे हैं!”

मोहित के पापा ने पूरी ज़िंदगी मेहनत से अपनी इज़्ज़त बनाई थी। बच्चों को पढ़ाया था, लोगों के सामने सिर उठाकर जिए थे। लेकिन उस दिन अपने बेटे की वजह से उन्हें दूसरों के सामने नीची नज़र करनी पड़ी। शाम को जब पापा का फोन मोहित के पास आया, तो उनकी आवाज़ में गुस्से से ज़्यादा टूटन थी। उस आवाज़ ने मोहित को पहली बार भीतर तक हिला दिया।

उसे महसूस हुआ कि यह लड़ाई अब सिर्फ़ उसकी और ज़ाबिया की नहीं रही थी। उसकी वजह से उसके परिवार की इज़्ज़त भी इस आग में झुलस रही थी।

उधर पुलिस भी मोहित की तलाश में उसके रेस्टोरेंट पहुँच गई। लेकिन मोहित पहले ही कानपुर निकल चुका था। रेस्टोरेंट के बाहर पुलिस की गाड़ियाँ दिखाई देने लगीं और आसपास कुछ संदिग्ध लोग भी घूमते रहते।

अब हर फोन की घंटी डराने लगी थी।

इसी बीच उस अनजान आदमी का फिर फोन आया—वही आदमी जिसने पहले विपिन के फोन पर कॉल करके खुद को ज़ाबिया का भाई बताया था। इस बार उसने सीधे मोहित के नंबर पर फोन किया।

“मैं फलाना बदमाश बोल रहा हूँ। मुझे तेरे और ज़ाबिया के सारे काले कारनामों का पता है। अगर अपनी और अपने परिवार की ख़ैर चाहता है, तो

चुपचाप 10 लाख रुपये का इंतज़ाम कर। वरना सारे सबूत ज़ाबिया के घर वालों को सौंप दूँगा।”

मोहित के भीतर महीनों से जमा गुस्सा फट पड़ा।

“अब बताने को बचा ही क्या है बे!”

और उसने फोन काट दिया। लेकिन फोन काट देने से मुसीबत कहाँ कटने वाली थी? कुछ देर बाद पापा का फोन आया। उनकी आवाज़ रोने से भारी थी।

“बेटा, जहाँ भी है वापस घर आ जा। इस मामले को किसी तरह सुलझा... वरना हम कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।”

कुछ दिनों बाद जब माहौल थोड़ा शांत हुआ, तो मोहित छुपते-छुपाते अपने घर वापस आ गया। लेकिन घर वालों ने उसका बाहर निकलना लगभग बंद कर दिया था। उधर वह ब्लैकमेलर रोज़ फोन करता, पैसे माँगता और जान से मारने की धमकी देता।

मोहित की ज़िंदगी जैसे चारों तरफ़ से बंद हो चुकी थी।

फिर होली आने वाली थी।

होली से ठीक एक दिन पहले रेस्टोरेंट के स्टाफ़ का फोन आया।

“सर, कल होली है। रेस्टोरेंट बंद रहेगा। बस 5 मिनट के लिए आ जाइए, सब मिलकर थोड़ी होली खेल लेंगे।”

कई दिनों से घर में बंद मोहित का भी मन कर आया कि चलो, कुछ देर के लिए ही सही, अपने लोगों के बीच चला जाए। उसने चेहरे पर कपड़ा बाँधा और विपिन को भी साथ बुला लिया। दोनों रेस्टोरेंट पहुँचे। जल्दी-जल्दी रंग लगाया, थोड़ी देर हँसे और फिर मोहित वहाँ से निकल गया। लेकिन उसके निकलने के ठीक 2 मिनट बाद रेस्टोरेंट पर पुलिस की रेड पड़ गई। मोहित के कदम वहीं रुक गए।

इतना सटीक समय...?

उसे समझते देर नहीं लगी। कोई ऐसा इंसान था जो उसकी हर हरकत की खबर पुलिस तक पहुँचा रहा था।

मोहित ने विपिन की तरफ़ देखा और उसका हाथ पकड़ लिया।

“भाई... पता लगा कौन गद्दार है, जो मेरी पीठ में छुरा घोंप रहा है।”

अब डर के साथ एक नया सवाल भी पैदा हो चुका था—**आखिर अपने लोगों में से कौन दुश्मन बन चुका था?**

होली बीतने के कुछ दिन बाद अचानक मोहित के एक करीबी दोस्त का फोन आया।

“भाई... मैंने अभी-अभी भाभी को विशाल मेगा मार्ट के अंदर देखा है।”

मोहित के लिए जैसे किसी ने बंद कमरे की खिड़की अचानक खोल दी हो। 7 महीने से जिस चेहरे को देखने के लिए उसकी आँखें तरस रही थीं, वह कुछ ही दूरी पर था। उसने तुरंत विपिन को बाइक पर बैठाया, चेहरे पर स्कार्फ़ बाँधा और विशाल मेगा मार्ट की तरफ़ निकल पड़ा। अंदर पहुँचकर उसने भीड़ में ज़ाबिया को देखा।

वही चेहरा...

लेकिन शायद पहले जैसा नहीं।

मोहित ने किसी तरह भीड़ का फायदा उठाया और चुपके से अपना चालू फोन उसकी जेब में डाल दिया। एक पल के लिए भी रुके बिना वह वहाँ से निकल आया।

उस रात फोन की घंटी बजी।

दूसरी तरफ़ वही आवाज़ थी, जिसके लिए मोहित 7 महीने से तरस रहा था।

ज़ाबिया रो रही थी।

“मोहित... मैं पिछले 7 महीनों से उसी एक कमरे में बंद हूँ। जब घर में कोई बड़ा रिश्तेदार आता है, तभी ये लोग मुझे बाहर निकालते हैं, ताकि समाज में किसी को शक न हो कि घर के अंदर क्या चल रहा है।”

मोहित चुपचाप सुनता रहा।

फिर ज़ाबिया ने वह बात कही जिसने उसकी बची हुई उम्मीद भी हिला दी।

“और मोहित... अंदर ही अंदर मेरे निकाह की तैयारियाँ चल रही हैं।” कुछ पल के लिए दोनों तरफ़ ख़ामोशी छा गई।

मोहित ने उसे अपने साथ हो रही हर चीज़ बताई—पुलिस की तलाश, ब्लैकमेलर की धमकियाँ, पैसों की माँग और अपने परिवार पर पड़ रहा दबाव।

दोनों जानते थे कि हालात अब पहले से कहीं ज़्यादा ख़तरनाक हो चुके हैं। फिर भी उस वक़्त उनके दिल में भाग जाने का ख़याल नहीं था। कोर्ट मैरिज करने या दुनिया से लड़कर सब कुछ ख़त्म कर देने का भी कोई इरादा नहीं था। वे बस यही चाहते थे कि किसी तरह हालात बदल जाएँ। शायद कोई रास्ता निकल आए। शायद दोनों परिवार उनकी मोहब्बत को समझ लें। शायद एक दिन वह सुबह आए जब ज़ाबिया को छिपकर फ़ोन न करना पड़े और मोहित को उसकी आवाज़ सुनने के लिए महीनों इंतज़ार न करना पड़े।

उन दोनों के दिल में अब भी एक छोटी-सी उम्मीद ज़िंदा थी—

काश, कोई चमत्कार हो जाए... और यह मोहब्बत लड़ाई बनकर नहीं, दोनों परिवारों की रज़ामंदी के साथ अपनी मंज़िल तक पहुँच जाए।

अध्याय 18

जब अपना ही दुश्मन निकला और उसी रात ज़ाबिया भाग आई

पर शायद ऊपरवाला उनसे बुरी तरह नाराज़ था। कभी-कभी लगता था... जैसे किस्मत ने उनकी तक्रदीर की किताब में सिर्फ़ और सिर्फ़ खौफ़नाक इंतहान ही लिखे हों। जिस दिन लगता था कि अब ज़िंदगी का तूफ़ान थोड़ा थमेगा, शायद अब साए छँटेंगे... ठीक उसी दिन कोई नया, भयानक बवंडर दरवाज़े पर आकर दहाड़ने लगता।

उस रात मोहित मानसिक रूप से पूरी तरह टूट चुका था। महीनों की बेचैनी, ज़ाबिया की कोई खबर न होना, लगातार मिल रही धमकियाँ और ऊपर से विपिन पर आँख बंद करके किया गया भरोसा—सब कुछ उसके सिर पर इतना भारी हो चुका था कि उसने खुद को शराब में डुबो दिया। शरीर नशे में था, लेकिन दिमाग के अंदर जैसे हजारों सवाल एक साथ चीख रहे थे।

तभी अचानक उसका फोन बजा। वही ब्लैकमेलर था।

फोन उठाते ही उधर से माँ-बहन की गंदी-गंदी गालियाँ शुरू हो गईं। नशे और गुस्से में मोहित का भी आपा खो गया। उसने भी उसे जमकर गालियाँ दीं और आखिर में गुस्से में उसे खुला चैलेंज दे दिया—

“बहुत शौक है ना सामने आने का? आ जा, मेरी लोकेशन पर आ!”

उस वक्त विपिन भी उसके सामने बैठा था। वह चुप था, लेकिन उसकी आँखों में एक अजीब-सी बेचैनी थी, जिसे मोहित उस समय पढ़ नहीं पाया। मोहित को क्या पता था कि अगले कुछ मिनट उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा सच उसके सामने लाने वाले हैं।

करीब 15 मिनट बाद कई गाड़ियों की आवाज़ सुनाई दी। ब्लैकमेलर अपने 10 लोगों के साथ वहाँ पहुँच चुका था। आते ही उसने मोहित को धक्का दिया और गुराकर बोला, “पैसे निकाल बे! नहीं तो अभी ज़ाबिया के घर जाकर बता दूँगा कि तूने कल ही उसे विशाल मेगा मार्ट में मोबाइल दिया है।”

मोहित एक पल के लिए बिल्कुल जम गया।

“इसे ये बात कैसे पता?”

विशाल मेगा मार्ट में ज़ाबिया को फोन देने की बात उसने सिर्फ एक इंसान को बताई थी—विपिन को। और फिर दूसरी बात ने उसके दिमाग को और झकझोर दिया। वह सीधे ₹10,00,000 माँग रहा था। ठीक वही रकम, जो कुछ समय पहले विपिन ने पार्टनरशिप के नाम पर रेस्टोरेंट में लगाई थी।

क्या यह महज़ संयोग था? या फिर इसके पीछे कोई बहुत बड़ा खेल था?

मोहित कुछ समझ पाता, उससे पहले हाईवे के किनारे मारपीट शुरू हो चुकी थी। देखते ही देखते दोनों तरफ़ के लोग आमने-सामने आ गए। गालियों की आवाज़, धक्का-मुक्की, टूटते शीशे और सड़क पर मचता हंगामा—कुछ ही मिनटों में पूरा माहौल किसी खूनी टकराव में बदल गया।

लेकिन लड़ाई के बीच ब्लैकमेलर ने एक ऐसी बात कह दी, जिसने मोहित के दिमाग में शक को यकीन में बदलना शुरू कर दिया। वह चिल्लाया,

“मुझे सब पता है मोहित! तू 2 साल के अंदर ज़ाबिया को यहाँ से भगाकर ले जाने वाला है!”

नशे, गुस्से और ज़ाबिया को खो देने के डर में मोहित ने भी बिना सोचे चीखकर जवाब दिया,

“2 साल नहीं बे... 2 महीने में ले जाऊँगा! दम है तो रोक के दिखा!”

मोहित को नहीं पता था कि उसका यह एक वाक्य आगे जाकर सब कुछ बदल देगा।

वह ब्लैकमेलर कोई बाहरी आदमी नहीं था। वह एक मुस्लिम लड़का था, जो कभी ज़ाबिया के घर पर ड्राइवर रह चुका था। मोहित की चुनौती उसे चुभ

गई। वह वहाँ से सीधा ज़ाबिया के घर पहुँचा और मोबाइल देने की बात के साथ-साथ लड़ाई की पूरी कहानी अपने तरीके से बढ़ा-चढ़ाकर घरवालों को बता दी।

अब मोहित के सामने सिर्फ ब्लैकमेलर का सवाल नहीं था। सवाल था—**इन लोगों तक हमारी हर बात पहुँच कौन रहा है?**

मोहित ने उसी रात ब्लैकमेलर के साथ आए एक स्थानीय लड़के को अलग बुलाया। उसकी जेब में ₹25,000 रखे और बस इतना कहा, “मुझे पैसे नहीं बचाने... मुझे सच चाहिए। बता दे, ये सब कर कौन रहा है?”

उसी वक्त विपिन अचानक बेचैन हो उठा।

“यार, घर से बहुत जरूरी फोन आया है... मुझे अभी जाना पड़ेगा।”

वह वहाँ से निकल गया।

मोहित ने उस वक्त भी कुछ नहीं कहा। लेकिन विपिन के जाते ही उस लड़के ने जो बताया, उसने मोहित के पैरों तले की ज़मीन खींच ली।

“भाई... वो ब्लैकमेलर कोई बाहर का आदमी नहीं है। वो विपिन के घर के ठीक पीछे रहता है। और ये पूरा खेल विपिन ने ही रचा है।”

मोहित कुछ पल तक उसे देखता रहा। उसे लगा जैसे किसी ने उसके कानों में कोई ऐसी बात डाल दी हो जिसे उसका दिल सुनने के लिए तैयार ही नहीं था।

लड़के ने आगे बताया कि प्लान बहुत साफ था—**ब्लैकमेलर मोहित से ₹10,00,000 वसूलेगा और उसमें से अपना हिस्सा रखेगा। दूसरी तरफ़ ज़ाबिया के घरवालों को मोहित के खिलाफ़ भड़काकर ऐसा माहौल बनाया जाएगा कि या तो मोहित जेल पहुँचे या फिर उसे रास्ते से हटा दिया जाए। उसके बाद रेस्टोरेंट पर विपिन का कब्ज़ा हो जाए।**

यानी जिस आदमी को मोहित ने अपना भाई समझकर अपने सबसे मुश्किल दिनों में अपने पास बैठाया था, वही उसकी पूरी दुनिया छीनने की तैयारी कर चुका था।

मोहित को अचानक वे सारी रातें याद आने लगीं जब वह ज़ाबिया के लिए रोता था और विपिन के सामने अपना सिर रखकर अपनी तकलीफ़ सुनाता था। उसे क्या पता था कि वह जिस कंधे पर अपना दर्द रख रहा है, वही कंधा उसकी पीठ में खंजर छिपाए बैठा है। लेकिन इस सदमे को महसूस करने का वक्त भी उसे नहीं मिला। तभी उसके फोन की स्क्रीन जगमगाई।

ज़ाबिया का कॉल था।

मोहित ने काँपते हाथों से फोन उठाया। उधर से ज़ाबिया की आवाज़ आ रही थी। आवाज़ में डर था, घबराहट थी और शायद मौत का एहसास भी।

“मोहित... मैंने कमरे को अंदर से बंद कर लिया है। किसी ने घरवालों को बता दिया है कि मेरे पास फिर से फोन है... और रात तुम्हारी लड़ाई के बारे में भी उन्हें पता चल गया है। बाहर बहुत लोग खड़े हैं। उनके पास हथियार हैं। मुझे लग रहा है... आज ये लोग मुझे मार देंगे।”

मोहित के हाथ काँपने लगे।

वह कुछ बोलता, उससे पहले ज़ाबिया फिर बोली, **“तुम अभी इसी वक्त शहर छोड़ दो। प्लीज मोहित... वरना ये लोग तुम्हें नहीं छोड़ेंगे।”**

एक तरफ़ उसकी ज़ाबिया मौत के डर से कमरे में बंद थी। दूसरी तरफ़ खुद मोहित के पीछे लोग पड़े थे। वह तय नहीं कर पा रहा था कि पहले उसे बचाए या खुद को।

आखिरकार मोहित वहाँ से निकल गया और सीधे अपने कॉलेज के एक दोस्त के घर इटावा पहुँच गया। एक कमरे में खुद को बंद कर लिया। लेकिन वहाँ पहुँचकर भी उसका दिमाग शांत नहीं हुआ। वह लगातार शराब पीता रहा। विपिन का धोखा उसकी छाती में पत्थर बनकर पड़ा था और ज़ाबिया की हालत उसे अंदर से खाए जा रही थी।

“पता नहीं वो ज़िंदा भी है या नहीं...”

यही सवाल बार-बार उसके दिमाग में घूम रहा था। अगले दिन शाम को उसका दोस्त कमरे में आया। मोहित की हालत देखकर उसने कहा, “चल यार, थोड़ा बाहर चल। आज एक शादी में जाना है। मूड बदल जाएगा।”

मोहित ने बिना कुछ सोचे अपनी कुछ चीज़ें उठाई, कार की डिग्गी में रखीं और बस इतना कहा, “शादी के बाद मैं सीधे घर जाऊँगा। अब जो होना है, हो जाए। लेकिन मैं ज़ाबिया से मिलकर रहूँगा।”

दोस्त ने कहा, “ठीक है... पहले चल।”

शाम करीब 7 बजे वे शादी के वेन्यू पर पहुँचे।

चारों तरफ़ रोशनी थी। शहनाइयाँ बज रही थीं। आतिशबाज़ी हो रही थी। लोग शादी की खुशियों में डूबे हुए थे। लेकिन मोहित के भीतर जैसे कोई मातम पसरा था। वह भीड़ के बीच खड़ा था कि अचानक उसके फोन पर एक अनजान नंबर से कॉल आया।

मोहित ने फोन उठाया।

कुछ सेकंड तक सिर्फ़ तेज़ साँसों की आवाज़ सुनाई दी।

फिर...

“हेलो... मोहित?”

वह आवाज़ सुनते ही मोहित का दिल जैसे सीने से बाहर आ गया।

“मैं ज़ाबिया बोल रही हूँ...”

मोहित की आँखों में आँसू आ गए। लेकिन अगली बात सुनते ही उसके हाथ-पैर सुन्न पड़ गए।

“मोहित... मैं घर से भाग आई हूँ!”

मोहित कुछ बोल नहीं पाया।

ज़ाबिया तेज़-तेज़ साँस लेते हुए बोली, “घर में सब लोग मगरिब की नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने मौका देखा और नंगे पैर भाग आई। अगर आज नहीं भागती ना मोहित... तो ये लोग मुझे आज पक्का मार डालते।”

उसकी आवाज़ काँप रही थी। पीछे शायद सड़क का शोर सुनाई दे रहा था। फिर उसने कहा—

“मैं अभी शहर के चौराहे पर खड़ी हूँ... मुझे जल्दी बताओ, मैं कहाँ आऊँ?”

मोहित के सामने उसी वक्त शादी की आतिशबाज़ियाँ फूट रही थीं।

ढोल बज रहे थे।

लोग नाच रहे थे।

लेकिन उसके लिए उस पल दुनिया की हर आवाज़ जैसे बंद हो गई थी। जिस लड़की को उसने महीनों तक एक कमरे की खिड़की के पीछे देखा था... जिसकी आवाज़ सुनने के लिए वह तरस गया था... जिसके ज़िंदा होने की भी उसे कई बार उम्मीद नहीं रहती थी...

वही ज़ाबिया आज अपने घर से भागकर सड़क पर खड़ी थी।

और पहली बार...

उसे लग रहा था कि शायद अब उनकी मोहब्बत को सिर्फ़ दूर से देखने की सज़ा नहीं मिलेगी। शायद अब उन्हें अपनी कहानी का अगला पन्ना खुद लिखना था।

लेकिन वह पन्ना...

उनकी ज़िंदगी का सबसे खतरनाक पन्ना होने वाला था।

अध्याय 19

बस स्टैंड की वो चीख—“मोहित, आज ये मुझे मार डालेंगे!”

ज़ाबिया की आवाज़ सुनते ही मोहित का पूरा वजूद जैसे पत्थर का हो गया। कुछ सेकंड पहले तक शादी की रोशनी, ढोल-नगाड़े और आतिशबाज़ी के बीच बैठा वह आदमी अचानक ऐसी दुनिया में पहुँच गया था, जहाँ हर तरफ़ सिर्फ़ मौत का ख़ौफ़ था। उधर ज़ाबिया घर से भागकर किसी अनजान चौराहे पर खड़ी थी और इधर मोहित के सामने सबसे बड़ा सवाल था—उसे बचाए कैसे?

उसने काँपती आवाज़ में कहा, “तुम तुरंत कानपुर की बस पकड़ो और सीधे वहाँ पहुँचो।”

इतना कहकर उसने फोन काट दिया, लेकिन उसके हाथ कई सेकंड तक उसी तरह काँपते रहे। उसके सीने में दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा था, जैसे पसलियों को तोड़कर बाहर निकल आएगा। उसके दिमाग में बार-बार वही सवाल घूम रहा था—क्या ज़ाबिया सुरक्षित बस स्टैंड तक पहुँच पाएगी? कहीं उसके घर वाले उसे रास्ते में पकड़ न लें? कहीं वह अकेली, बिना पैसे और बिना फोन के किसी मुसीबत में न फँस जाए?

मोहित ने तुरंत अपने जिगरी दोस्त मृत्युंजय को बुलाया। “मृत्युंजय... इधर आ भाई। बहुत बड़ा मामला हो गया है।”

उसने काँपती आवाज़ में उसे पूरी बात बताई। ज़ाबिया घर से भाग चुकी थी। वह किसी तरह कानपुर पहुँचने वाली थी और वहाँ उसके अलावा उसका कोई अपना नहीं था। मृत्युंजय ने जैसे ही पूरी बात सुनी, शादी का सारा माहौल उसके लिए उसी पल खत्म हो गया। ढोल की आवाज़, शराब का

नशा और सामने चल रहा जश्र—सब पीछे छूट गया। दोनों बिना समय गंवाए शादी का वेन्यू छोड़कर बाहर निकल आए।

उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए। इतने दिनों से जिस डर को वे टालते आ रहे थे, वह अब उनके सामने खड़ा था। दोनों दौड़ते हुए एक वकील के पास पहुँचे, ताकि इस हालत में कोई कानूनी सलाह मिल सके। वहाँ मौजूद लोगों के बीच अलग-अलग राय आने लगी। कोई पुलिस की बात कर रहा था, कोई कोर्ट मैरिज की, तो कोई कह रहा था कि पहले ज़ाबिया को सुरक्षित जगह पहुँचाना ज़रूरी है।

लेकिन मोहित के कानों में कुछ भी ठीक से नहीं पड़ रहा था। उसके दिमाग में बस ज़ाबिया की वही काँपती हुई आवाज़ घूम रही थी—“मोहित, आज ये मुझे मार डालेंगे।”

आखिरकार उसने मृत्युंजय की तरफ देखा और बहुत भारी आवाज़ में कहा, “भाई, मैं कानपुर जा रहा हूँ।”

रात के करीब 9 बज चुके थे। मोहित ने बिना देर किए एक प्राइवेट कार बुक की और उसमें बैठ गया। जैसे ही शहर की आखिरी रोशनियाँ पीछे छूटने लगीं, हाईवे का अंधेरा सामने फैलता चला गया। कार की हेडलाइट्स सड़क को चीर रही थीं, मगर मोहित के भीतर फैले अंधेरे को कोई रोशनी नहीं मिल रही थी। वह पीछे की सीट पर चुपचाप बैठा था। ड्राइवर अपनी जगह खामोश था और मोहित की निगाहें बार-बार मोबाइल की स्क्रीन पर जा रही थीं।

वह अपना फोन बंद नहीं कर सकता था। उसे डर था कि कहीं ज़ाबिया कानपुर पहुँचकर किसी राहगीर से फोन माँगकर उसे कॉल करे और उसका फोन बंद मिले तो? उसे ज़ाबिया का पूरा 10 अंकों वाला नंबर याद था, लेकिन ज़ाबिया को सिर्फ़ मोहित का नंबर याद था। उसके पास न अपना फोन था, न पैसे। इसलिए अब उस फोन की हर एक घंटी उसके लिए ज़िंदगी और मौत के बीच का फर्क थी।

लेकिन उसी फोन में दूसरा खतरा भी छिपा था। कभी ज़ाबिया के घर वालों का फोन आ सकता था, कभी पुलिस का, तो कभी उस ब्लैकमेलर का।

स्क्रीन पर आने वाली हर अनजान कॉल मोहित के दिल की धड़कन बढ़ा देती। वह फोन को हाथ में पकड़े बस उसी एक कॉल का इंतज़ार कर रहा था—जिसमें दूसरी तरफ़ ज़ाबिया हो।

कार लगातार कानपुर की तरफ बढ़ रही थी। बाहर अंधेरा था और भीतर उससे भी गहरा सन्नाटा। मोहित ने आँखें बंद कीं और मन ही मन बस एक ही दुआ की—“या तो उसे मेरे पास पहुँचा दे... या फिर मुझे उसके पास पहुँचा दे।”

उसे क्या पता था कि इसी सफ़र के दौरान उसके फोन पर ऐसा संदेश आने वाला है, जो उसकी पूरी दुनिया को एक बार फिर उलटकर रख देगा।

अध्याय 20

व्हाट्सऐप की वो तस्वीर—पापा की कनपटी पर बंदूक

कार अभी कानपुर की राह में ही थी कि अचानक मोहित के फोन की स्क्रीन लगातार चमकने लगी। एक के बाद एक कॉल आने लगीं। पहले एक, फिर दूसरी, फिर तीसरी... कुछ ही सेकंड में फोन जैसे चीखने लगा था।

मोहित का दिल बैठ गया। ज़ाबिया के घर वालों को उसकी फरारी की खबर मिल चुकी थी।

लेकिन जो कुछ उन्होंने किया था, उसका अंदाज़ा मोहित को बिल्कुल नहीं था। ज़ाबिया के घर वाले अपने कुछ लोगों और पुलिस को साथ लेकर सीधे मोहित के घर पहुँच चुके थे। वहाँ उन्होंने उसके पापा और भाई को अपने कब्जे में ले लिया था और उन्हें अपने साथ उठा ले गए थे।

मोहित कुछ देर तक फोन को देखता रहा। उसके हाथ रिसीव बटन तक जाते और वापस लौट आते। उसे डर था कि अगर उसने कॉल उठा ली तो कहीं उसकी लोकेशन न पता चल जाए। लेकिन उसी समय उसके दिमाग में एक और डर आया—अगर ज़ाबिया कानपुर पहुँच गई और उसी फोन पर उसे कॉल किया तो?

वह फोन बंद नहीं कर सकता था।

आखिरकार उसने अपने घर के नंबर से आती कॉल उठा ली। दूसरी तरफ़ ज़ाबिया के चाचा की आवाज़ थी। आवाज़ में ऐसा गुस्सा था कि मोहित की रीढ़ तक सिहर उठी।

“कहाँ है तू? तुम दोनों चुपचाप वापस आ जाओ, नहीं तो तेरे बाप को यहीं गोली मार दूँगा। यकीन नहीं आता तो अपना व्हाट्सऐप चेक कर!”

मोहित के हाथ सुन्न पड़ गए। उसने तुरंत व्हाट्सऐप खोला।

स्क्रीन पर एक तस्वीर थी।

उस तस्वीर को देखते ही उसकी साँस जैसे वहीं रुक गई। उसके पापा एक कुर्सी पर बेबस बैठे थे और एक आदमी ने उनकी कनपटी पर बंदूक तान रखी थी।

मोहित की आँखों से आँसू निकल पड़े। उसके मुँह से बस इतना निकला, “पापा...”

लेकिन अगले ही पल उसने खुद को संभाला। अगर उसने सच बता दिया कि वह कहाँ है, तो सब कुछ खत्म हो सकता था। उसने काँपती आवाज़ में झूठ बोला, “ज़ाबिया मेरे साथ नहीं है। मैं नोएडा आया हुआ हूँ, अपने एक दोस्त की शादी में। मेरी उससे कोई बात नहीं हुई... मुझे नहीं पता वो कहाँ है।”

तभी फोन दूसरी तरफ़ किसी और ने ले लिया। आवाज़ अचानक बदल गई। इस बार लहजा बेहद शांत और मीठा था।

“भतीजे, मैं चाचा बोल रहा हूँ। तू वापस आ जा बेटा। कुछ नहीं होगा। तेरे घर वाले, पापा और भाई सब हमारे पास आराम से बैठे हैं। हम मिलकर मामला सुलझा लेंगे।”

मोहित कुछ सेकंड चुप रहा। वह आवाज़ पहचानता था। यह उसके पापा का पुराना दोस्त था। लेकिन इसी पहचान ने उसे एक बात समझा दी—ये लोग उसे बहला रहे हैं। वे चाहते थे कि वह घबराकर अपनी लोकेशन बता दे।

अब मोहित ने भी खेल बदल दिया।

वह जानबूझकर उनसे लंबी-लंबी बातें करने लगा। कभी नोएडा का नाम लेता, कभी किसी दोस्त का, कभी शादी की बातें करता। उसका एक ही मकसद था—समय काटना। बस उसे ज़ाबिया के अगले फोन का इंतज़ार था।

और फिर...

अचानक स्क्रीन पर एक अनजान नंबर चमका।

मोहित का दिल उछलकर गले में आ गया।

ज़ाबिया!

उसने बिना एक पल गंवाए दूसरी कॉल को होल्ड पर डाला और ज़ाबिया का फोन उठा लिया।

“हेलो!”

दूसरी तरफ़ तेज़ साँसों की आवाज़ थी।

मोहित ने फुसफुसाते हुए कहा, “ज़ाबिया, सुनो! अब तुम सिर्फ़ इस नंबर पर फोन करना...” और उसने तुरंत कार के ड्राइवर का सीक्रेट नंबर उसे बता दिया।

“किसी और नंबर पर मत करना। समझी?”

ज़ाबिया ने बस इतना कहा, “हाँ...”

मोहित ने उसी वक्त अपना पर्सनल फोन बंद कर दिया।

पिछले 3 घंटे से जिस फोन की हर घंटी उसके लिए मौत का खतरा बन चुकी थी, वह अब हमेशा के लिए खामोश था।

उधर ज़ाबिया ने भी समझदारी दिखाई थी। उसने किसी अनजान राहगीर का फोन नहीं लिया था। उसने बस के कंडक्टर के फोन से मोहित को कॉल किया फिर, अब दोनों के पास एक-दूसरे तक पहुँचने का नया रास्ता था और सबसे बड़ी बात—उनकी लोकेशन का पता लगाना पहले जितना आसान नहीं था।

कार फिर उसी अंधेरे हाईवे पर दौड़ने लगी।

मोहित का अपना फोन जेब में बंद पड़ा था। लेकिन ड्राइवर के पास रखा दूसरा फोन अब उनकी पूरी ज़िंदगी का सहारा था।

उसे अभी यह नहीं पता था कि कानपुर पहुँचने के बाद उसे ज़ाबिया मिलेगी भी या नहीं।

और उससे भी बड़ा सवाल यह था—क्या वे दोनों इस बार सच में एक-दूसरे तक पहुँच पाएँगे?

अध्याय 21

रात के 2 बजे बस से उतरी वो लहलुहान मोहब्बत

रात के ठीक 12 बजे कार कानपुर की सरहद में दाखिल हो चुकी थी। हाईवे पर ऐसा सन्नाटा पसरा था, जैसे हवा भी अपनी साँसें रोककर किसी अनहोनी का इंतज़ार कर रही हो। ज़ाबिया की बस रात 2 बजे आने वाली थी—यानी अभी पूरे दो घंटे बाकी थे। मोहित के लिए ये दो घंटे शायद उसकी ज़िंदगी के सबसे लंबे दो घंटे होने वाले थे।

ड्राइवर के फोन से मोहित ने चुपके से अपने वफ़ादार दोस्त जितेंद्र को कॉल किया जो कानपुर में ही रहता था। और कहा कि वह एक छोटा कीपैड फोन और नई सिम लेकर तुरंत बस स्टैंड पहुँचे। रात के करीब 1 बजे जितेंद्र अपनी जान हथेली पर रखकर वहाँ पहुँच गया। मोहित ने उसे पूरी स्थिति समझाई—पीछे पुलिस थी, ज़ाबिया के घरवाले थे, और अब उन्हें किसी भी हालत में इलाहाबाद हाईकोर्ट पहुँचना था। जितेंद्र ने तुरंत अपने बड़े भाई को फोन किया, जो रिश्ते में मोहित के मौसा लगते थे और टैक्सी का काम करते थे। उनके पास इस वक्त यही एक रास्ता था।

रात के 1 बजकर 45 मिनट पर कार आ गई। मोहित, जितेंद्र, उसका एक और दोस्त और ड्राइवर—चार लोग, चार धड़कते दिल और सिर पर मंडराती मौत लेकर ज़ाबिया को लेने हाईवे की तरफ़ निकल पड़े।

रात के ठीक 2 बजे दूर अँधेरे में एक बस की पीली हेडलाइट्स दिखाई दीं। कुछ ही पलों बाद बस उनके सामने आकर रुक गई। मोहित की नज़र बस के दरवाज़े पर टिक गई। दरवाज़ा खुला और ज़ाबिया ने बाहर निकलने की कोशिश की। उसने जैसे ही पहला कदम ज़मीन पर रखा, उसका शरीर वहीं जवाब दे गया और वह सीधे सड़क पर गिर पड़ी।

मोहित पागलों की तरह उसकी तरफ़ दौड़ा। उसे अपनी बाहों में उठाते ही उसकी रूह काँप गई। ज़ाबिया के दोनों पैरों से ताज़ा खून रिस रहा था और हाईवे की काली सड़क पर लाल निशान बनते जा रहे थे। उसने उसे कार की पिछली सीट पर लिटाया और काँपते हाथों से उसके पैर देखे तो उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। डंडों और पट्टों की बेरहम मार से उसके पैर नीले-काले पड़ चुके थे। कई जगह चमड़ी फट चुकी थी, कहीं सूखा हुआ खून था तो कहीं से अब भी ताज़ा खून रिस रहा था।

बस का कंडक्टर भर्राई हुई आवाज़ में बोला, “भाई साहब, रास्ते भर दर्द के मारे ये कई बार बेहोश हुई हैं। बस में बैठी कुछ महिलाओं ने पानी छिड़ककर इन्हें होश में रखा। बड़ी मुश्किल से यहाँ तक लाई हैं।”

मोहित कुछ बोल नहीं पाया। उसकी आँखों के सामने बस एक ही सवाल घूम रहा था—कोई इंसान अपनी ही औलाद के साथ इतना बेरहम कैसे हो सकता है?

तभी ज़ाबिया ने धीरे-धीरे अपनी भारी पलकें खोलीं। चेहरे पर दर्द था, होंठ सूखे थे, शरीर काँप रहा था... लेकिन मोहित को देखते ही उसके चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान आ गई। जैसे उसे अपने ज़ख्मों से कोई शिकायत ही न हो। उसे बस इस बात का सुकून था कि वह मोहित तक पहुँच गई थी।

“मोहित...” उसने बेहद धीमी आवाज़ में कहा।

बस इतना सुनना था कि मोहित की आँखों से आँसू बह निकले। उसे लगा, ये लड़की उसके पास आने के लिए अपने जिस्म का हर दर्द पीछे छोड़ आई है।

मोहित ने उसे और कसकर अपनी बाहों में समेट लिया। उसके भीतर कुछ टूट भी रहा था और कुछ जन्म भी ले रहा था—एक ऐसा हौसला, जो अब किसी भी कीमत पर ज़ाबिया को खोने वाला नहीं था।

रात के सत्राटे में कार का दरवाज़ा बंद हुआ। ज़ाबिया उसकी बाहों में थी और सामने एक अनजान रास्ता। कार इलाहाबाद की तरफ़ बढ़ चली—न्याय की उम्मीद में, ज़िंदगी की उम्मीद में और उस मोहब्बत को बचाने की आखिरी कोशिश में, जिसके लिए दोनों अब मौत तक से लड़ने को तैयार थे।

अध्याय 22

यादव वकील का भरोसा और तीन दिन का बंद रास्ता

रात भर कार के पहिए दौड़ते रहे। पीछे छूटता कानपुर, अँधेरी सड़कें और ज़ाबिया के पैरों से रिसता खून—हर चीज़ उन्हें याद दिला रही थी कि अब उनके पास गलती की कोई गुंजाइश नहीं थी। अगली सुबह ठीक 11 बजे वे इलाहाबाद पहुँच गए। सूरज निकल चुका था, शहर अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में लौट चुका था, लेकिन मोहित और ज़ाबिया की दुनिया अभी भी उसी रात में अटकी हुई थी।

कार शहर की गलियों से गुजर रही थी कि ज़ाबिया ने धीरे से मोहित का हाथ पकड़ लिया। उसकी उँगलियाँ ठंडी थीं और शरीर अब भी दर्द से ऐंठ रहा था। उसने अपनी उँगलियाँ मोहित की उँगलियों में फँसा दीं, जैसे सात महीनों का बिछोह एक पल में समेट लेना चाहती हो। फिर उसने मोहित की तरफ़ देखा। आँखें लाल थीं, चेहरे पर थकान थी, लेकिन आवाज़ में एक अजीब-सा सुकून था।

“मोहित, मुझे पता है हमारे घरवाले हमें कभी ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे। वो हमें ढूँढ़ लेंगे... शायद मार भी डालें। लेकिन अगर तुम्हारे साथ, तुम्हारी बाहों में, तुम्हारी माशूक बनकर मैं सिर्फ़ दो घंटे भी जी लूँ ना... तो वो दो घंटे मेरी पूरी ज़िंदगी के लिए काफ़ी हैं। अब मुझे मौत से डर नहीं लगता।”

मोहित के पास उस बात का कोई जवाब नहीं था। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। जिस लड़की ने अपने पैरों के ज़ख्मों की परवाह नहीं की, जिसने मौत के सामने खड़े होकर भी सिर्फ़ उसके पास आने का फैसला किया, उसके लिए अब पीछे हटना मोहित के लिए नामुमकिन था।

सदियों की ज़िंदगी की तमन्ना किसे थी यहाँ,
तेरे साथ दो पल मिले, तो वही पूरी हयात हो गई।

ज़माने ने रास्ते में काँटे ही काँटे बिछाए थे,
तेरे हाथ का एक लम्स मिला, तो मौत भी इबादत हो गई।

इलाहाबाद पहुँचकर उन्होंने कोर्ट के आसपास वकील की तलाश शुरू की। तभी उनकी नज़र एक नेमप्लेट पर पड़ी—वकील का सरनेम यादव था। मोहित को लगा कि अपनी ही बिरादरी के आदमी हैं, शायद उनकी मजबूरी समझेंगे और मदद करेंगे। वह उनके केबिन में पहुँचा और रोते हुए अपनी पूरी कहानी सुना दी।

उस वक्त सबसे बड़ी कानूनी अड़चन यह थी कि मोहित की उम्र 20 साल 6 महीने थी, जबकि शादी के लिए लड़के की कानूनी उम्र 21 साल होनी चाहिए थी। वकील ने उन्हें भरोसा दिलाया, “तुम लोग चिंता मत करो बेटा, मैं सब मैनेज कर लूँगा।”

मोहित ने उनकी बात पर भरोसा कर लिया और अपनी जेब के ₹15,000 एडवांस में उन्हें दे दिए। वकील ने उन्हें शाम तक अपने ही एक ख़ाली मकान में रुकने की सलाह दी। कार वापस भेज दी गई और मोहित, ज़ाबिया, जितेंद्र और उसका दोस्त वकील के घर पर ही रुक गए।

उन्हें लगा था कि शायद अब पहली बार कोई रास्ता खुला है। लेकिन किस्मत को शायद अभी और परीक्षा लेनी थी।

उसी शाम वकील अचानक उनके पास आया और बोला, “देखो बच्चों, अभी किसी कानूनी वजह से काम नहीं हो सकता। लगातार तीन दिन कोर्ट बंद है—शनिवार, रविवार और सोमवार को भी छुट्टी है। तुम लोग यहाँ नहीं रुक सकते। कोई होटल ले लो और मंगलवार को सीधे कोर्ट आ जाना।”

मोहित के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। जिस शहर में वे किसी को जानते तक नहीं थे, वहाँ होटल में जाकर रुकना उनके लिए खुद को ख़तरे के सामने खड़ा करने जैसा था। पुलिस उन्हें ढूँढ़ रही थी, ज़ाबिया के घरवाले पीछे पड़े थे और अब उनके पास छिपने की सुरक्षित जगह भी नहीं थी।

चारों ने आपस में बैठकर बात की। कुछ देर की खामोशी के बाद मोहित ने फैसला किया कि इस अनजान शहर में तीन दिन छिपने से बेहतर है कि वापस कानपुर चला जाए, जहाँ कम-से-कम भरोसे के लोग मौजूद थे।

उसने नए कीपैड फोन से अपने पुराने दोस्त प्रखर को कॉल किया जो कानपुर के पास ही शुक्लागंज में रहता था। प्रखर वही दोस्त था जिसके साथ उसने 2016 में आर्मी की तैयारी की थी और जो मोहित और ज़ाबिया के रिश्ते की पूरी कहानी जानता था।

फोन उठते ही मोहित ने बस इतना कहा, “भाई, बहुत बड़ा मैटर हो गया है। हमें अभी तेरी मदद चाहिए।”

प्रखर ने बिना सवाल किए जवाब दिया, “तुम लोग तुरंत कानपुर आ जाओ। मैं यहाँ सब सँभाल लूँगा। कोई न कोई सेफ़ जुगाड़ कर लेंगे।”

मोहित ने फोन काटा और ज़ाबिया की तरफ़ देखा। वह दर्द से कराहते हुए भी उसकी तरफ़ देख रही थी। दोनों को पता था कि कानपुर वापस जाना मतलब फिर उसी आग में लौटना था, जिससे वे अभी-अभी भागकर निकले थे।

लेकिन अब उनके पास कोई और रास्ता भी नहीं था।

और उन्हें क्या पता था कि कानपुर लौटने का यह फैसला उनकी कहानी को उस मोड़ पर ले जाने वाला था, जहाँ **मोहब्बत, कानून, परिवार और मौत—चारों पहली बार आमने-सामने खड़े होने वाले थे।**

अध्याय 23

आधी रात का ठिकाना और गंगा बैराज की वो सुबह

शुक्रवार की रात के ठीक 8 बज चुके थे। कार के शीशों के बाहर कानपुर की चमकती हुई लाइटें थीं, लेकिन मोहित के भीतर सिर्फ अंधेरा था। हर चौराहे पर उसे लगता कि अभी पुलिस की गाड़ी सायरन बजाती हुई सामने आ जाएगी या ज़ाबिया के घरवालों की गाड़ियाँ उन्हें चारों तरफ़ से घेर लेंगी। किसी तरह वे कानपुर पहुँचे और सीधे प्रखर के पास गए। मोहित और ज़ाबिया को सामने देखकर प्रखर के चेहरे की रंगत ही बदल गई। वह समझ चुका था कि मामला अब पहले से कहीं ज़्यादा गंभीर हो चुका है। वह उन्हें तुरंत शहर के एक सुनसान कोने में ले गया, जहाँ कुछ खाने-पीने का इंतज़ाम हो सके। वहाँ पहले से ही प्रखर के सबसे भरोसेमंद दोस्त शिखर, अनुराग और ऋषांक मौजूद थे।

जितेंद्र ने अपनी जेब से वही नया कीपैड फोन और सिम निकालकर मोहित के हाथ में रख दी। भारी आवाज़ में बोला, “भाई, अब आगे की कमान प्रखर सँभालेगा। मुझे वापस निकलना पड़ेगा, वरना घरवालों को शक हो जाएगा।” इतना कहकर जितेंद्र और उसका साथी उन्हें प्रखर के भरोसे छोड़कर रात के अँधेरे में वापस निकल गए। अब चारों के सामने सिर्फ़ एक सवाल था— इतनी बड़ी मुसीबत में मोहित और ज़ाबिया को छुपाया कहाँ जाए?

कानपुर का कोई होटल सुरक्षित नहीं था। पुलिस भी तलाश कर रही थी और ज़ाबिया के घरवालों की पहुँच भी बहुत दूर तक थी। तभी ऋषांक ने प्रखर के कान में धीरे से कहा, “भाई, मेरे सगे भाई की एक जिम है। रात 9 बजे के बाद वहाँ कोई नहीं रहता। शटर बंद कर देंगे, बाहर से ताला लगा देंगे। सुबह तक दोनों वहीं रह सकते हैं।” विचार सुनते ही सबने राहत की साँस ली। कम-से-कम उस रात के लिए उनके पास एक ठिकाना था।

रात करीब 10 बजे वे उस ज़िम के बाहर पहुँचे। भारी लोहे के औज़ार, डंबल्स और मशीनों से भरी वह जगह रात में किसी सुनसान गोदाम जैसी लग रही थी। शटर उठाया गया और मोहित व ज़ाबिया को अंदर पहुँचा दिया गया। शटर दोबारा बंद हुआ और बाहर से ताला लगा दिया गया। अंदर एक पतली-सी मैट पर दोनों चुपचाप बैठे रहे। ज़ाबिया के पैरों में दर्द की तीस बार-बार उठती थी। मोहित अपनी टी-शर्ट से उसके पैरों से रिसता खून साफ़ करता रहा। बाहर सीढ़ियों पर प्रखर और ऋषांक पूरी रात जागकर पहरा देते रहे।

सुबह के करीब 4 बजने वाले थे। उन्हें पता था कि 5 बजे के बाद ज़िम में ट्रेनर और लोग आना शुरू कर देंगे। प्रखर ने धीरे से दरवाज़ा खोला और कहा, “भाई, अब यहाँ से निकलना होगा।” वे तुरंत वहाँ से निकले और भोर की ठंडी हवा को चीरते हुए गंगा बैराज की तरफ़ बढ़ गए।

सुबह 5 बजे गंगा के विशाल पाट के सामने वे एक पत्थर की बेंच पर बैठे थे। नदी का पानी अपनी रफ़्तार से बह रहा था, ठंडी हवा ज़ाबिया के बिखरे बालों को छूकर गुजर रही थी। कुछ देर के लिए दोनों ने आँखें बंद कर लीं। न पुलिस का डर था, न घरवालों का ख़ौफ़, न भागने की मजबूरी—बस कुछ पल का सुकून था। लेकिन वे नहीं जानते थे कि यह सुकून तूफ़ान से पहले की आखिरी शांति है।

सुबह 8 बजे तक बैराज पर लोगों की आवाजाही बढ़ने लगी और धूप भी तेज़ हो गई। अब खुले में रहना ख़तरे से खाली नहीं था। प्रखर ने तुरंत अपने एक परिचित होटल मैनेजर से बात की और सुबह 10 बजे वे एक होटल के कमरे में पहुँच गए। दरवाज़ा बंद होते ही मोहित और ज़ाबिया बिस्तर पर ऐसे गिरे जैसे शरीर में अब ज़रा भी ताक़त बाकी न हो। कई दिनों से आँखों ने नींद नहीं देखी थी। कुछ ही मिनटों में दोनों गहरी नींद में चले गए।

लेकिन उन्हें क्या पता था कि जिस वक्त वे पहली बार बेख़बर होकर सो रहे हैं, उसी वक्त शहर के दूसरे कोने में उनकी तलाश का जाल और कस चुका है।

अध्याय 24

होटल के बाहर मौत खड़ी थी

ज़ाबिया के रसूखदार घरवाले उसे किसी भी कीमत पर वापस पाना चाहते थे। उन्होंने मोहित के सीधे-सादे शिक्षक पापा और उसके भाई को अपने पास कैद कर रखा था, उन्हें बंदूक की नोक पर खाना दिया जाता, गाड़ियों में पीछे बैठाकर इधर-उधर ले जाया जाता और अगर पापा के फोन पर कोई कॉल आती, तो कनपटी पर बंदूक रखकर उन्हें स्पीकर पर बात करने के लिए मजबूर किया जाता।

इसी बीच शुक्रवार की रात एक छोटी-सी गलती ने उनकी तलाश को नया सुराग दे दिया। मोहित के मौसा, जिनकी कार लेकर वे इलाहाबाद गए थे, ने अनजाने में मोहित के पापा को फोन करके पूछ लिया, “भाई साहब, मोहित ने अचानक रात को 2 बजे इलाहाबाद जाने के लिए कार मँगवाई थी। सब ठीक तो है ना?” यह बात ज़ाबिया के घरवालों के कानों तक पहुँची और उन्हें पहली ठोस कड़ी मिल गई।

शनिवार की सुबह करीब 11 बजे वे सीधे मौसा के घर पहुँच गए। उसी समय जितेंद्र भी थका-हारा अपने घर पहुँचा ही था। कार के ड्राइवर पर दबाव डाला गया और जब उसे जान से मारने की धमकी दी गई तो आखिरकार उसने बता दिया कि जितेंद्र भी इलाहाबाद साथ गया था। अब जितेंद्र पर भी सवाल और दबाव की बौछार शुरू हो गई। लेकिन मोहित को बचाने के लिए उसने एक झूठी कहानी बना दी—“मुझे कुछ नहीं पता। मैंने तो दोनों को कानपुर रेलवे स्टेशन पर छोड़ दिया था। वे कह रहे थे कि दिल्ली भागेंगे।”

जितेंद्र ने दोस्त को बचाने के लिए झूठ बोला था, लेकिन किस्मत ने उसी झूठ को एक नए खतरे में बदल दिया। जिस होटल में मोहित और ज़ाबिया छिपे हुए थे, वह कानपुर रेलवे स्टेशन के बिल्कुल पास था। अब पुलिस और

ज़ाबिया के घरवाले पापा, भाई और जितेंद्र को साथ लेकर स्टेशन के आसपास के होटलों की तलाश शुरू कर चुके थे।

दोपहर के ठीक 2 बजे मोहित गहरी नींद में था। कई दिनों की थकान के बाद पहली बार उसे नींद आई थी। तभी अचानक कमरे की डोरबेल बजी—“ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रिंग...” मोहित की आँख खुली। उसने घबराकर ज़ाबिया की तरफ़ देखा। उसके चेहरे का रंग भी उड़ चुका था। कुछ सेकंड दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। फिर मोहित धीरे-धीरे दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा।

जैसे ही उसने कुंडी खोली, सामने प्रखर खड़ा था। उसके चेहरे पर पसीना था और साँसें तेज़ चल रही थीं। वह अंदर घुसा, तुरंत दरवाज़ा बंद किया और बोला, “भाई, मुझे बहुत बेचैनी हो रही है। मेरा दिल कह रहा है कि यहाँ बहुत बड़ा खतरा है। यहाँ एक सेकंड भी रुकना ठीक नहीं। हमारा घर यहाँ से करीब 8 किलोमीटर दूर है। अगर पुलिस यहाँ पहुँच गई तो हम समय पर कुछ नहीं कर पाएँगे। मैंने एक भैया-भाभी के घर तुम्हारे रुकने का इंतज़ाम कर दिया है। अभी निकलो।”

किसी ने एक सवाल नहीं किया। बैग उठाए गए, कमरा छोड़ा गया और वे होटल के पिछले रास्ते से बाहर निकल गए। कुदरत का खेल देखिए—उनके निकलने के सिर्फ़ 30 मिनट बाद उसी होटल के बाहर पुलिस की 2 गाड़ियाँ आकर रुक गईं।

शाम करीब 4 बजे प्रखर के फोन पर होटल मैनेजर का घबराया हुआ कॉल आया, “भाई, तुमने किन लोगों को होटल में रुकवाया था? पुलिस और क्राइम ब्रांच की पूरी टीम होटल को घेरे खड़ी है। एक-एक कमरा चेक किया जा रहा है।”

यह सुनते ही मोहित और प्रखर दोनों के शरीर में जैसे करंट दौड़ गया। मौत उनसे सिर्फ़ कुछ मिनट दूर से होकर गुज़र चुकी थी।

प्रखर ने तुरंत दिमाग लगाया और बोला, “मोहित, तेरी पुरानी बंद सिम कहाँ है? उसे फोन में डालकर ऑन कर। फिर हाईवे पर जाकर किसी बड़े ट्रक की ट्रॉली में चुपचाप फेंक देते हैं। अगर पुलिस उस लोकेशन को ट्रैस करेगी

तो ट्रक के पीछे जाएगी और हमें शहर में छिपने का थोड़ा वक्त मिल जाएगा।”

उन्होंने वैसा ही किया। लेकिन सामने वाला कोई मामूली आदमी नहीं था। ज़ाबिया के चाचा का अपना बड़ा मीडिया हाउस और न्यूज़ चैनल था। शहर में उसकी पहुँच थी, लोग थे और हर तरफ़ उसकी नज़रें थीं। उसने ट्रक वाली लोकेशन की तरफ़ अपनी टीम भेज दी और खुद बाकी कड़ियाँ जोड़ने लगा।

शाम के करीब 5 बजे मोहित ने जितेंद्र का दिया हुआ नया कीपैड फोन ऑन किया। उसमें कई मैसेज पड़े थे। एक मैसेज पढ़कर उसका दिल बैठ गया— “भाई, तू कहाँ है? ये लोग मेरे घर आ गए हैं। हम सब मिलकर तुझे स्टेशन के पास ढूँढ़ रहे हैं। तू इस तरफ़ तो नहीं है ना?”

मोहित ने मैसेज दोबारा पढ़ा। फिर प्रखर की तरफ़ देखा। इसका मतलब साफ़ था—उन्हें अभी भी मोहित और ज़ाबिया की सही लोकेशन नहीं पता थी। वे सिर्फ़ अंदाज़े से स्टेशन के आसपास तलाश कर रहे थे।

कुछ देर बाद वे उस भैया-भाभी के घर पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपनी पूरी कहानी बताई। इतने दिनों की भागदौड़, डर, भूख और नींद की कमी ने शरीर तोड़ दिया था। सामने जो भी खाना मिला, उन्होंने चुपचाप रोटी का एक टुकड़ा खाया और वहीं ढह गए।

उन्हें लगा था कि शायद इस बार उन्हें कुछ घंटों की राहत मिल जाएगी।

लेकिन उन्हें क्या पता था कि **मौत का पीछा अभी ख़त्म नहीं हुआ था...**
और अगला सुराग उनके सबसे करीब पहुँच चुका था।

अध्याय 25

जब पुलिस दोस्तों के घर तक पहुँच गई

अगला दिन रविवार का था। सुबह सूरज निकलते ही उस घर में भी ख़तरे की घंटी बजने लगी। मोहल्ले के लोगों की नज़रें अजनबियों पर टिकने लगी थीं। तभी प्रखर का दोस्त शिखर आगे आया और बोला—“मोहित भाई, तुम दोनों मेरे घर चलो। मैं मम्मी-पापा से कह दूँगा कि तुम लोगों का कोई प्राइवेट एग्जाम है, इसलिए दो दिन के लिए रुकने आए हो।” वे शिखर के घर चले गए। कुछ देर के लिए लगा कि शायद अब वे सुरक्षित हैं।

दोपहर के ठीक 2 बज रहे थे। मोहित, शिखर और अखिल थोड़ी देर के लिए बाहर निकले। मोहित ने अखिल से फोन लिया और इलाहाबाद वाले उसी ‘यादव’ वकील को कॉल लगाया—“सर, नमस्कार। क्या कल सोमवार को हमें इलाहाबाद हाईकोर्ट आना है? कागज़ात तैयार हैं?” दूसरी तरफ़ से वकील की आवाज़ में अजीब-सी बेरुखी और टालमटोल थी—“अरे बेटा, मैं अभी ज़रा बिज़ी हूँ। रात को 8 बजे कॉल करना, तब बताऊँगा।” मोहित और शिखर वापस घर आ गए और वकील के फोन का इंतज़ार करने लगे।

लेकिन ठीक शाम के 5 बजे शिखर के मोबाइल पर एक अनजान नंबर से कॉल आया। शिखर ने फोन कान से लगाया तो दूसरी तरफ़ से उनके एक शुभचिंतक की घबराई हुई आवाज़ आई—

“शिखर! तुम लोग कहाँ हो? तुम लोगों ने शहर में क्या कांड कर दिया है? पुलिस की गाड़ियाँ और गुप्तचर विभाग तुम सब दोस्तों की लिस्ट बनाकर ढूँढ़ रहे हैं!”

यह सुनते ही शिखर के हाथ से फोन छूटते-छूटते बचा। उसके चेहरे का सारा रंग उड़ गया। उसने मुड़कर मोहित की तरफ़ देखा—

"भाई! यहाँ से अभी के अभी निकलना होगा। पुलिस हमारे नाम तक पहुँच चुकी है!"

साक्षात मौत के डर से वे फिर उस घर से निकल पड़े। शिखर ने प्रखर को कॉल किया, जो उस वक़्त अपने ऑफिस में बैठा काम निपटा रहा था। प्रखर ने फोन पर ही कहा—

"तुम उन दोनों को लेकर शहर के बाहर वाले उस सुनसान गाँव में पहुँचो। वहाँ खेत और पुराने मकान हैं, वहाँ कोई नहीं आएगा। मैं ऑफिस से सीधे वहीं पहुँच रहा हूँ।"

शाम के ठीक 6 बज रहे थे। गाँव के उस निर्जन ठिकाने पर प्रखर, अनुराग, शिखर, ऋषांक और अखिल—सारे दोस्त इकट्ठा हो गए। गाँव के सत्राटे में सबके चेहरों पर ख़ौफ़ और बेचैनी साफ़ दिखाई दे रही थी। सब एक-दूसरे की आँखों में देख रहे थे और एक ही सवाल सबके दिमाग़ में घूम रहा था—

"आखिर पुलिस हर बार हमारे अगले ठिकाने की भनक कैसे पा रही है?"

उस घने ख़ौफ़नाक माहौल में शक की सुई जितेंद्र पर जाकर टिक गई। क्या जितेंद्र ने मार के डर से या पुलिस के दबाव में उनका ठिकाना उगल दिया था? मोहित का अपना दिल भी अपने ही जिगरी दोस्त पर शक करने लगा था। जिस दोस्त पर कुछ घंटे पहले तक जान से भी ज़्यादा भरोसा था, अब उसी पर शक होने लगा था। विश्वास की इमारत जैसे भीतर ही भीतर ढह रही थी।

तभी अचानक उस सत्राटे को चीरते हुए अखिल के फोन की रिंगटोन बज उठी। अखिल ने काँपते हाथों से फोन उठाया। दूसरी तरफ़ उसकी माँ रोते हुए चिल्ला रही थी—

"अखिल! तू कहाँ है बेटा? पुलिस की 2 गाड़ियाँ अपने घर के बाहर खड़ी हैं। वो तेरे बारे में पूछ रहे हैं। कह रहे हैं कि तूने किसी लड़की को छुपाया है। तू जल्दी घर आ!"

सबके पैरों तले से ज़मीन खिसक गई। पुलिस अब दोस्तों के घरों के दरवाज़े तक पहुँच चुकी थी। प्रखर ने अखिल का कंधा पकड़ा—

"अखिल, तू तुरंत घर जा और पुलिस को जितना हो सके गुमराह कर। कहना तुझे कुछ नहीं पता!" अखिल रोते हुए वहाँ से निकल गया।

लेकिन तबाही यहीं नहीं रुकी। अगले 5 मिनट के भीतर अनुराग, शिखर और ऋषांक के फोन भी एक-एक करके बजने लगे। हर फोन पर उनके रोते हुए माँ-बाप की आवाज़ें थीं। पुलिस ने एक साथ सारे दोस्तों के घरों को घेर लिया था। माहौल में इतना भयंकर खौफ़ था कि हवा भी जैसे काँप रही थी।

प्रखर ने घबराकर मोहित की शर्ट का कॉलर पकड़ लिया। उसकी आँखों में आँसू थे—

"मोहित! अब तू ही बता हम क्या करें? हम यहाँ से कहाँ जाएँ? अगर पुलिस यहाँ आ गई तो हम सब जेल जाएँगे। हमारी ज़िंदगी ख़त्म हो जाएगी!"

मोहित और ज़ाबिया अब पूरी तरह दहशत और ग्लानि में डूब चुके थे। मोहित को लग रहा था कि उसकी मोहब्बत की आग में उसके मासूम, बेकसूर दोस्तों की ज़िंदगियाँ जलकर राख हो रही हैं। उसने रोते हुए ज़ाबिया का हाथ पकड़ा, फिर प्रखर की आँखों में देखा और टूटती हुई आवाज़ में कहा—

"भाई... बहुत हो गया। तुम लोगों ने हमारे लिए अपनी जान बाज़ी पर लगा दी। अब और नहीं। तुम लोग हमें बस किसी तरह DM ऑफिस छोड़ दो... हम वहीं सरेंडर कर देंगे!"

अध्याय 26

मजिस्ट्रेट का फैसला

अब उनके सामने सिर्फ़ एक रास्ता बचा था—DM ऑफिस जाकर सरेंडर करना। गाँव के उस सत्राटे में उन्होंने जल्दी से योजना बनाई। पुलिस और ज़ाबिया के खूँखार रिश्तेदार शहर की मुख्य सड़कों और चौराहों पर घात लगाए बैठे होंगे, इसलिए वे सीधे रास्ते से नहीं जा सकते थे। उन्होंने गाँव के दो अलग-अलग, संकरे और उबड़-खाबड़ रास्ते चुने, ताकि अगर एक रास्ते पर कोई फँस जाए तो दूसरा रास्ता बचा रहे।

पहले रास्ते पर मोहित, प्रखर और शिखर थे, जबकि दूसरे रास्ते पर ज़ाबिया, अनुराग और ऋषांक निकल पड़े।

वे गाँव की कच्ची पगडंडियों पर अभी कुछ ही दूर पहुँचे थे कि अचानक शिखर ने अपनी स्कूटी पर ज़ोर से ब्रेक लगा दिया। पीछे बैठा मोहित झटका खाकर संभला।

शिखर का चेहरा एकदम पीला पड़ चुका था। उसके मोबाइल पर उसकी माँ का कॉल था। उसने काँपते हाथों से फोन कान से लगाया। दूसरी तरफ़ से उसकी माँ की बिलखती हुई आवाज़ आई—

"बेटा, तू कहाँ है? हमारे घर के बाहर पुलिस की 2 गाड़ियाँ खड़ी हैं। वो तुझे ढूँढ़ रहे हैं!"

शिखर की माँ पहले से ही दिल की गंभीर बीमारी से जूझ रही थीं। पुलिस की धमकियों और अचानक पैदा हुए इस डर से उनकी छाती में तेज़ दर्द उठ गया था। शिखर की आँखों से आँसू बह निकले। उसने प्रखर की तरफ़ देखा और भर्पाए गले से बोला—

"भाई, मुझे तुरंत घर जाना होगा। मम्मी की हालत बहुत खराब है। उन्हें दिल का दौरा पड़ रहा है। लेकिन मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कहता हूँ, पुलिस के सामने अपना मुँह कभी नहीं खोलूँगा। तुम लोग जाओ!"

मोहित ने रोते हुए शिखर को गले लगा लिया। शिखर अपनी माँ की साँसों को बचाने के लिए अँधेरे में ओझल हो गया और मोहित प्रखर की बाइक पर पीछे बैठकर आगे बढ़ गया।

शाम के ठीक 7 बज चुके थे। वे किसी तरह बचते-बचाते जिलाधिकारी यानी DM ऑफिस पहुँच गए। लेकिन रविवार होने के कारण वहाँ जिलाधिकारी मौजूद नहीं थे। उनकी जगह न्यायालय के एक वरिष्ठ मजिस्ट्रेट बैठे हुए थे।

मोहित और ज़ाबिया उनके बंद कमरे के अंदर गए। मोहित ने हाथ जोड़कर रोते हुए अपनी पूरी कहानी सुनाई और ज़ाबिया के शरीर पर पड़े नीले-काले ज़ख्म भी दिखाए। ज़ाबिया के पैरों में असहनीय दर्द था, मगर उसने मोहित का हाथ कसकर पकड़ रखा था। फिर उसने मजिस्ट्रेट की आँखों में देखते हुए काँपती लेकिन मज़बूत आवाज़ में कहा—

"साहब, मेरे पैरों की चमड़ी उधड़ चुकी है, लेकिन मुझे इस दर्द की फ़िक्र नहीं। अगर कानून हमें साथ रहने का हक़ नहीं दे सकता, तो हमें मार डालिए... लेकिन हमें उन कसाइयों के हाथ मत सौंपिए!"

मजिस्ट्रेट ने दोनों के पहचान-पत्र देखे। फिर एक लंबी साँस लेकर बेहद ठंडी आवाज़ में कहा—

"बेटा, तुम्हारी विवाह की कानूनी उम्र अभी पूरी नहीं हुई है। तुम 20 साल 6 महीने के हो। अगर तुम यहाँ रुके तो, क्योंकि यह मामला दूसरे थाना क्षेत्र का है, मुझे नियमानुसार तुम दोनों को उसी संबंधित थाने की पुलिस को सौंपना पड़ेगा। और वे प्रभावशाली लोग तुम्हारे साथ आगे क्या करेंगे, यह मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है। अगर तुम दोनों सच में ज़िंदा रहना चाहते हो, तो इसी वक्त यहाँ से निकल जाओ... इस शहर से, इस राज्य से बहुत दूर चले जाओ!"

मजिस्ट्रेट के इन शब्दों ने उनके बचे-कुचे आखिरी सहारे को भी तोड़ दिया। जिस जगह से उन्हें न्याय की उम्मीद थी, वहीं से उन्हें भाग जाने की सलाह मिल रही थी।

मोहित और ज़ाबिया लथपथ कदमों से कमरे से बाहर आए। बाहर प्रखर, अनुराग और ऋषांक उनका इंतज़ार कर रहे थे। जब उन्हें पूरी बात पता चली तो उनके चेहरों पर भी निराशा छा गई। मोहित समझ चुका था कि अब वह अपने दोस्तों को और ख़तरे में नहीं डाल सकता।

उसने प्रखर के कंधे पर हाथ रखा और धीमे स्वर में कहा—

"भाई, मुझे बस हाईवे पर किसी भी जाती हुई बस में बैठा दे। ये तेरा मुझ पर आखिरी उपकार होगा। उसके बाद तुम सब अपने-अपने घर लौट जाना।"

दोस्त उसे इस हालत में अकेला छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन मोहित के सामने अब अपनी मोहब्बत से ज़्यादा अपने दोस्तों के परिवारों की चिंता थी। तभी उसे याद आया कि हड़बड़ाहट में उसका नया कीपैड फोन भी शिखर के घर पर ही छूट गया था। अब उसके पास किसी से संपर्क करने का कोई साधन नहीं था।

और उसे क्या पता था कि अगले कुछ घंटे उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा इम्तिहान बनने वाले थे...

अध्याय 27

आखिरी विदाई और दोस्तों का बलिदान

हाईवे के किनारे एक अनजान शहर की तरफ़ जाने वाली पुरानी बस के पास जाकर उनकी बाइकें रुक गईं। वह पल आ चुका था, जिसका डर सबके दिल में था—अब मोहित और ज़ाबिया को इस ख़ौफ़नाक सफ़र में अकेले आगे बढ़ना था।

मोहित ने भरी हुई आँखों से अपने उन दोस्तों को देखा, जिन्होंने उसके लिए अपनी जान तक दाँव पर लगा दी थी। होंठ काँप रहे थे, आँखें नम थीं और दिल बार-बार यही कह रहा था कि काश यह विदाई कभी न आए। उसने एक-एक करके सबको गले लगाया। किसी के पास कहने के लिए शब्द नहीं थे, बस आँखों में आँसू और दिल में एक-दूसरे के लिए दुआ थी।

तभी अनुराग आगे बढ़ा। उसने अपनी पैंट से चमड़े की एक भारी बेल्ट निकाली और मोहित के हाथ में थमाते हुए रूँधे गले से बोला—

"यह ले मोहित... इमरजेंसी में किसी को कूटने के काम आएगी!"

उस मौत जैसे सत्राटे में भी कुछ पलों के लिए सबके चेहरों पर एक बेबस-सी मुस्कान आ गई। मोहित ने बेल्ट हाथ में ली और अनुराग को गले लगा लिया। शायद वह बेल्ट सिर्फ़ चमड़े की बेल्ट नहीं थी... वह उस दोस्त की तरफ़ से आखिरी हिम्मत थी, जो उसे अकेले अँधेरे में भेज रहा था।

मोहित जैसे ही भारी कदमों से बस के पायदान पर चढ़ने लगा, पीछे से प्रखर की आवाज़ आई— *"मोहित, सुन!"*

प्रखर दौड़ता हुआ आया। उसने जेब से अपना पर्स निकाला और उसमें रखे सारे पैसे निकालकर मोहित की मुट्ठी में ठूस दिए। मोहित ने हाथ पीछे खींचते हुए कहा—

"नहीं भाई, इसकी ज़रूरत नहीं है..."

लेकिन प्रखर ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा— *"मुझे पता है तेरे पास पैसे हैं भाई... लेकिन रख ले। न जाने किस मोड़ पर काम आ जाएँ।"*

मोहित की आँखों से आँसू बह निकले। उसने प्रखर को कसकर गले लगा लिया। दोनों कुछ पल तक एक-दूसरे को पकड़े खड़े रहे। शायद दोनों जानते थे कि यह सिर्फ एक विदाई नहीं थी... यह उस ज़िंदगी की विदाई थी, जिसमें वे रोज़ एक-दूसरे के साथ हुआ करते थे।

बस का इंजन गर्-गर् की आवाज़ के साथ चालू हुआ। मोहित ने खिड़की से बाहर देखा। प्रखर, अनुराग, शिखर, ऋषांक और बाकी दोस्त धीरे-धीरे पीछे छूटते जा रहे थे। कुछ ही पलों में वे हाईवे के अँधेरे में ओझल हो गए।

और उसी पल मोहित की रूह में एक ऐसा अकेलापन उतर गया, जिसकी कोई सीमा नहीं थी। अभी तक उसके साथ दोस्त थे, जिनके पीछे छुपकर वह मौत से लड़ रहा था। अब वह ढाल भी उसके पास नहीं थी।

बस की खिड़की से बाहर सिर्फ अँधेरा दिखाई दे रहा था। अंदर ज़ाबिया उसके पास बैठी थी, लेकिन दोनों के दिलों में एक ही डर था—अगर अब पुलिस ने उन्हें घेर लिया, तो बचाने के लिए कोई दोस्त सामने नहीं होगा।

मगर उन्हें यह नहीं पता था कि उनके पीछे क्या क्रहर टूटने वाला था।

मोहित और ज़ाबिया को बस में बैठाकर लौट रहे उन दोस्तों को रास्ते में ही पुलिस और ज़ाबिया के घरवालों ने घेर लिया। कुछ दोस्तों को उनके घरों से उठाया गया, कुछ को रास्ते से पकड़ लिया गया। उन्हें थाने के लॉकअप में बंद किया गया। उन पर दबाव बनाया गया, धमकियाँ दी गईं, मारपीट की गई और उनके परिवारों को तबाह करने की धमकी तक दी गई।

लेकिन उन लड़कों ने एक बात नहीं बताई—मोहित और ज़ाबिया किस बस से गए थे और कहाँ जा रहे थे।

"मोहित का तो शायद सिर्फ प्रखर सबसे करीबी दोस्त था... बाकी कई तो उसके दोस्त के दोस्त थे। लेकिन उस रात दोस्ती रिश्तों से भी बड़ी हो गई थी। अपनी खाल बचाने के बजाय उन्होंने अपने दोस्त की जान बचाना चुना। डर, धमकी और मार के बावजूद किसी ने मोहित और ज़ाबिया का रास्ता नहीं बताया।"

अध्याय 28

₹1 लाख की रिश्त और वकील की गद्दारी

लेकिन इस पूरी कहानी का सबसे बड़ा सच मोहित को उस वक्त नहीं पता था। उसे बार-बार यही सवाल परेशान कर रहा था—आखिर पुलिस हर बार उनके अगले ठिकाने तक पहुँच कैसे जा रही थी?

वे जहाँ भी छुपते, कुछ ही समय बाद पुलिस वहाँ पहुँच जाती। ऐसा लग रहा था जैसे कोई उनके हर कदम की खबर बाहर पहुँचा रहा हो।

दरअसल, जब मोहित और ज़ाबिया कानपुर के उस होटल में बेखबर होकर सो रहे थे, उसी समय पीछे एक और खतरनाक खेल शुरू हो चुका था।

ज़ाबिया के घरवालों ने उस कार ड्राइवर को पकड़ लिया था, जो उन्हें इलाहाबाद लेकर गया था। दबाव और डर के आगे आखिरकार ड्राइवर टूट गया और उसने पुलिस तथा ज़ाबिया के चाचा को इलाहाबाद वाले उसी 'यादव' वकील के घर और चैंबर का पता बता दिया।

सुराग मिलते ही ज़ाबिया के चाचा ने अपने लोगों और पुलिस की एक टीम को सीधे इलाहाबाद भेज दिया। टीम जब उस वकील के पास पहुँची, तो उसके सामने पैसों का ऐसा लालच रखा गया, जिसके सामने उसकी ईमानदारी कुछ ही मिनटों में बिक गई।

मोहित ने जिस वकील पर भरोसा करके अपनी आखिरी जमा-पूँजी में से ₹15,000 दिए थे, उसी वकील ने ज़ाबिया के परिवार से **₹1,00,000 नकद** लेकर अपना ईमान बेच दिया।

और फिर वही हुआ, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

रविवार को दोपहर 2 बजे जब मोहित ने उम्मीद के साथ उसे फोन किया था—“सर, क्या कल सोमवार को हमें कोर्ट आना है? काराग़ज़ात तैयार है?”—तो उस वकील ने मोहित की आवाज़ सुनते ही उसके नए नंबर की जानकारी ज़ाबिया के चाचा और पुलिस तक पहुँचा दी।

उस दौर में किसी मोबाइल नंबर से सोशल मीडिया प्रोफ़ाइल तक पहुँचना पुलिस के लिए मुश्किल नहीं था। उस नंबर से जुड़े लोगों की जानकारी खंगाली गई और पुलिस प्रखर के उस दोस्त तक पहुँच गई, जो उस वक्त मोहित और ज़ाबिया के साथ था।

इसके बाद पुलिस ने कानपुर वाले होटल के CCTV फुटेज खंगाले। फुटेज में प्रखर के दोस्त का चेहरा दिखाई दे गया और वहीं से पुलिस को उसके बारे में और जानकारी मिलती चली गई। एक के बाद एक कड़ियाँ जुड़ती गईं और आखिरकार पुलिस प्रखर तथा उसके दोस्तों के घरों तक पहुँच गई।

अब मोहित को समझ आने वाला था कि उनके हर ठिकाने की खबर बाहर कैसे पहुँच रही थी।

एक लालची वकील के उस **₹1,00,000 के सौदे** ने सिर्फ़ मोहित और ज़ाबिया के भरोसे को नहीं तोड़ा था, बल्कि उन सारे दोस्तों को भी ख़तरे में धकेल दिया था, जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के उनकी मदद की थी।

उधर मोहित और ज़ाबिया बस में अँधेरे रास्तों पर आगे बढ़ रहे थे... और पीछे उनके घरों में क्रहर बरप रहा था।

मोहित के सीधे-साधे शिक्षक पिता और उसका भाई अब भी ज़ाबिया के घरवालों के कब्ज़े में थे। उन्हें लगातार धमकाया जा रहा था। घर में बंदूक का साया था और हर पल यही डर था कि अगर मोहित का पता नहीं चला तो अगला निशाना कौन बनेगा।

उधर मोहित की माँ अकेलेपन, सदमे और डर में टूटती जा रही थीं। जिस शहर में उन्हें अपने बेटे की तलाश में मदद मिलनी चाहिए थी, उसी शहर में लोग डर के कारण उनके करीब आने से भी कतरा रहे थे।

ज़ाबिया के परिवार का इतना दबदबा था कि मोहल्ले का कोई व्यक्ति उनकी माँ को पानी तक देने की हिम्मत नहीं कर रहा था। माँ मदद के लिए पुलिस

और अधिकारियों के दरवाज़े तक जाती रहीं, अपने पति और बेटे को छोड़ने की गुहार लगाती रहीं... लेकिन हर दरवाज़े से उन्हें निराशा ही मिली।

अब माँ के मन में सिर्फ़ एक डर बचा था—**मोहित कहीं ज़िंदा भी है या नहीं।**

हर रात उन्हें यही ख़ौफ़ सताता कि कहीं सुबह उनके घर के बाहर उनके पति या बेटे की लाश न पड़ी हो।

और दूसरी तरफ़, उसी रात एक अनजान बस में मोहित और ज़ाबिया बैठे थे... उन्हें अभी पता भी नहीं था कि उनके पीछे कितने घर उजड़ चुके हैं और उनकी मोहब्बत की कीमत उनके दोस्तों और परिवारों को किस तरह चुकानी पड़ रही है।

अध्याय 29

आखिरी सफ़र और तूफ़ान की पहली आहट

घुटन भरी बस में मोहित और ज़ाबिया एक-दूसरे का हाथ थामे बैठे थे। बाहर सिर्फ़ काला अँधेरा था और अंदर दोनों के दिल में एक ही सवाल—क्या वे अगली सुबह तक ज़िंदा रहेंगे?

ज़ाबिया ने धीरे से अपना सिर मोहित के कंधे पर रख दिया। मोहित ने उसकी उँगलियाँ कसकर थाम लीं।

पीछे कानपुर छूट चुका था...

घर छूट चुका था...

दोस्त छूट चुके थे...

और अब उनके पास सिर्फ़ एक-दूसरे का साथ बचा था।

लेकिन उन्हें क्या पता था कि उनके पीछे एक और कहानी शुरू हो चुकी थी।

उनके दोस्तों पर पुलिस का शिकंजा कस चुका था। मोहित के पिता और भाई अब भी बंधक थे। उसकी माँ अकेली, बेसहारा अपने बेटे की ज़िंदगी की दुआ माँग रही थी।

और इसी बीच...

देश के सबसे बड़े सामाजिक संगठनों में से एक **RSS (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)** के शीर्ष स्तर तक इस पूरे मामले की खबर पहुँच चुकी थी।

एक हिंदू लड़का...

एक मुस्लिम लड़की...

मोहब्बत, जुल्म, बंधक बनाए गए लोग और जान की बाज़ी लगाते दोस्त। संघ के शीर्ष नेतृत्व में एक भूचाल आ गया। इस खूनी मामले में अब एक बहुत बड़ी राजनीतिक, सामाजिक और राष्ट्रवादी ताकत पर्दे के पीछे से सीधे मैदान में कूदने वाली थी।

तलवारें म्यान से बाहर निकल चुकी थीं और धर्म युद्ध का बिगुल बज चुका था।

अब तक जो लोग समझ रहे थे कि मोहित और ज़ाबिया अकेले हैं, उन्हें अंदाज़ा भी नहीं था कि **कहानी में एक नई ताकत की एंट्री हो चुकी है।**

एक बंद कमरे में एक फ़ाइल मेज़ पर रखी गई।

फ़ाइल पर सिर्फ़ दो नाम थे—**मोहित और ज़ाबिया।**

कुछ पल की खामोशी के बाद आवाज़ आई—**"इन दोनों को ढूँढो..."**

दूसरी आवाज़ आई—**"ज़िंदा।"** और बस... **खेल बदल गया।**

बस अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी।

"उस वक़्त मोहित और उसके दोस्तों को लगा था कि सब कुछ ख़त्म हो चुका है, वे यहाँ से किसी बहुत दूर शहर भाग जाएँगे और कभी भी इन ज़ालिम लोगों के हाथ नहीं आएँगे। मगर उन्हें रत्ती भर भी अंदाज़ा नहीं था कि यह तो इस ख़ौफ़नाक कहानी की सिर्फ़ शुरुआत है... असली पिव्चर तो अभी पूरी बाकी थी मेरे दोस्त!"

कहानी का असली तहलका, सबसे बड़ा धमाका और महा-संग्राम तो अब शुरू होने वाला था।

क्या वे सुरक्षित पहुँच पाएँगे?

क्या पुलिस उन्हें रास्ते में पकड़ लेगी?

क्या उनके घरवाले उन्हें ढूँढ़ पाएँगे?

और सबसे बड़ा सवाल—

जिस मौत से वे भाग रहे थे... क्या वह सच में पीछे छूट गई थी? या...

वह उसी बस में उनके साथ सफ़र कर रही थी?

दूर आसमान पर बिजली चमकी। बस आगे बढ़ती रही...

और कहानी यहीं खत्म नहीं हुई थी। असल कहानी तो अब शुरू हुई थी।

“प्रथम भाग समाप्त।”

आभार पत्र

इस कहानी को यहाँ तक पहुँचाने में मेरा अकेले का हाथ नहीं है।

सबसे पहले **मेरे परिवार** का दिल से शुक्रिया, जिन्होंने मुश्किल से मुश्किल दौर में मेरा साथ दिया। जब हालात हमारे खिलाफ़ थे, तब भी उन्होंने मेरा हौसला टूटने नहीं दिया।

मेरे उन सभी दोस्तों का विशेष आभार, जिन्होंने सिर्फ़ दोस्ती की बातें नहीं कीं, बल्कि ज़रूरत पड़ने पर मेरे साथ खड़े होकर दोस्ती का असली मतलब समझाया। **प्रखर, जितेंद्र, मृत्युंजय, शिखर, अनुराग, ऋषांक, अखिल** और उन सभी दोस्तों को, जिनका ज़िक्र इस कहानी में आया—आप सबका एहसान शायद शब्दों में कभी नहीं उतारा जा सकता।

कुछ लोग ज़िंदगी में दोस्त बनकर आते हैं... और कुछ लोग मुसीबत में खड़े होकर यह साबित कर देते हैं कि वे **दोस्त से कहीं बढ़कर परिवार हैं।**

मेरी **ज़ाबिया** का भी शुक्रिया—उसने सिर्फ़ इस कहानी का हिस्सा बनकर नहीं, बल्कि इस पूरी कहानी को जीकर मुझे यह एहसास कराया कि मोहब्बत सिर्फ़ खूबसूरत पलों का नाम नहीं... कभी-कभी यह डर, दर्द, इंतज़ार और संघर्ष से होकर भी गुज़रती है।

और अंत में उन सभी पाठकों का शुक्रिया, जो इन पन्नों को पढ़ते हुए सिर्फ़ कहानी नहीं, बल्कि हमारे सफ़र को महसूस करेंगे।

यह किताब उन सभी रिश्तों के नाम है, जो मुश्किल वक़्त में भी साथ छोड़ना नहीं जानते।

उस वक़्त हम Instagram पर नहीं थे... 😊 लेकिन अब हैं! तो हमारी इस
प्यारी-सी दुनिया का हिस्सा बनने के लिए Instagram पर हमें ज़रूर
follow करें — @officialzabimohit ❤️